पंचामृत

हास्य नाट्य संग्रह

सूरजसिंह पवार

अनु-अर्चना प्रकाशन
रामपुरिया कॉलेज के पीछे, बीकानेर (राज)

लेखकाधीन
आवरण सूरजसिंह पवार
सस्करण प्रथम 1996
मूल्य एक सौ पैसठ रुपए मात्र
लेखक सूरजसिंह पवार रामपुरिया कॉलेज के पीछे बीकानेर
मुद्रक साखला प्रिण्टर्स सुगन निवास, चन्दनसागर बीकानेर

PANCHAAMRIT (Drama) Rs 165 00
by
SURAJ SINGH PANWAR

☆ माफ करना सर
☆ सुबह वापस लौटा दूगा
☆ मोटी आवाज
☆ आप बोल दीजिये
☆ क्यो पापाजी कैसी रही

समर्पण

स्व डा करणीसिंह— बहु भाषाविद्, व्यक्तित्व के धनी, राजस्थानी भाषा के प्रबल समर्थक, पूर्व सासद एव विश्वविख्यात निशानेबाज, महाराजा बीकानेर

स्व मेजर पूर्णसिंह राठौड— भारत सरकार द्वारा 'वीरचक्र' (मरणोपरान्त) से सम्मानित, देश के सच्चे सपूत, (आई सी 6391 13 गेनेडियर्स) देश की रक्षा हेतु सरहद पर लड़ते हुए हसते-हसते अपना जीवन न्यौछावर करने वाले वीर योद्धा।

स्व श्री मुरलीधर व्यास— भूतपूर्व विधायक, जन नेता, महान स्वतत्रता सेनानी, गोआ मुक्ति आन्दोलन के अग्रणी नेता एवम् जन-जन के हृदय-सम्राट।

स्व श्री गोकुल प्रसाद पुरोहित— भूतपूर्व विधायक, मजदूर नेता, कर्मठ कार्यकर्ता, सामाजिक एव राजनीतिक चेतना के उन्नायक, आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, बीकानेर एव भीलवाड़ा के कुशल राजनेता एव स्वतत्रता सग्राम के अग्रणी सैनिक।

स्व कुवर श्री अभिमन्युसिंह तवर— बहु आयामी प्रतिभा के धनी, अग्रेजी व उर्दू भाषा के प्रखर ज्ञाता, नाट्य मचन एव सास्कृतिक गतिविधियो से आजीवन सबद्ध राजस्थानी साहित्य व सस्कृति के प्रबल पोषक स्वर्गीय ठाकुर रामसिंहजी तवर के ज्येष्ठ पुत्र।

स्व श्री मोइनुद्दीन मिर्जा— सरल स्वभाव, सादा जीवन, उर्दू भाषा के जाने-माने विद्वान्, शारीरिक शिक्षा एव खेलकूद के आचार्य, जन सामान्य मे सम्मानित एव शास्त्रीय सगीत के मूर्धन्य विद्वान।

स्व श्री चन्द्रकान्त सारग— बहु प्रतिभा के धनी एव मुखर सगीतकार, विख्यात वास्तुविद्, कुशल शिल्पी मूर्धन्य चित्रकार एव नाट्य-आन्दोलन से आजीवन सबद्ध, मीरा भक्त।

सूरजसिंह पवार
रामपुरिया कालेज के पीछे, बीकानेर

'न्याय' के यशस्वी कथाकार

साहित्य समाज का दर्पण है। जिस परिवेश देश और काल को लेकर इसकी सरचना की जाती है, उसका प्रतिबिम्ब उसमें अवश्यमेव परिलक्षित होता है। सूरजसिंह पवार द्वारा लिखित हास्य प्रधान पांच नाटको का सग्रह देखने को मिला।

आपसी विश्वास, सत्यता श्रद्धा और जीवन में पवित्रता जैसे शाश्वत नैतिक जीवन मूल्यों और उजले मानदडों को अपनाकर जो समाज जिया करता था उसमें आज जिस प्रकार की एक विकृत मानसिकता पनप रही है, उसी का दिग्दर्शन लेखक ने अपनी इस कृति में किया है।

विरासत मे मिले सहज और सरल जीवन का परित्याग करके झूठ फरेब धोखाधड़ी, अनुशासनहीनता, पवित्र पेशे की आड़ में तस्करी जैसे काले धन्धे के साथ साथ 'पैसा दे दो, सब कुछ ले लो' की जिस कुत्सित मनोवृत्ति का समावेश आज हमारे दैनिक जीवन मे हो गया है उसका अन्त न जाने कहा होगा? प्रगति के नाम पर एक भोडी सस्कृति का अधानुकरण हमे पतन की उन अतल गहराईयों की ओर धकेल रहा है जहा से उबर पाना असभव न भी हो तो भी छुटकारा पा लेना एक अति दुष्कर कार्य अवश्य होगा। सोचने को विवश होना पड़ता है कि इस अन्तहीन सिलसिले की चरम परिणति कहां और कैसी होगी?

नाटक लिखना और मचन के सशक्त माध्यम के द्वारा अपनी बात आम लोगा तक पहुचाना अपने आप मे एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। लेखक सदैव इस ओर प्रयत्नशील और जागरूक रहा है। श्रृगार वीर और करुणा आदि रसों की सरिता तो हमारे साहित्य मे सतत प्रवाहित रही है। उनका आधार लेकर कलम उठाना सहज है पर हास परिहास जैसे माध्यम को लेकर सृजन एक कठिन कार्य है। लेखक ने इस ओर जो प्रयास किया है, वह प्रशसनीय है। हास्य विनोद का सहारा लेकर समाज की दुर्दशा पर तीक्ष्ण व्यग्य-बाणो के जो सटीक प्रहार किये गये हैं वे देखते ही बनते हैं। लेखक इसके लिए बधाई का पात्र है।

भाषा सरल और सहज है। बेढब 'बनारसी के सानिध्य में हुई एक अतरग सगोष्ठी का स्मरण हो उठता है। प्रसग था चिथड़ो मे लिपटे घावों से रिसते पीप का वर्णन जिस रचना मे किया गया हो उसे क्या साहित्य की श्रेणी मे रखा जा सकता है? 'बनारसी का तत्काल उत्तर था कि मेरे सामने मोटा चश्मा पहिने चुन्धियाती आखो वाली ये बहिनजी बैठी हैं, इन्हे मृगनयनी कहना और पास ही बैठी इस दुबली पतली सी दिखने वाली बहिन को गजगामिनी का सम्बोधन करने को ही यदि साहित्य की सज्ञा दी जाती है तो फिर ऐसे साहित्य को दूर से ही नमस्कार है। आपको यदि यथार्थ का चित्रण करना है तो यथार्थ के धरातल पर आना होगा और भाषा की यथार्थता को भी स्वीकार करना ही होगा। कुछ ऐसा ही प्रयोग इस कृति मे हुआ है।

जहा तक रचना की उपादेयता और लोकप्रियता का प्रश्न है अनेकानेक बार इन नाटकों का मचन भारत के अनेक स्थानो पर हो चुका है और आये दिन रेडियो से इनका प्रसारण होता रहता है। पुस्तक स्वागत योग्य एवं पठनीय है।

शुभकामनाओं सहित

—दीपसिंह बड़गूजर
दीपक कुटीर हनुमान हत्था बीकानेर

लेखकीय

वैसे तो अब तक छोटे-मोटे कई नाटक लिख चुका हू और कुछ नाटक एव नाट्य संग्रह प्रकाशित भी हो चुके है लेकिन मै कभी सन्तुष्ट नही हुआ क्योंकि मेरा जिन प्रकाशको से पाला पड़ा, उन्होंने सदैव मेरा शोषण ही किया। हालाकि उस स्थिति मे नही होते हुए भी मैंने उन्हे आर्थिक सहयोग दिया फिर भी वो महानुभाव अपने वायदे पर खरे नही उतरे। न तो अग्रिम रूप मे लिया मेरा धन मुझे वापस लौटाया और न ही पुस्तको की रॉयल्टी दी। और तो और, वायदे के मुताबिक प्रकाशित पुस्तको की प्रतियाँ तक मुझे नही दी गई।

अत हार कर स्वय ने सग्रह प्रकाशित करने का फैसला किया है।

आज के व्यस्त युग मे अमीर-गरीब, नेता अभिनेता, छोटा-मोटा अथवा ज्ञानी व अज्ञानी सभी लोग किसी न किसी रूप मे अपनी-अपनी समस्याओं को लेकर दुखी एव परेशान जरूर है अत इस गम्भीर वातावरण मे अगर इन्सान को दो क्षण की खुशी या कुछ क्षण हसने को मिल जाय तो मेरा ऐसा मानना है कि इससे बढ़कर और कोई औषधि नही। इसी उद्देश्य को लेकर मैं अपनी सरल भाषा मे पाच हास्य नाटको को 'पचामृत' के रूप मे प्रकाशित कर रहा हू ताकि आम आदमी इसको पढ़कर या मचस्थ देखकर भरपूर स्वाद चख सके। अब मै आपको हसा सकने मे कितना सफल होता हूं आप पाठकगण एव दर्शकगण ही अपना निर्णय देगे क्योंकि औलाद की सराहना तो परायो के सराहने से ही होती है।

साथी रगकर्मियों से लेखक के साथ-साथ एक रगकर्मी होने के नाते, मेरा मानना है कि नाटक का प्रदर्शन करने पर वाह! वाह! या कामयाबी तभी हासिल होती है जब किसी भी नाटक को अडर रिहर्सल (UNDER REHEARSAL) नही खेला जाय। कृपया नाटको का मचन करते समय सूचनार्थ एक पोस्ट-कार्ड जरूर लिखने का कष्ट करे। इन्ही आशाओं के साथ,

आपका,

सूरजसिंह पवार

पवार मेरी नजर मे

श्री सूरजसिंह पवार द्वारा लिखित एव रचित (पाच हास्य एकांकी) एक सकलन हिन्दी मे प्रकाशित होने जा रहा है। श्री पंवार के इन हास्य एकांकियो को बहुत पहले ही प्रकाशित हो जाना चाहिए था जिन्हे बीसियो बार श्री पवार द्वारा मचित भी किया जा चुका है।

श्री सूरजसिह पवार की एक खास जीवन शैली है। 'जहा न शिकवा है न शिकायत है यदि है तो एक जिन्दादिली है। जिन्दगी से बेजार, हारा-थका, गमयाफ्ता कोई इन्सान यदि भूले-भटके इनके पास पहुच जाता है तो सुकून के साथ साथ तसल्ली व नया हौसला और जिन्दगी जीने का एक नया अन्दाज लेकर नई मजिल का हमवार होकर लौटता है।' जिन्दगी की हर जद्दोजहद मे मुस्कराते रहना इनका आलम है। यह खुसूसीयत है इस इन्सान मे।

सच पूछो तो हसना और हसाना सूरजसिह के पर्यायवाची बन गए है।

श्री पवार ने हसना सीखा, हसना सिखाया, हर मुसीबत का सामना हसकर किया तो मुझे यू लगा—या तो श्री पवार एक कलाकार है या दीवाने है या फिर कोई खुदाई इमदाद ईश्वर की विशेष कृपा है इन पर वरना यू हसना-हसाना जीवन का एक मुकम्मल उसूल कैसे बन सकता है? एक शेर देखे, जो इन पर लागू है और पूरी तरह लागू है

या तो दीवाना हसे या तू जिसे तौफीक दे।

वरना तेरी इस दुनिया मे आकर मुस्करा सकता है कौन ?

श्री पवार ने अपने तमाम एकाकियो मे जहा-जहा जिस जिस समस्या को लेकर कथानक चुना है वह सामाजिक, मनोवैज्ञानिक मानवीय चिंतन के साथ उन पर पूरी फिक्र के दायरे मे अपनी रग प्रस्तुति सफलता के साथ की है।

नाटक (ड्रामा) साहित्य मे अभिव्यक्ति की एक शक्तिशाली विधा है। इस विधा मे स्टेज कोस्ट्यूम, सवाद निर्देशन रोशनी और रग भिन्न भिन्न प्रभाव के साथ मूल भाव को पूरी तरह दर्शक के सामने प्रस्तुत करने मे सफल रहते है। और श्री पवार रगकर्म की रग रग से वाकिफ है। उपरोक्त तमाम बातो का लेखक यदि जानकार नही है तो मात्र कहानी कथानक वह प्रभाव उत्पन्न करने मे सफल नही

होती। श्री पवार अपने नाटक खुद रचते है। पात्रो के संवाद बड़ी सरल व स्वाभाविक भाषा मे लिखते है जो असरदार साबित होती है। भाषा, सवाद, शब्द-चयन परिस्थिति के अनुसार प्रभावोत्पादक होकर स्वय वास्य मे चलते हैं।

हास्य नाटक का लेखक अन्दर से कही गहरे मे बहुत गम्भीर होता है उसी अनुपात मे जिस अनुपात मे हास्य पूरे प्रभाव के साथ पटाखे की तरह फूटता है, झरने की तरह बहता है और दर्शक को केवल हसाकर नही छोड़ता, उसे गहरे मे झकझोरता भी है। एकाकी लेखक हास्य भले ही लिखे लेकिन उसका मनोभाव, अभिप्राय मात्र मनोरंजन करना नही होता, परन्तु इसके विपरीत दर्शक के दैनिक स्वभाव, व्यवहार मे कोई परिवर्तन देखना चाहता है ताकि जीवन के प्रति व्यक्ति, समाज, सरकार सभी सजग और सावधान होकर जीवन के ऊचे से ऊचे आयाम की ओर अग्रसर हो। सामाजिक-नैतिक आचरण एवं चरित्र सवरे। अन्ततोगत्वा लेखन सृजन समाजोत्थान, आत्म उत्थान जनकल्याणकारी ही तो होता है लेकिन सीधी सीख देना साहित्य सृजन का कार्य नही है। श्री पवार से अपेक्षा है कि वे खूब रचे अपनी प्रस्तुतिया समाज के सामने रखे। पात्रो के माध्यम से समाज मे गौरव और गरिमा अपदस्थ जीवन के प्रत्येक आयाम पर व्याप्त भ्रष्टाचार व नैतिक ह्रास पर करारी चोट करे।

कहने की आवश्यकता नही कि श्री पवार एक सफल एकाकी लेखक निर्देशक एव एक सफल रगकर्मी है तथा अपने अनुभवो का सामाजिक चेतना के लिए प्रयोग करने मे जुटे हैं।

शुभकामनाओ के साथ,

कवि मो सदीक
कवि कुटीर, रानी बाजार
बीकानेर

मैने विदेशो मे भी नाटक देखे है और हिन्दुस्तान मे कई नाटक देखने को मिले लेकिन ऐसी ओरिजनल्टी आज पहली बार देखने को मिली।

दिनाक 24 2 1980

डॉ करणीसिंह
पूर्व सासद एव महाराजा
बीकानेर

माफ करना सर

माफ करना सर

माफ करना सर' का प्रदर्शन अब तक कोई चालीस-पचास बार से भी ज्यादा किया जा चुका है लेकिन सबसे पहले इसका प्रदर्शन शार्दूल राजपूत छात्रावास, बीकानेर के वार्षिक समारोह पर दिनाक 24 2 1980 को मुख्य अतिथि माननीय श्री करणीसिह जी बहादुर महाराजा ऑफ बीकानेर एव पूर्व सासद तथा श्रीमान देवीसिह जी भाटी वर्तमान नहर एव सिचाई मत्री, राजस्थान जयपुर की अध्यक्षता मे खेला गया—

नाटक मे इन कलाकारो ने भाग लिया—

सर्वश्री लक्ष्मीनारायण सोनी	शर्मा साहब
मोहनसिह 'मधुप	रामसुख
सी पी माथुर	करमचन्द
जगदीशसिह राठौड़	चम्पालाल
मधु आचार्य आशावादी	वर्मा
कन्हैयालाल सोनी	चुन्नीलाल
चाँद रजनीकर	अमीन साहब
प्रदीप भटनागर	दुलीचन्द
आशुतोष कोठारी	चिमनलाल
वाई के शर्मा योगी'	बड़े साहब
शहनशाह बाबर	बुढिया
विभा गुप्ता	रीता त्रृपरा
सगीत	मुकेश राजस्थानी
गीत	मोहम्मद सदीक
लेखक निर्देशक	सुरजसिह पंवार

माफ करना सर

(सरकारी कार्यालय तथा कार्यालय अधीक्षक चैनसुख का एक कमरा। दीवार घड़ी में सुबह के पौने दस बजे का समय। रामसुख नाम का एक जवान सहायक कर्मचारी गुनगुनाते हुए कमरे की सफाई कर रहा है। इसी बीच टेलीफोन बज उठता है। रामसुख झाड़न कंधे पर रखकर फोन पर बात करता है।)

रामसुख   कौन साहब बोल रहे है? देखिए साहब, ये बनिए की दूकान नही, सरकारी कार्यालय है। यहाँ कर्मचारियो के ऑफिस आने-जाने का कोई समय तय नही है। जी? मै इसी कार्यालय का एक सहायक कर्मचारी रामसुख बोल रहा हूँ। वैसे आप कौन साहब बोल रहे है? जी? क्या नाम बतलाया आपने? अरे साहब, सुबह सुबह मुझ गरीब के साथ क्यों दिल्लगी कर रहे है आप। नही नही साहब, यह कैसे हो सकता है, क्योंकि हमारे बड़े साहब का नाम 'धनसुख' और आप अपना नाम बतला रहे है नैनसुख। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि गलती से मेरा नाम 'रामसुख', मेरे स्वर्गीय पिताजी का नाम 'परमसुख', मेरे दादाजी का नाम 'तनसुख' और तो और मेरे बड़े लड़के का नाम 'मनसुख', उससे छोटे वाले का 'हरसुख' तीसरे लड़के का 'घरसुख' और चौथे लड़के का   हैलो हैलो *(रिसीवर रखकर)* शायद घबरा गए नैनसुख जी महाराज।

(सफाई करते करते गाने लगता है)

भगवान तुझे मै खत लिखता   पर तेरा पता मालूम नही।
मैं खुद तेरे पास आ जाता   पर तेरा पता मालूम नही।

(फोन बजता है)

अरे! मेरे यार, सुबह-सुबह तो जरा काम करने दिया करो। क्या चौबीसो घण्टे बरसाती मेढक की तरह टर्र टर्र लगा रखी है।

(रिसीवर उठाकर)

फरमाइए, क्या हाजत है?

नौन बड़े साहब। गलती हो गई साब नही नही साब। मै तो वैसे ही जरा यस सर यस सर नो सर अभी आ रहा हूँ सर।

(रामगुप यस सर नो सर बोलते हुए बाहर की ओर निकल जाता है और कुछ क्षणो बाद बाहर की ओर से कार्यालय अधीक्षक शर्मा एक हाथ मे ब्रीफकेस लिए प्रवेश कर अपनी कुर्सी पर बैठ जाता है। उपस्थिति पजिका खोल कर देखता है और आवाज लगाता है)

शर्मा — रामगुप रामगुप रामगुप। सब लोगो ने ऑफिस को होटल समझ रखा है। जब इच्छा हुई आ गए और जब मर्जी हुई उठकर चल दिए। समय पर ऑफिस आने का कहते-कहते मै शर्मा से बेशर्मा बन गया हूँ, लेकिन इन लोगो को जरा भी शर्म नही, बस मुह लटकाए आएगे और बोल देगे, माफ करना सर, सिर्फ आज-आज माफ कर दीजिए, और तो और, वो चपरासी का बच्चा तो सबका अफसर बना हुआ है।

(फोन बजता है)

शर्मा बोल रहा हूँ, आप कौन साहब बोल रहे है? जी, वो तीन दिन से गैर हाजिर है और कोई सेवा नॉनसैस।

(बाहर की ओर से प्रवेश करके)

करमचन्द — गुड मार्निंग सर।

(रिसीवर रखते हुए)

शर्मा — तशरीफ ले आए आप?

करमचन्द — सिर्फ आज आज माफ कर दीजिए सर।

शर्मा — किस बात के लिए माफी माग रहे है आप?

करमचन्द — जरा ऑफिस आने मे देर हो गई सर।

शर्मा — तो पैदा होने के बाद एक रोज भी समय पर आए हो ड्यूटी पर?

करमचन्द — नही सर लेकिन आज मै बिलकुल ठीक समय पर घर से निकल गया था लेकिन रास्ते मे रेलवे फाटक बन्द था इसलिए मै गजनेर रोड होता हुआ चौखूटी पहुचा लेकिन वो फाटक भी बन्द था। बाद मे मै जिन्ना रोड होते हुए कोटगेट पहुचा पर वो फाटक भी बन्द मिला सर। फिर मै स्टेशन रोड होते हुए रानी बाजार पहुचा लेकिन दुर्भाग्यवश वो फाटक भी बन्द मिला सर। आखिर तग आकर मै घड़सीसर होते हुए ऑफिस पहुँचा हूँ।

शर्मा मुझे बेवकूफ बना रहे हो ?

करमचन्द नहीं सर, मैं सच कह रहा हूँ।

शर्मा मैं जानता हूँ करमचन्द जी, आप तो हमेशा सच ही बोलते हैं। गधा तो एक मैं हूँ। जो आए दिन आपको जल्दी आने के लिए कहता रहता हूँ।

करमचन्द मैंने कहा न सर, सिर्फ आज-आज माफ कर दीजिए—कल से मेरी ओर से आपको कोई शिकायत नहीं आएगी।

शर्मा क्यो, कल कौन-सी नई बात है आपके लिए ?

करमचन्द ऐसा है सर, कल से मै एक महीने की छुट्टी पर जा रहा हूँ।

शर्मा लेकिन आपके खाते मे किसी तरह की कोई छुट्टी बाकी भी है ?

करमचन्द छोड़िए सर, जब छुट्टी पर जाना जरूरी हो जाता है तो जोड़ बाकी नहीं देखी जाती।

शर्मा क्या मतलब ?

करमचन्द मेरा मतलब छुट्टी से था सर। जब भी मैं छुट्टी पर जाने की बात करता हूँ, आप ख्वामख्वाह परेशान हो जाते हैं।

शर्मा आए दिन आपकी लीव विदाउट पे होती है। भगवान जाने आपके घर का काम कैसे चलता है।

(मुस्कराकर)

करमचन्द शायद आपको मालूम नहीं है सर, एक तो मैं अभी तक कुवारा हूँ और दूसरा बुरा न मानना सर, मैं खाना गुरुद्वारे की लंगर मे खा आता हूँ। खैर छोड़िये सर, अभी तो जरा जल्दी में हूँ, फिर कभी डीटेल मे समझाऊगा आपको।

शर्मा आप अपनी सीट पर जाइए।

करमचन्द जा रहा हूँ सर, लेकिन मेरी हाजिरी ?

शर्मा चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। वैसे मैंने आपकी गैर हाजिरी लगा दी है।

करमचन्द थैंक्यू सर *(एकाएक)* क्या सर ?

(चिल्लाते स्वर में)

शर्मा अपनी सीट पर जाइए।

करमचन्द जा रहा हूँ सर।

(करमचन्द अन्दर जाने लगता है, शर्मा आवाज लगाता है)

शर्मा जरा सुनना करमचन्द जी।

करमचन्द आपने मुझसे कुछ कहा सर?

शर्मा जी। मै आप से कुछ पूछना चाहता हूँ, बतलाएगे आप?

(वापस पास आकर)

करमचन्द फरमाइए सर मै आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

शर्मा इससे पहले आपकी पोस्टिग कहा थी? मेरा मतलब कहा के रहने वाले है आप?

करमचन्द इससे पहले मै बासवाड़ा मे एल डी सी था सर और बासवाड़ा का ही रहने वाला हूँ।

शर्मा बासवाड़ा? लेकिन बासवाड़ा से आप यहा कैसे पहुच गए?

करमचन्द यह एक लम्बी कहानी है सर, बासवाड़ा मे, मैने एक एकाउण्टेण्ट के मुह पर थप्पड़ मार दिया था। अब क्यो मार दिया था, यह मै फिर कभी डीटेल मे बतलाऊगा इसलिए मेरा ट्रासफर बासवाड़ा से भीलवाड़ा कर दिया गया। भीलवाड़ा मे मैने किसी कारणवश एक कैशियर के मुह पर तमाचा जड़ दिया और मेरा ट्रासफर भीलवाड़ा से झोटवाडा जयपुर कर दिया गया। झोटवाडा मे मेरी किसी बात को लेकर ए डी एम गुप्ता से कहा सुनी हो गई। मैने आव देखा न ताव दो घूसे ए डी एम साहब के जड़ दिए फिर क्या था सर, बात का बतगड़ बन गया। अगर तगड़ी सिफारिश नही होती तो मुझे नौकरी से हाथ धोना पड़ता, लेकिन इतना जरूर हुआ, मुझे झोटवाड़ा से ट्रासफर कर जोशीवाडा बीकानेर भेज दिया गया।

शर्मा अब क्या इरादा है आपका?

करमचन्द अब मै किसी ऐसे आदमी के मुह पर एक थप्पड़ और मारना चाहता हूँ सर ताकि वापस मै अपने गाव बासवाड़ा पहुच जाऊ।

शर्मा मेरे बारे मे क्या खयाल है आपका?

(मुस्कराकर)

करमचन्द आपने तो मेरे दिल की बात कह दी सर।

(बिगड़ते हुए)

शर्मा अपनी सीट पर जाइए।

करमचन्द जा रहा हूँ सर।

(करमचन्द का अन्दर की ओर प्रस्थान। शर्मा पसीना पोछता है। बाहर की ओर से चम्पालाल चुन्नीलाल व वर्मा एक लेडीज साइकिल

के साथ कमरे मे प्रवेश करते हैं। शर्मा तीनो को ध्यान से देखकर)

शर्मा पधार गये आप लोग, जरा दीवार घड़ी की तरफ गर्दन उठाकर देखिए कितना बजा है?

वर्मा सर, ऊपर की ओर हम लोगो से देखा नही जाता, क्योंकि दो-तीन रोज से मेरी गरदन मे जोरो का दर्द है। वैसे दस तो शायद बजने ही वाले होगे ?

शर्मा होगे नही वर्मा जी, कभी के बज चुके है। सिर्फ ग्यारह बजने मे दस मिनट बाकी है।

वर्मा नही नही, ये कैसे हो सकता है सर। शायद ऑफिस की घड़ी तेज चल रही है, क्योंकि जब मैं घर से निकला था तो मेरी घड़ी मे दस बजने मे दस मिनट बाकी थे और मेरी यह घड़ी हिन्दुस्तान की मानी हुई घड़ियो मे से एक है। 'हनुमान मल तवर'।

शर्मा कौनसी कम्पनी बतलाई आपने?

वर्मा जी, हनुमान मल तवर।

शर्मा ये कौनसी कम्पनी है? मै तो इस कम्पनी का नाम आज पहली बार सुन रहा हूँ।

वर्मा कमाल है सर, इस कम्पनी के बारे मे आप नही जानते? आए दिन रेडियो, टी वी वगैरह में पब्लिसिटी आती रहती है। सही वक्त के लिए 'एच एम टी' की घड़ियाँ ही खरीदिए और वक्त के साथ चलिए। टिग-टाग।

शर्मा ओह! तो एच एम टी का मतलब आपने 'हनुमान मल तवर' से लगाया है।

वर्मा जी जी वो ।

शर्मा रियली कितने कमाल के आदमी है आप?

वर्मा आपकी दया है सर, वरना मै किस लायक था।

शर्मा व्हाट?

वर्मा मेरा मतलब ।

(बीच मे ही)

शर्मा मै पूछता हूँ ऑफिस आने मे देर कैसे हो गई?

वर्मा मैं परमपिता परमेश्वर की कसम खाकर कहता हूँ सर, आज मै बिलकुल सही समय पर घर से निकल गया था लेकिन इस साइकिल की बच्ची ने लेट करवा दी, न जाने एकाएक कैसे पक्चर हो गइ।

शर्मा — हू आप ने देर कैसे कर दी चुन्नीलाल जी ?

चुन्नी — सर, साइकिल पक्चर हो गई।

शर्मा — हू आप देर से कैसे पधारे है, चम्पालाल जी ?

चम्पालाल — सर, साइकिल पक्चर हो गई थी।

शर्मा — कमाल है, तुम तीनो की साइकिले एक साथ पक्चर हो गई थी ?

(तीनो जने एक साथ बोलते है)

नही सर हम तीनो एक ही साइकिल पर सवार थे।

शर्मा — व्हाट !

(तीना जने एक साथ बोलते है)

हम सच कह रहे है सर, अगर आपको हमारी बात पर यकीन नही है तो आप हमारे साथ चल कर तोलाराम जी तवर से पूछ सकते है, क्योकि हम पक्चर चिपकाई के पैसे एक तारीख को देने का बोल कर आए है।

शर्मा — चुन्नीलाल जी *(तेज स्वर मे)* चुन्नीलाल जी।

चुन्नीलाल — आपने मुझसे कुछ कहा सर ?

शर्मा — बहरे हो ?

चुन्नीलाल — नही तो सर, वैसे मेरे स्व पिता खूमराज जी जरूर कम सुनते थे, हालाकि उन्होंने डॉक्टर चटर्जी से कान का ऑपरेशन भी करवाया, लेकिन कुछ फर्क नही पड़ा, जबकि डॉक्टर चटर्जी एशिया लेवल के सर्जन है। खैर छोड़िये आप कुछ कह रहे थे, सर ?

शर्मा — मै कह रहा था कि कल आपके किसी पड़ौसी का इन्तकाल हो गया था और आज आपकी साइकिल पक्चर हो गई !

चुन्नीलाल — तो इसका मतलब हम तीनो लोग झूठ बोल रहे है, एक बात बतलाऊ सर, जिसके लगती है, उसी के पीड़ होती है। आप जानते है मरने वाले की उम्र क्या थी ? सिर्फ बीस साल मासूम बीबी और तीन-तीन जवान बच्चे।

शर्मा — क्या बोला आपने ?

चुन्नीलाल — सॉरी सर, मेरा मतलब जवान बीबी और तीन मासूम बच्चे। सब के सब एक साथ अनाथ हो गए *(रोने लगता है)* अब वो लोग क्या खाएगे, क्या चबाएगे ? अब कौन है उनका ? कैसे कटेगी उनकी लम्बी जिन्दगी ?

(जोरो से रोने लगता है, वर्मा धीरज बधाते हुए)

वर्मा धीरज रखिए, चुन्नीलाल जी, धीरज रखिए क्योंकि भगवान के आगे किसी का जोर नही चलता। उसकी लाठी मे आवाज नही है। वो कब किसे मार दे, इसके अलावा भले आदमियो की तो भगवान के यहां भी जरूरत पड़ती है। मुशी प्रेमचन्द ने अपने एक उपन्यास मे लिखा है कि जगल मे लकड़हारा पहले सीधे पेड़ को ही काटता है।

(बीच मे ही बिगड़कर)

शर्मा वर्मा जी ।

वर्मा शर्मा जी ।

शर्मा भाषण देना बन्द कीजिए और मेहरबानी करके साइकिल बाहर खड़ी करके आइए।

वर्मा इसमे मेहरबानी की कौनसी बात है सर, हम लोगो की यह ड्यूटी है कि हम लोग आपकी आज्ञा का पालन करे। वैसे ऑफिस जल्दी पहुंचने की जल्दबाजी मे मै साइकिल ऑफिस के अन्दर ही लेकर चला आया।

शर्मा तो ये क्या कम है वर्मा जी कि आप साइकिल पर चढ़े हुए ऑफिस के अन्दर तशरीफ नही लाए। जाइए और साइकिल बाहर खड़ी करके आइए।

वर्मा जा रहा हूँ सर।

(वर्मा का बाहर की ओर प्रस्थान)

(शर्मा चिल्लाते स्वर मे)

शर्मा चम्पालाल जी !

चम्पालाल यस सर।

शर्मा अब आप लोग यहा खड़े-खड़े मेरा मुह क्या देख रहे है, कृपया अपनी सीट पर जाइए।

चम्पालाल जा रहे हैं सर, लेकिन आप इस तरह चिल्ला क्यो रहे है। ऑफिस आने मे देर ही हुई है, किसी का खून तो नही करके आए हैं हम लोग, जो आप इस तरह

(चिल्लाते स्वर मे)

शर्मा क्या बकवास कर रहे है, आप?

चम्पालाल बकवास हम कर रहे है या आप किए जा रहे है। एक घण्टा हो गया आपको चिल्लाते हुए। जरा ऑफिस आने मे देर क्या हो गई जैसे कोई भूचाल आ गया। आप ऑफिस सुपरिण्टेण्डेण्ट है तो हम भी एल डी सी है। कोई चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी नही। वैसे उनकी भी

आजकल यूनियन है। अत वो हमारे बाप है, बेटे नही, समझे आप?

शर्मा अच्छी तरह से समझ गया हूँ। आप अपनी सीट पर जाइए वरना

चम्पालाल वरना क्या कर लेंगे आप? नौकरी से निकलवाएंगे या फांसी पर चढ़ाएंगे?

(बिगड़ते हुए)

शर्मा मै कहता हूँ आप अपनी सीट पर जाइए।

चम्पालाल जा रहा हूँ सर।

(चम्पालाल व चुन्नीलाल का अन्दर प्रस्थान। बाहर की ओर से वर्मा प्रवेश करके)

वर्मा सर, सड़को पर, ये कील और काटे कहा से आ जाते है ये तो अच्छा हुआ कि कील से मेरी साइकिल ही पक्चर हुई अगर कील मेरे पाव मे लग जाती तो?

(बीच मे ही)

शर्मा तो सुबह-सुबह हॉस्पिटल जाकर आपको टी टी का इन्जेक्शन लगवाना पड़ता।

वर्मा और न चाहते हुए भी मुझे दो-चार रोज की छुट्टी और लेनी पड़ जाती। सर, सुना है टी टी का इन्जेक्शन लगाने से हाथ मे जोरो का दर्द हो जाता है और जिसके लिए डॉक्टर बर्फ का सेंक करने की सलाह देता है।

शर्मा आपका कहना ठीक है वर्मा जी, लेकिन नित नए बहाने बनाते हुए आपको शर्म आनी चाहिए। आज आपकी साइकिल पक्चर हुई है, कल आपका टायर फटेगा और परसो आपकी टाग टूटेगी।

(बिगड़ते हुए)

वर्मा देखिए सर मै आपकी जरूरत से ज्यादा इज्जत करता हूँ, इसका ये मतलब नही है कि आप हम जो जी मे आए कहते रहे। अगर मेरी टाग टूट जाती तो मै ऑफिस कैसे पहुचता? अगर मै ऑफिस नही पहुच पाता तो मुझे तनख्वाह कौन देता? अगर मुझे तनख्वाह नही मिलती तो मेरे बच्चो को खाने को क्या मिलेगा। जब बच्चो को खाने को ही नही मिलेगा तो भूख के मारे बच्चे मर जाएगे। अगर मेरे बच्चे ही मर गए तो बगैर बच्चो के मेरी जिन्दगी किस काम की ।

(रोने लगता है - बाहर की ओर से दुलीचन्द प्रवेश करके)

दुलीचन्द अरे! अरे! ये क्या वर्मा जी, आप तो सचमुच बच्चो की तरह रोने लग गए। शर्मा जी तो हमारे भले के लिए कह रहे है। आखिर शर्मा

जी हम लोगो से साठ-सत्तर साल बड़े हैं। क्या हुआ अगर कुछ कह भी दिया।

शर्मा क्या बकवास कर रहे हैं आप?

दुलीचन्द सॉरी सर, मेरा मतलब सात आठ साल बड़े है। क्या हुआ अगर कुछ कह दिया, शर्मा जी हमे चाहे कुछ भी कह ले, लेकिन बड़े साहब के सामने हमारी कभी शिकायत नही करते, वरना बड़े साहब हम लोगो को कभी का नौकरी से निकाल देते। अब देखिए ना, देर से तो मै भी आया हूँ। मुझे तो शर्माजी ने कुछ नही कहा। क्यो सर, इसमे वर्मा जी को रोने की क्या जरूरत है?

शर्मा मसका मत लगाइए दुलीचन्द जी, कृपया इनको अपनी सीट पर जाने दीजिए।

दुलीचन्द जाइए वर्मा जी, कृपया आप अन्दर जाइए। मुझे जरा शर्मा जी से गोपनीय वार्ता करनी है।

(वर्मा का अन्दर की ओर प्रस्थान-उसी क्षण टेलीफोन बजता है, रिसीवर उठाकर)

शर्मा शर्मा बोल रहा हू। कौन साहब? फरमाइए एप्लीकेशन? किसके साथ भेजी थी आपने? बालकिशन जी के साथ। शायद यह जानकर आपको खुशी होगी कि बालकिशन जी पिछले तीन महीनो से छुट्टी पर चल रहे हैं।

(रिसीवर रखता है)

दुलीचन्द हा सर, मेरे लिए क्या आदेश है?

शर्मा आप देर से आने की आदत छोड़ेगे या मै ऑफिस छोड़ कर चला जाऊ।

दुलीचन्द यू तो ऑफिस छोड़ने वाली बात तो आप काफी समय से कर रहे है, वैसे आपकी सर्विस कितने साल की हो गई सर?

शर्मा बकवास बन्द कीजिए। शर्म नही आती हमेशा देर से आते हुए?

दुलीचन्द आजकल मैं देर से कब आता हूँ सर? एक समय था जब मै देर से आया करता था। अब तो कई बार सोचता हूँ कि आज ऑफिस जरा सुस्ता कर जाऊगा फिर भी घर पर रुका ही नही जाता।

शर्मा क्या बकवास कर रहे है? कल आप आधा घण्टा देर से आए थे और आज पूरा एक घण्टा।

दुलीचन्द वैसे तो आज मै बिलकुल ठीक समय पर घर से निकल गया था सर, लेकिन एकाएक नापासर से दूर के मेहमान आ गए और न चाहते

हुए भी उन्हे घर तक छोड़ कर आने मे जरा देर हो गई। ये मेहमान लोग भी खूब है, जरा भी नही सोचते कि इस महगाई के जमाने मे लोगबाग अपने घर का काम कैसे चलाते होगे। जब चाहे आ धमकते है। मेरे भी बीसियो रिश्तेदार है सर, लेकिन वो दस बार लिखते है तो मै नौ बार जाता हूँ और अपना तो एक सिद्धान्त है सर, बिन बुलाए तो भगवान के यहाँ भी नही जाएगे। क्यो सर, आपकी इसमे क्या राय है?

शर्मा — मै आपकी राय से इत्तफाक रखता हूँ दुलीचन्द जी, कृपया अपनी सीट पर जाइए।

दुलीचन्द — जा रहा हूँ सर लेकिन मै लच के बाद ऑफिस नही आ पाऊँगा, क्योंकि एक बजे मेहमानो को खाना है।

शर्मा — क्या खाना है?

दुलीचन्द — सॉरी सर, मेरा मतलब एक बजे मेहमानो के लिए घर पर खाने का प्रोग्राम रखा है, इसलिए लच के बाद मै वापस नही आ पाऊगा।

शर्मा — तो अभी आपने ऑफिस पधारने की तकलीफ ही क्यो की? आप ग्यारह बजे तो ऑफिस पधारे है और एक बजे वापस जाना चाहते है आप ऐसा कीजिए आज की छुट्टी ले लीजिए।

(मुस्कराकर)

दुलीचन्द — क्यो मजाक कर रहे है सर अगर मेरे पास किसी तरह की कोई छुट्टी बाकी होती तो मै ऑफिस आता ही क्यो?

शर्मा — अच्छी बात है अपनी सीट पर जाइए?

दुलीचन्द — जा रहा हूँ सर, लेकिन मै लच पर घर नही गया तो मेहमान लोग क्या सोचेगे, क्योंकि मैने मेहमानो को बोल रखा है कि शर्मा जी मेरे धर्म के भाई बने हुए है और उनकी धर्मपत्नी पिछले कई वर्षों से मेरे राखी बाधती आ रही है।

शर्मा — आप मेरे धर्म के भाई बने हुए है और मेरी धर्मपत्नी आपको राखी बाधती है बकवास करते है आप।

(बीच मे ही)

[दुली]चन्द — और हा सर एक बात तो मै कहनी भूल ही गया मेरी धर्मपत्नी ने आपको भी लच के लिए इन्वाइट किया है क्योंकि आज मेरे साढूजी का आखिरी श्राद्ध है।

(बिगड़ते हुए)

[अ]मृत

शर्मा तो इसके लिए मथुरा से किसी पण्डे को पकड़ कर ले आइए, क्योकि मै अपना टिफिन साथ लेकर आता हूँ।

दुलीचन्द अगर ऐसा ही है तो आपका टिफिन मै खा लूगा सर, लेकिन आपको मेरे साथ चलना ही होगा। प्लीज सर

शर्मा मसका मत लगाइए, क्या लगता हूँ मै तुम्हारा ? तुम्हारी धर्मपत्नी मुझे कैसे जानती है ? बोलिए, वो मेरी

(बीच मे ही)

दुलीचन्द जी जी वो।

(चिल्लाते स्वर मे)

शर्मा अपनी सीट पर जाइए।

दुलीचन्द जा रहा हूँ सर।

(दुलीचन्द का प्रस्थान—शर्मा पसीना पोंछता है कि बाहर से अमीन प्रवेश करके)

अमीन मैने कहा सलाम हुजूर। अरे यह क्या सर सर्दी मे पसीना ? आपको बी पी तो नही रहता सर ?

शर्मा बड़ी जल्दी तशरीफ ले आए, अच्छा होता आप लच वगैरह से फ्री होकर ही ऑफिस तशरीफ फरमाते ताकि लच के लिए वापस घर जाने मे आपको कोई तकलीफ नही होती।

(रजिस्टर मे हस्ताक्षर करते-करते)

अमीन वैसे घर जाने मे तकलीफ कैसी हुजूर, अगर आप इजाजत दे तो मै (बात बदलते हुए) वैसे आज मै लच पर घर नही जाऊगा क्योकि आज मैने रोजा रखा है, इसलिए बाजार की तरफ जाकर फल फ्रूट ले आऊगा। वैसे आपको फ्रूट मे क्या पसन्द है सर ?

(झुंझलाहट)

शर्मा तरबूज।

अमीन तरबूज ? वैसे काफी गुणकारी फल है सर। खासकर पथरी वाले रोगियो के लिए तो रामबाण ही समझिए।

शर्मा कुछ तो अपनी उम्र का खयाल कीजिए।

अमीन आपने मुझे साठ और पाच पिचयासी का समझ लिया है। जिसके लिए आप मेरी उम्र को कोसे जा रहे है। माशाअल्लाह, अभी तो मेरे अब्बा हुजूर

(बीच मे ही)

शर्मा — लेकिन ऐसा मैने आपको क्या गलत कह दिया जो आप साठ और पाच पिचयासी बतला रहे है?

(बीच मे ही)

अमीन — तो अब आप मेरे लट्ठ मारना चाहते हैं? अगर हाँ तो, वो मुराद भी पूरी कर लीजिए।

शर्मा — आपको सही बात कहता हूँ और आप बुरा मान जाते है।

अमीन — हा-हा, बुरा और नापाक आदमी तो सिर्फ मै ही हूँ इस ऑफिस मे। शराफत का ठेका तो सिर्फ आपने ही ले रखा है।

(बिगडते हुए)

शर्मा — तो इसमे इतना गर्म होने की कौन-सी बात है। मुझे आपसे कोइ दुश्मनी है जो मै जल्दी आने के लिए सिर्फ आपको ही कहता हूँ।

अमीन — अच्छी बात है। आप कुछ भी कह डालिए, लेकिन मै कुछ नही कहूगा।

शर्मा — नही क्यो शुरू कर दीजिए वो खूबसूरत बहाना। जो आप तैयार करके लाए है।

अमीन — कुरान तो अभी आपके पास होगी नही, इसलिए मै इस उपस्थिति पजिका पर हाथ रख कर कहता हूँ कि जैसे ही मै घर से निकला, मेरा छोटे वाला मुन्ना छत से नीचे आ गिरा।

(बिगड़ते हुए)

शर्मा — छोटे वाला मुन्ना नही खान साहब, छोटे वाली मुन्नी कहिएगा, क्योंकि अभी तक खुदा पाक ने आपको साहबजादे का सुख तो अता ही नही किया है।

(झेपते हुए)

अमीन — जी हा, मेरी छोटे वाली मुन्नी एकाएक सीढियो से नीचे आ गिरी।

शर्मा — लेकिन अभी तो आपने फरमाया था कि वो छत से नीचे आ गिरा?

अमीन — जी हा गिरी तो छत से ही थी लेकिन

(बीच मे ही बोलकर)

शर्मा — सीढ़िया होते हुए, यानी थ्रू प्रॉपर चैनल आई थी।

अमीन — आप बिलकुल बजा फरमा रहे है हुजूर बच्ची के चोट लग आने के कारण मैं जरा ऊक-चूक हो गया हूँ।

शर्मा कितने कमाल के आदमी है आप।

अमीन आपकी दुआ है हुजूर, वरना मै नालायक किस लायक था।

शर्मा क्या बकवास कर रहे है आप?

अमीन मैं सच कह रहा हूँ हुजूर, देखिए यह रहा हॉस्पिटल का टिकिट।

शर्मा शर्म नही आती सफेद झूठ बोलते हुए?
कल देर से आने पर आपने नही बोला था कि बच्चे बेगम के साथ अपने ननिहाल गए है और आप उन्हे स्टेशन छोड़ने चले गए थे।

अमीन आप बिलकुल बजा फरमा रहे है हुजूर, लेकिन मेरी बेगम साहिबा के किसी नजदीकी रिश्तेदार का वहा इतकाल हो गया इसलिए बेगम ने वहाँ रुकना अच्छा नही समझा और वो बच्चो को लेकर आज सुबह वापस आ गईं।

शर्मा जरा खुदा से डरो अमीन साहब, कल रात अपने बच्चो के साथ फिल्म देखने नही गए थे? बोल दीजिए वो बच्चे आपके किसी पड़ौसी के थे?

अमीन आप तो सचमुच खुदा के बन्दे है, हुजूर। वास्तव मे वो बच्चे मेरे पड़ौसी मुन्नालाल जी के बच्चे थे। मुन्नालालजी की नाइट ड्यूटी थी, इसलिए उन्होंने मुझे बोल दिया कि घर बैठे क्या करोगे अमीन साहब, जरा बच्चो को फिल्म ही दिखा लाइए और मेरे मना करने के बावजूद उन्होंने सिनेमा मैनेजर को फोन कर दिया।

शर्मा लेकिन वो औरत आपके साथ बुर्का पहने कौन बैठी थी? शायद मुन्नालाल जी ने दूसरी शादी कर ली है।

अमीन जी, वो औरत? वो तो मेरी सालीजान थी, यानी की फातिमा आज सुबह ही बेगम के साथ नैनीताल से आई है।

शर्मा लेकिन फिल्म देखने तो आप कल रात पधारे थे?

अमीन तो फिर वो कल रात को ही आ गई होगी। बड़ी चुलबुली है सर, छोटी होने के नाते मेरे साथ बार बार मसखरी करती रहती है। बेगम साहिबा तो हम दोनो पर शक तक करने लग जाती है।

शर्मा बकवास बन्द कीजिए और अपनी सीट पर जाइए।

अमीन जा रहा हूँ जनाब लेकिन

(टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है रिसीवर उठाकर)

शर्मा शर्मा बोल रहा हूँ ! कौन? कालरा साहब? हुक्म कीजिए, क्या

आदेश है ? अच्छा हूँ। जी, मै अभी पहुच रहा हूँ। (रिसीवर रखकर) देखिए अमीन साहब, मै जरा कलैक्टर ऑफिस जाकर आ रहा हूँ, जब तक मै वापस न आ जाऊं, कृपया आप ऑफिस मे ही रहिएगा।

अमीन जी, हुजूर। आप आराम से जाइए और आराम से आइएगा।

(एक-दो फ़ाइल वगैरह लेकर शर्मा का प्रस्थान। अन्दर की ओर से वर्मा ट्रांजिस्टर लेकर प्रवेश करके चिल्लाते स्वर मे ।

वर्मा आऊट।

अमीन अरे, कौन गया वर्मा जी ?

वर्मा शर्मा, तीन पर और चौहान जीरो पर।

अमीन खुदा कसम, भारतीय क्रिकेट टीम का भट्टा बिठा दिया है इन लोगो ने।

वर्मा सच कह रहे है अगर सच पूछा जाए तो आपसी फूट खा गई इस भारतीय टीम को।

(प्रवेश करके)

दुलीचन्द देखो भाई क्रिकेट खेलना तो हमारे बस का रोग नही है मगर एक सजेशन जरूर दे सकता हूँ।

वर्मा अरे फेको ना दुलीचन्द जी, आपकी तकरीर मै उन लोगो तक जरूर पहुचा दूगा।

दुलीचन्द अगर हमारी क्रिकेट टीम के सभी खिलाड़ियो को भारतीय टीम का कप्तान बना दिया जावे, तो दुनिया की कोई ताक्त नही कि जो भारतीय टीम का मुकाबला कर सके।

(ताली बजाकर प्रवेश करते हुए)

करमचन्द वाह दुलीचन्द जी क्या लाख रुपये की बात कही है आपने। क्योंकि कैप्टन की भूख और भाई भतीजावाद ही भारतीय टीम की सबसे बड़ी कमजोरी है। क्यो दुलीचन्द जी ?

दुलीचन्द बिलकुल सही कहा आपने।

(चुन्नीलाल प्रवेश करता है)

करमचन्द आइए चुन्नीलाल जी।

चुन्नीलाल भगवान कसम क्या जच रहे हो अमीन भाई शर्मा जी की सीट पर।

करमचन्द सच यार, अगर किसी तरह शर्मा जी की किती कट जाए तो अमीन भाई का प्रमोशन पक्का। क्यो अमीन भाई ?

अमीन तुम लोगो के मुंह मे घी-शक्कर। खुदा कसम अगर एक बार ये कुर्सी हाथ लग जाए

(बीच मे ही)

चम्पालाल तो महीने मे सिर्फ एक बार ऑफिस आओ और पूरी 'पे' घर बैठे उठाओ।

चुन्नीलाल तो निकालू कोई तरीका शर्माजी को यहा से भगाने का ?

वर्मा तो देर किस बात की है, कई दिनो से शर्माजी ज्यादा ही फड़ फड़ करने लगे हैं।

चुन्नीलाल बस वो ही फार्मूला नम्बर फोटीफोर।

(एक हाथ ऊपर उठाते हुए)

शर्माजी ?

(सारे लोग एक साथ बोलते है)

हाय हाय

चुन्नीलाल तानाशाही

(सब लोग एक साथ)

नहीं चलेगी-नही चलेगी।

चुन्नीलाल जो हमसे टकराएगा।

(सब एक साथ)

मिट्टी मे मिल जायेगा।

(इस दौरान बाहर की ओर से रामसुख का प्रवेश)

रामसुख साडा हक्क।

(सब लोग एक साथ)

इत्थे रख।

(सब का हसना)

वर्मा आ भाई, रामसुख। आज सुबह सुबह कहा चला गया था तू ?

रामसुख बड़े साहब के यहाँ, बड़े साहब अभी जयपुर जा रहे है किसी जरूरी काम से।

अमीन तो आज का दिन हमारा है रामसुख। कोई बढ़िया सी गप्प सुनाओ कि बगैर पिये ही सब को नशा चढ़ जाए।

(सब एक साथ)

हां-हा सुना रामसुख।

रामसुख देखो। आजकल मैं गप्पो मे नही, हकीकत मे विश्वास रखता हूँ।

करमचन्द हा-हा, हकीकत ही सुना यार, वैसे भी गप्पे सुन-सुन कर ऊब गए है। ले इधर आ, इस कुर्सी पर बैठ।

(सब के बीच कुर्सी पर बैठकर)

रामसुख ऐसा है दोस्तो वापस आते समय मैं बड़े साहब के घर से निकल कर आमलेट खाने के लिए एक होटल मे घुस गया, क्योंकि मेम साहब ने मेरे काम से खुश होकर मुझे पचास का नोट पकड़ा दिया।

चुन्नीलाल लकी हो दोस्त।

रामसुख आमलेट खाने के लिए जैसे ही मै होटल मे घुसा कि मैने देखा

(बीच मे ही)

दुलीचन्द दिन मे उल्लू उड़ रहे थे ?

रामसुख पहले अपनी चोच बन्द रखिए।

अमीन देखो कोई बीच मे नही बोलेगा। हा राम सुख।

रामसुख जैसे ही मै होटल मे घुसा कि मेरी नजर

(बीच मे ही)

करमचन्द जरूर होटल मे बैठी किसी खूबसूरत लड़की पर पड़ी होगी ?

रामसुख देखिए अगर इस बार किसी की चोच बीच मे खुली तो मेरी चोच हमेशा के लिए बन्द हो जाएगी।

अमीन कसम खुदा की, अगर कोई बीच मे बोला। फिर क्या हुआ ?

रामसुख जैसे ही मै होटल मे घुसा कि मेरी नजर एक कोने मे बैठे हुए अपने शर्माजी पर पड़ी और मे वही अटक कर रह गया।

दुलीचन्द फिर झटकाया किसने ?

चुन्नीलाल देखिए कोई भी आदमी बीच मे बोला तो आधी रात को उसका बाप मरेगा। आगे सुना रामसुख।

रामसुख मैने शर्माजी को होटल मे बैठे देखा और उन्हे देखता ही चला गया क्योकि शर्माजी होटल मे बैठे चिकन खा रहे थे। कुछ देर तो मै खड़ा खड़ा शर्माजी को आराम से देखता रहा और जैसे ही मै वहाँ से

खिसकने लगा कि शर्माजी की नजर मुझ पर पड़ गई और मै जोर से चिल्ला पड़ा—बधाई हो, बधाई हो शर्माजी। बधाई हो। मेरे इतना कहते ही होटल मे बैठे लोगो ने मुझे घेर लिया और पूछने लगे कि 'किस बात की बधाई है भैया?' इतने मे शर्माजी चिकन की प्लेट को छुपाते हुए बोले 'किस बात की बधाई है?' मैने कहा 'बकरी आपकी ब्याही है '

(सारे लोग हसते है और अमीन बीच मे बोलता है)

अमीन लेकिन अभी शर्माजी कहा है?

रामसुख बस इधर आ ही रहे है, क्योंकि मैंने उन्हे पास वाले चौराहे पर छोड़ा था।

अमीन अरे बाप रे।

(सब लोग दौड़कर अन्दर चले जाते है। कुछ क्षणो बाद बाहर की ओर से शर्मा प्रवेश कर कुर्सी पर बैठते हैं।)

रामसुख नमस्कार सर।

शर्मा आ गया तू?

रामसुख जी हा।

शर्मा ऑफिस खुला छोड़कर कहा मरा था तू?

रामसुख सर, आपको भूत वगैरह से डर नही लगता?

शर्मा क्या मतलब?

रामसुख मेरा मतलब यह है सर, अगर मैं मर जाता ता भूत के अलावा बन ही क्या सकता था।

शर्मा मै पूछता हूँ ऑफिस खुला छोड़कर कहा गया था?

रामसुख बड़े साहब का ट्रक कॉल आया था कि फौरन घर चले आओ।

शर्मा इसलिए ऑफिस खुला छोड़कर चल दिया तू?

रामसुख नही सर, ऐसी तो कोई बात नही थी। एक तो दस बजने वाले थे और दूसरा मैने आपको दूर से आते हुए देख लिया था। आप रास्ते मे कुछ खाते हुए आ रहे थे (धीरे से) क्या खा रहे थे सर?

शर्मा शॅट-अप! अगर ऑफिस मे कोई घुस जाता और सामान चोरी हो जाता तो?

रामसुख तो एक साथ चार आदमी मारे जाते सर।

शर्मा चार आदमी? चार आदमी कौन मारे जाते?

रामसुख आप।

शर्मा मै?

रामसुख मै, बड़े साहब और वो चोर।

शर्मा मै कैसे मारा जाता?

रामसुख आप इसलिए मारे जाते सर, क्योंकि इस हादसे के बाद बड़े साहब आप पर ही बरसते कि आज तक इतने लापरवाह कर्मचारी की शिकायत क्यो नही की।

शर्मा लेकिन बड़े साहब कैसे मारे जाते?

रामसुख ये भी कोई पूछने की बात है सर, इतनी बड़ी चोरी हो जाने के बाद, जाच आयोग तो बड़े साहब के खिलाफ ही बैठता।

शर्मा और तुम कैसे मारे जाते?

रामसुख इतने बड़े काण्ड होने के बाद मुझे नौकरी पर कौन रखता सर? अगर मै नौकरी से निकाल दिया जाता तो इतनी बढ़िया नौकरी मुझे और कहा मिलने की थी सर।

शर्मा लेकिन वो चोर कैसे मारा जाता?

रामसुख पुलिस के हाथो सर।

(कूल्हे पर हाथ फिराते हुए)

साले बहुत दोरा मारते है।

शर्मा क्यो पुलिस से पाला पडा हुआ है?

रामसुख आए दिन पडता था सर।

शर्मा आए दिन वो कैसे?

रामसुख मेरे स्वर्गीय पिताजी पुलिस मे कॉन्स्टेबिल थे।

शर्मा इतनी बड़ी पोस्ट पर?

रामसुख मत्री जी की सिफारिश थी।

शर्मा अच्छी बात है, लेकिन बडे साहब ने किसलिए बुलाया था सुबह सुबह तुमको?

रामसुख एक खूबसूरत लडकी मेरा मतलब, एक लेडी टाइपिस्ट को आपके पास भेजा है।

शर्मा — कहा है वो लडकी ?

रामसुख — काफी देर से बाहर खड़ी आपसे मिलने को व्याकुल हो रही है।

शर्मा — क्या बकवास कर रहे हो ?

रामसुख — मेरा मतलब आपसे पूछे बगैर मै उसे अन्दर कैसे ला सकता हूँ।

शर्मा — जब बड़े साहब ने ही भेजा है तो मुझे पूछने की जरूरत ही क्या थी ?

रामसुख — वो तो ठीक है सर, बड़े साहब की बड़ाई उनके बगले तक, यहा ऑफिस मे तो आपका ही रुतबा होना चाहिए।

शर्मा — अब जाओ और जल्दी से लड़की को अन्दर लेकर आओ।

रामसुख — अभी लाया सर।

(रामसुख उसी क्षण बाहर की ओर से एक किशोरी के साथ प्रवेश करके)

हमारे सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब, मैने रास्ते मे बतलाया था ना आपको ?

रीता — गुड मार्निंग सर।

शर्मा — गुड मार्निंग, योर गुड नेम ?

रीता — माईसैल्फ रीता लूथरा। इस ऑफिस मे मेरी नई-नई पोस्टिग हुई है।

शर्मा — बधाई हो, वैसे कहा तक शिक्षा पाई तुमने ?

रीता — थैक्यु सर, ग्रेज्युएशन फर्स्ट क्लास मे किया है

(कुछ कागजात शर्मा की तरफ बढ़ाती है। शर्मा कागजात देखते-देखते)

शर्मा — गुड, टाइप के अलावा शॉर्टहैण्ड भी जानती हो ?

रीता — जी हा, हिन्दी-अग्रेजी दोनो मे।

शर्मा — वैरी गुड, लेकिन इतनी देर तुम बाहर क्यो खडी रह गई ?

(रीता-रामसुख की तरफ देखती है)

रामसुख — हमारे सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब बहुत ही दयालु बदे है मैडम। आप चाहे तो हमेशा ही देर से ऑफिस आना-जाना, साहब तुम्हे कुछ

(बिगडते हुए)

शर्मा — क्या बकवास कर रहे हो ?

रामसुख — मेरा मतलब [illegible]

(बीच मे ही)

शर्मा अन्दर जाओ और अपना राम करो।

रामसुख जा रहा हूँ सर।

(रामसुख का अन्दर प्रस्थान शर्मा पेपर्स देखकर)

शर्मा आओ मैडम। मै तुम्हे दूसरे स्टाफ से परिचय करवा देता हूँ।

रीता यस सर।

(शर्मा एवं रीता का अन्दर की ओर प्रस्थान)

(धीरे धीरे मच पर अधकार फैलता है और उसी क्षण वापस मच पर प्रकाश फैल जाता है। रामसुख ऑफिस की सफाई करते हुए गुनगुनाता है। दीवार घड़ी मे दस बजते है और उसी क्षण अमीन साहब का प्रवेश)

रामसुख अरे, खान साहब आप? आज इतना जल्दी? क्यो सब खैरियत तो है ना?

(अमीन जल्दी से रजिस्टर मे साइन करके अन्दर चला जाता है। उसी दौरान करमचन्द प्रवेश करता है।)

अरे, अरे! करमचन्द जी अभी तो दस ही नही बजे है इतना जल्दी कैसे आना हुआ है आपका?

(करमचन्द जल्दी से रजिस्टर मे साइन करके अन्दर जाता है)

(उसी क्षण चम्पालाल, चुन्नीलाल व दुलीचन्द प्रवेश करते है)

अरे, अरे! ये क्या, आज सभी लोग इतना जल्दी? आखिर बात क्या है? क्यो दुलीचन्द जी, मै कोई सपना तो नही देख रहा हूँ?

(सारे लोग रजिस्टर मे हस्ताक्षर करके अन्दर जाते है और उसी क्षण बाहर की ओर से वर्मा प्रवेश करके)

वर्मा अरे सुनो रामसुख वो नई वाली

(बीच मे ही)

रामसुख अजी कोई नही आया वर्मा जी, सबसे पहले आज बाजी आपने ही मारी है।

वर्मा देखो रामसुख अगर शर्माजी पूछे तो बतला देना कि सबसे पहले

(बीच मे ही)

रामसुख — अरे आप बिलकुल बेफिक्र रहिए वर्माजी, मैं सब कुछ सही-सही बतला दूगा, लेकिन आप कहे तो मै तब तक चाय पी आऊ।

वर्मा — अरे, हा-हा।

(वर्मा-रामसुख को पाच का नोट पकडाता है, उसी क्षण शर्मा प्रवेश करता है। वर्मा धीरे से अन्दर खिसक जाता है।)

रामसुख — गुड मार्निंग सर।

शर्मा — नमस्कार नही बोला जाता तुमसे?

रामसुख — सॉरी सर।

(शर्मा रजिस्टर मे साइन करता है और एकाएक)

शर्मा — रामसुख!

रामसुख — यस सर।

शर्मा — ऑफिस कितने बजे खोला तुमने?

रामसुख — नौ बजकर पैंतीस मिनट पर। सैकिंड मैने नोट नहीं किए सर।

शर्मा — इस रजिस्टर मे साइन किसने किए है?

रामसुख — मैने तो नही किए, क्यो क्या हुआ सर?

शर्मा — मै पूछ रहा हूँ इस रजिस्टर मे दस्तखत किसने किए है?

रामसुख — वर्मा जी, करमचन्द जी, अमीन साहब, दुलीचन्द जी, चुन्नीलाल जी मेरा मतलब है सब लोग ड्यूटी पर आ गये है।

शर्मा — क्या बक रहा है?

रामसुख — मै बकरा नही, रामसुख बोल रहा हूँ सर। सारे बाबू लोग ड्यूटी पर आ गये है।

शर्मा — सब लोग ड्यूटी पर आ गए है? अभी टाइम क्या हुआ है?

रामसुख — टाइम कुछ भी हुआ हो सर, आप अन्दर चलकर देख सकते है। सब लोग अपने-अपने काम मे जुटे हुए है गधे की तरह।

शर्मा — काम मे जुटे हुए है अरे, तुमने कोई सपना तो नही देख लिया?

रामसुख — सपना तो सात महीनो से ससुराल है मेरा मतलब सबको बुलाकर लाऊ सर?

(कुछ क्षण सोच कर)

शर्मा — बस रहने दे, लेकिन एकाएक इन लोगो मे ये चेज कैसा

(गर्दन हिलाते हुए) अब समझा मै।

(बीच मे ही)

रामसुख मै भी समझ गया सर।

शर्मा क्या समझ गये हो?

रामसुख यही कि ये सब लोग आज ठीक समय पर ड्यूटी पर कैसे आ गये है?

शर्मा जल्दी बतलाओ क्या समझ गए हो?

रामसुख मुझे बतलाते हुए जरा शर्म सी लग रही है सर।

शर्मा किस बात की शर्म लग रही है? जल्दी बोलो क्या समझ गए हो?

रामसुख तो हिम्मत करके बतला दू सर?

शर्मा लेकिन इसमे हिम्मत करने की कौनसी बात है? जल्दी बोलो, क्या समझ गए हो?

रामसुख मेरे बतला देने पर बुरा तो नही मानेगे सर?

शर्मा हा-हा, मै कोई बुरा नही मानूगा। जल्दी बोलो, क्या समझ गए?

रामसुख आप मेरी कसम खाकर कहिए सर कि आप कोई बुरा नही मानेगे।

शर्मा बड़ा बेवकूफ है तू। मै इसमे क्या बुरा मान सकता हूँ?

रामसुख तो फिर बतला दू सर?

(झुझलाते हुए)

शर्मा ओफ्फो तो इसके लिए मै तुम्हे लिखकर दू कि कोई बुरा नही मानूगा। जल्दी बोलो क्या समझ गए हो?

रामसुख देखिए ना सर, अभी से आप इतना गुस्सा हो रहे है तो मेरे बतला देने पर भगवान जाने।

शर्मा एक घण्टा हो गया तुझे बोल दू—बतला दू करते-करते। रहने दे मुझे कुछ नही सुनना है।

(रामसुख अन्दर जाने लगता है)

कहा जा रहे हो? इधर आओ और जल्दी बोलो, क्या समझ गए हो?

रामसुख मैं नही बतलाऊंगा सर।

शर्मा कैसे नहीं बतलाओगे? तुम्हे हर हालत मे बतलाना होगा।

रामसुख ये कोई जबरदस्ती है सर।

शर्मा तो पहले तुमने बतला देने के लिए मुझे बोला ही क्यो था?

रामसुख लेकिन मैंने आपको यह भी बोला था कि मेरे बतला देने पर आप गुस्सा नही होंगे।

शर्मा तो गुस्सा कौन हो रहा है? तेज बोलने की मेरी आदत है। जल्दी बोलो क्या समझ गए हो?

रामसुख आज ये लोग ड्यूटी पर इसलिए जल्दी आए हैं

(इधर-उधर देखता है)

शर्मा अरे बाबा, जल्दी बतलाओ ना, आखिर क्या समझ गए हो? भगवान कसम, मुझे 'अमूजगी' सी आने लगी है।

रामसुख 'अमूजणी' ये अमूजणी क्या होती है सर?

(झुंझलाते हुए)

शर्मा बहुत खतरनाक बीमारी है जिसका दुनिया मे कही इलाज नही।

रामसुख वैसे मैंने कई तरह की बीमारियो के बारे मे सुन रखा है। जैसे हैजा, टी बी, कैन्सर, खासी, खुलखुलिया, लेकिन ये अमूजणी

शर्मा ओफ्फो, अब जल्दी बोलो ना क्या समझ गए हो?

रामसुख बोल देता हूँ सर लेकिन एक शर्त है मेरी?

शर्मा जल्दी बोलो, क्या शर्त है तुम्हारी?

रामसुख मेरी शर्त यह है सर कि मेरे सब कुछ बतला देने के बाद आपको भी बतलाना होगा कि ये अमूजणी क्या होती है।

शर्मा ठीक है। अब जल्दी बोलो क्या समझ गए हो?

रामसुख आज ये सब लोग ऑफिस इसलिए जल्दी आए है कि कल देर से आने पर आपने इनको बुरी तरह डाटा था।

शर्मा धत्त तेरी की। रात भर रोए और एक मरा। सुबह हुई तो वो भी उठ कर भाग गया।

(रीता प्रवेश करके)

रीता गुड मॉर्निंग सर।

शर्मा गुड मॉर्निंग। आपकी घड़ी मे कितना बजा है? मेरा मतलब समय क्या हुआ है?

रीता पौने ग्यारह सर।

शर्मा तो ड्यूटी पर आने का यह समय है आपका ?

रीता सॉरी सर, सिर्फ आज-आज माफ कर दीजिए।

शर्मा कितने दिनो की नौकरी हो गई है तुम्हारी ?

रीता सिर्फ आज-आज माफ कर दीजिए सर, आईन्दा मैं

(बीच मे ही)

शर्मा मै पूछता हूं कितने दिनो की नौकरी हो गई है, तुम्हारी ?

रीता आज दूसरा दिन है सर।

शर्मा और अभी से यह हाल है आपका ? मरा नही और भूत बन गया।

(रामसुख और सारे बाबू लोग छिपकर देखते हैं।)

रीता सिर्फ आज-आज माफ कर दीजिए सर, क्योंकि आज मेरे पड़ौस मे किसी का मरना हो गया था।

शर्मा मरना हो गया ? आपका मकान कहा है ? मेरा मतलब कहा रहती है आप ?

रीता शेरो के पिंजरे के पास। कभी पधारिए सर।

शर्मा थैक्यु। मुझे अभी जिन्दा रहना है।

रीता क्या सर ?

शर्मा कुछ नही, मेरा मतलब अपने स्टाफ मे पहले से किसी को जानती हो ? आई मीन स्टाफ का कोई आदमी तुम्हारे पडौस मे या तुम्हारे मकान के आस पास कही रहता है ?

रीता नही तो सर ?

शर्मा तो फिर यह खूबसूरत बहाना कहा से सीखा तुमने ?

रीता कौन सा बहाना सर ?

शर्मा यही जो तुमने अभी-अभी देर से आने का कारण बतलाया ?

(रामसुख ट्रे मे दो गिलास पानी लेकर प्रवेश करता है)

रीता मै सच कह रही हूँ सर।

रामसुख ठण्डा जल सर।

शर्मा किसने बोला था तुमको पानी लाने के लिए ?

रामसुख सॉरी सर। आप पीएगी मैडम ?

(रीता पानी पीकर वापस गिलास ट्रे मे रखती है)

रीता मैं अपनी सीट पर जाऊं सर?

शर्मा आइन्दा मैं ड्यूटी के बारे मे कोई बहाना सुनना नही चाहूगा।

रीता यस सर।

(रीता का अन्दर प्रस्थान)

रामसुख बुरा न माने तो एक बात कहूं सर?

शर्मा रहने दे, तेरी बात बहुत महगी पड़ती है मुझको।

रामसुख बहुत जरूरी बात है सर, आई मीन वैरी इम्पोर्टेण्ट थिग।

शर्मा कह दिया ना मुझे कुछ नही सुनना है।

रामसुख आपका कहना ठीक है सर, लेकिन बाद मे आप पछताएगे और मुझे डाटेगे कि ऐसा ही था तो तुमने मुझे पहले क्यो नही बतलाया?

शर्मा जल्दी से बतला दोगे या बात को पाच किलोमीटर लम्बा खीचोगे?

रामसुख एक ही सास मे फम्फेड़ दूगा सर। मेरा मतलब बतला दूगा सर।

शर्मा जल्दी बोलो क्या बात है?

रामसुख बात सिर्फ इतनी-सी है सर कि आप दूसरे बाबू लोगो की तरह इन मेम साहब को मत डाट देना क्योंकि बड़े साहब का ड्राईवर बाकेलाल बतला रहा था कि रीता मैडम बड़े साहब की नजदीकी रिश्तेदार है वरना

शर्मा वरना वरना क्या?

रामसुख कम्पलसरी रिटायरमेट।

शर्मा शॅट अप! मुझे डराने की कोशिश करता है। मै सही बात के लिए किसी लाट साहब से नही डरता।

रामसुख बड़े साहब से भी नही?

शर्मा हा-हा किसी लाट साहब से नही। मै अपनी मेहनत की खाता हूँ। तुम लोगो की तरह मुफ्त की नही, समझे।

रामसुख अच्छी तरह समझ गया हूँ सर।

शर्मा क्या समझ गए हो?

रामसुख यही कि कार्य ही पूजा है।

शर्मा तो अन्दर जाओ और पूजा मे लग जाओ।

रामसुख	जा रहा हूँ सर।

(रामसुख का अन्दर प्रस्थान)

शर्मा	उल्लू का पट्ठा। मुझे डराने की कोशिश करता है। सड़ी बात के लिए मैं किसी लाट साहब से

(एकाएक टेलीफोन की घण्टी बजती है। रिसीवर उठाकर)

शर्मा	हैलो। शर्मा बोल रहा हूँ कौन साहब? बड़े साहब!

(इसी दौरान रामसुख एक टेलीफोन लेकर कमरे मे प्रवेश करता है और शर्मा के पीछे छिपकर बड़े साहब की आवाज मे बात करता है)

रामसुख	रीता ड्यूटी पर आ गई?

शर्मा	यस सर, अभी-अभी आई है।

रामसुख	तुमने उसे देर से आने के लिए किसलिए डाटा?

शर्मा	माफ करना सर, गलती हो गई। आइन्दा मैं पूरा-पूरा ध्यान रखूगा।

रामसुख	क्या ध्यान रखोगे?

शर्मा	यही कि रीता देवी आपकी नजदीकी रिश्तेदार हैं।

रामसुख	इतना सब जानने के बाद तुमने उसे डाटने की हिम्मत कैसे की?

शर्मा	नही नही सर, मैने उसे बिल्कुल नही डाटा। सिर्फ देर से आने का कारण ही पूछा था।

रामसुख	इडियट, इस उम्र मे झूठ बोलते हो? तुमने उसके मकान का पता नही पूछा था?

शर्मा	गलती हो गई सर।

रामसुख	कितने साल की नौकरी हो गई तुम्हारी?

शर्मा	इस बार माफ कर दीजिए सर, आइन्दा ऐसी गलती कभी नहीं करूगा।

रामसुख	मै पूछता हूँ कितने साल की नौकरी हो गई तुम्हारी?

शर्मा	बत्तीस साल की सर, रिटायरमैण्ट मे सिर्फ आठ महीने बाकी है।

रामसुख	अच्छी बात है। अपनी कमीज उतारिए?

शर्मा	क्या सर?

रामसुख	अपना शर्ट उतार कर टेबिल पर रखिए।

शर्मा	प्लीज सर, मैंने कहा न इस बार माफ कर दीजिए आइन्दा ऐसी गलती मै कभी नहीं करूगा।

रामसुख मै पूछता हूँ कितने साल की नौकरी हो गई है तुम्हारी?

शर्मा कमीज उतार रहा हूँ सर।

(रिसीवर रखकर शर्ट उतारता है और रिसीवर वापस उठाकर)

शर्ट उतार दिया है सर।

रामसुख अच्छी बात है। अब पैण्ट उतार कर शर्ट के पास रखिए।

शर्मा क्या सर?

रामसुख पैण्ट उतार कर शर्ट के पास रखो।

शर्मा ओह सर, मैंने प्रार्थना की ना, आइन्दा ऐसी गलती कभी नही करूगा।

रामसुख कितने साल की नौकरी हो गई है तुम्हारी?

शर्मा पैण्ट उतार रहा हूं सर।

(कुछ क्षण रुक कर)

पैण्ट उतार दी है सर।

रामसुख मुझे उल्लू बना रहे हो, अधा समझ रखा है तुमने मुझे? जल्दी से पैण्ट उतार कर शर्ट के पास रखो।

शर्मा नही नही सर, इस बार माफ कर दीजिए। दस रोज बाद ही मेरी लड़की की शादी है वरना मै बर्बाद हो जाऊगा।

रामसुख लड़की की शादी मे मुझे इन्वाइट करोगे?

शर्मा पूरे परिवार के साथ पधारिए सर। मै आपका इन्तजार करूगा।

रामसुख लेकिन ध्यान रहे, मैं कोई गिफ्ट-विफ्ट लेकर नही आऊगा।

शर्मा ठीक है सर, आप बान भी मत भरना।

रामसुख अच्छी बात है। अब ऐसा करो, कान पकड़कर दस बार उठक-बैठक लगाइए ओर साथ बोलते जाइए कि आइन्दा ऐसी गलती कभी नही करोगे।

(शर्मा उठक-बैठक लगाने लगता है)

शर्मा यस सर। ऐसी गलती कभी नही करूगा, एक।

रामसुख शाबाश।

शर्मा ऐसी गलती कभी नही करूगा, दो।

रामसुख शाबाश।

शर्मा ऐसी गलती कभी नही करूगा, तीन।

रामसुख शाबाश।

(शर्मा उठक-बैठक लगाता है, तभी बाहर की ओर से बड़े साहब अन्दर आते दिखाई देते है, उनको देखकर रामसुख जल्दी से अन्दर की ओर भाग जाता है। बड़े साहब शर्मा को देखकर)

शर्मा ऐसी गलती कभी नही करूगा, चार।

बड़े साहब शर्माजी ?

शर्मा बड़े साहब आप ? ऐसी गलती कभी नही करूगा, पाच।

बडे साहब लेकिन ये सब क्या हो रहा है ?

शर्मा आप यहा हे सर ? तो मुझे फोन पर कौन डाट रहा था। ऐसी गलती कभी नही करूगा, छ)

बड़े साहब फोन पर मै डाट रहा था ? आपका दिमाग तो ठीक है ना ?

शर्मा मै सच कह रहा हू सर, बिलकुल आप ही की आवाज मे, पहले मुझे शर्ट उतारने को बोला, बाद मे पैण्ट उतारने को कहा और साथ साथ दस बार उठ-बैठ लगाने को बोला। ऐसी गलती कभी नही करूगा, सात।

बडे साहब और आपने उठ-बैठ लगानी शुरू कर दी ?

शर्मा मै क्या करता सर ? आपके आदेश की पालना तो मुझे करनी ही थी। ऐसी गलती कभी नही करूगा, आठ।

बड़े साहब लेकिन ऐसा कौन कर सकता है ? सब लोग ड्यूटी पर आ गए ?

शर्मा यस सर, कोइ एबसैण्ट नही है, ऐसी गलती कभी नही करूगा, नौ।

बड़े साहब वो रामसुखिया कहा है ?

शर्मा अन्दर सफाई कर रहा है सर। ऐसी गलती कभी नही करूगा, दस।

बड़े साहब आप मेरे साथ आइए।

शर्मा चलिए सर।

बड़े साहब ऐसे ही अन्दर चलोगे या कपड़े भी पहनोगे ?

शर्मा सॉरी सर।

(शर्मा जल्दी-जल्दी शर्ट पहनता है। तभी रामसुख प्रवेश करके)

रामसुख — गुड मॉर्निंग सर।

बड़े साहब — अरे रामसुख, अभी फोन किसने किया था?

रामसुख — मेम साहब ने किया होगा सर, क्योंकि वो आज सुबह बोल रही थी कि साहब को जल्दी घर आने को बोल देना और यह भी कह देना कि आज टी वी पर हिन्दी फीचर फिल्म 'जोरू का गुलाम' दिखाई जाएगी।

बड़े साहब — मै पूछ रहा हूँ कि अभी-अभी मेरी आवाज मे फोन किसने किया था?

रामसुख — आपकी आवाज मे? मुझे नही मालूम सर, अगर मुझे मालूम होता तो साले को पकड़कर दो चाटे मारता। आप एक्सचेंज से पता लगाइए ना, हो सकता है वो कमीना वही पकड़ा जाए।

बड़े साहब — ओह यस। मैं चलता हूँ शर्मा जी।

(तेज रफ्तार से बाहर की ओर प्रस्थान। रामसुख शर्मा के पास जाकर)

रामसुख — क्या बात है सर, आज आप कुछ खिण्डे-खिण्डे-से मेरा मतलब है कुछ परेशान-से लग रहे है?

शर्मा — अन्दर जाओ और अपना काम करो।

रामसुख — जा रहा हूँ सर।

(रामसुख का प्रस्थान तथा उसी क्षण रीता प्रवेश करके)

रीता — मै अन्दर आ सकती हू सर।

शर्मा — आओ-आओ मिस रीता प्लीज कम। आओ इधर बैठो।

रीता — धन्यवाद सर।

शर्मा — बोलो मिस रीता, मै आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ।

रीता — सेवा नही मेरी प्रार्थना है सर।

शर्मा — प्रार्थना नही, आदेश कीजिए मिस रीता जी।

रीता — देखिए आप मुझे शर्मिन्दा कर रहे हे सर, मै यह कहने आई थी

शर्मा — आपके साथ किसी ने कोई बदतमीजी की?

रीता — नही-नही सर, ऐसी कोई बात नही है, लेकिन अभी अभी पर्स से कुछ निकालते समय मेरा एक सौ का नोट स्लिप हो गया।

शर्मा — सौ का नोट? आपको पूरा यकीन है कि सौ का नोट ऑफिस मे ही स्लिप हुआ है?

रीता जी हां, मैं आप लोगो को पार्टी देने के लिए घर से पूरे एक हजा रुपये लेकर आई थी।

शर्मा पार्टी देने के लिए, लेकिन पार्टी किसने मांगी थी आपसे?

रीता पार्टी मै अपनी मर्जी से दे रही हूँ सर। मेरी नई नई नौकरी लगी है, इसलिए मेरा फर्ज बनता है।

शर्मा लेकिन इसके लिए पहले मुझे बड़े साहब से पूछना होगा।

रीता लेकिन इसमे बड़े साहब को पूछने की क्या जरूरत है सर? अगर बड़े साहब पार्टी मे आते है तो वैल इन गुड अगर नही आते हैं तो हमारी बला से

शर्मा नही, नही ये तुम क्या कह रही हो मैडम? अपने रिश्तेदार के बारे मे ऐसा नही बोला करते।

रीता रिश्तेदार? किसके रिश्तेदार सर?

शर्मा क्या बड़े साहब आपके नजदीकी रिश्तेदार नही हैं?

रीता कैसी बात कर रहे है सर। बड़े साहब जाति के ब्राह्मण है और मै जाति की लूथरा यानी पजाबी आपको यह किसने बोला कि बड़े साहब मेरे नजदीकी रिश्तेदार है?

शर्मा तो आपकी पोस्टिग मेरा मतलब

रीता मेरा सलैक्शन सीधा आर पी एस सी से हुआ है सर। मै किसी की सिफारिश विफारिश से पोस्टिग करवा कर नही आई हूँ।

शर्मा आई सी

रीता क्यो क्या हुआ सर?

शर्मा कुछ नही मै आपके खोए हुए सौ के नोट के बारे मे सोचने लग गया था।

रीता इसमे इतना परेशान होने की कौनसी बात है सर? मिलता है तो ठीक है न मिले तो खैर सही।

शर्मा मिलेगा कैसे नही अगर ऑफिस मे ही स्लिप हुआ है तो जाएगा कहा? आओ मेरे साथ।

(उसी क्षण रामसुख प्रवेश करके)

रामसुख सर

शर्मा क्या है?

रामसुख वो अमूजणी ।

शर्मा वापिस आकर बतलाऊगा कि अमूजणी क्या होती है।

(शर्मा और रीता का अन्दर प्रस्थान। रामसुख अकेले मे ही बोलता हुआ)

रामसुख सर मेरा सौ का नोट स्लिप हो गया। झूठी कही की। यहा नोट कैसे स्लिप हो सकता है। अगर स्लिप हो भी जाता तो मेरे अलावा वो नोट किसी को मिल नही सकता था। क्योंकि ऑफिस का झाडू तो मै सप्ताह मे एक बार लगाता हूँ।

(शर्मा प्रवेश करके)

शर्मा रामसुख

रामसुख यस सर।

शर्मा तुमने सौ का नोट देखा है ?

रामसुख हमेशा देखता हू सर। बाजार मे, सिनेमा घर मे, बैक मे और अपने कैशियर साहब के पास।

शर्मा अरे बेवकूफ। मेरा मतलब रीता के खोए हुए सौ के नोट से है।

रामसुख धर्म से, वो नोट मैंने नही देखा सर, अगर वो नोट मुझे दिखाई दे जाता तो आज मैं आपको दिखाई नही देता।

शर्मा क्या मतलब ?

रामसुख मै सीधा सिनेमा हॉल मे मिलता। क्योंकि मारवाडी मे कहावत है 'लाध्यो माल खाध्यो'

(करमचन्द प्रवेश करके)

करमचन्द मे आई कम इन सर ?

शर्मा कहिए कैसे पधारना हुआ आपका ?

करमचन्द माफ करना सर, जैसे ही मैंने फर्श पर पडा हुआ अपना रूमाल उठाया, तो यह सौ का नोट मुझे जमीन पर पड़ा मिला।

शर्मा शायद यह नोट रीता का है। वो अभी-अभी कह रही थी कि उसका एक सौ का नोट कही स्लिप हो गया। प्लीज बैठिए करमचन्द जी, मै रीता को अभी बुलाता हूँ।

करमचन्द धन्यवाद सर।

(करमचन्द बैठता है और अमीन प्रवेश करके)

शर्मा अरे आज आप लंच पर घर नही गए अमीन साहब ?

अमीन कुछ जरूरी कागजात निकालने थे सर। हां सर, मै जैसे ही कारबन पेपर उठाने के लिए नीचे की ओर झुका तो यह सौ का नोट मुझे फर्श पर पड़ा हुआ मिला।

शर्मा क्या बकवास कर रहे है आप ?

(करमचन्द उठकर अन्दर जाने लगता है)

शर्मा अरे, अरे ! आप कहा जाने लगे करमचन्दजी। जरा बैठिए। मुझे आपसे कुछ गोपनीय वार्ता करनी है। लाइए खान साहब। रियली यू आर हार्ड ओनेस्ट। रीता आपके बारे मे जरूर कुछ जानना चाहेगी।

अमीन नही, नही ये तो इन्सानी फर्ज है सर।

शर्मा कितने नेक खयाल है आपके ?

अमीन तो मै अन्दर जाऊ सर ? मुझे कुछ जरूरी पेपर्स डिसपैच करने हैं।

शर्मा नही-नही खान साहब, यह कैसे हो सकता है। मै आपको इस ईमानदारी के लिए अभी-अभी रीता देवी से सम्मानित करवाऊगा।

अमीन इस छोटी-सी बात के लिए आप क्यो तकल्लुफ उठा रहे है सर ?

शर्मा ये आपके लिए छोटी-सी बात हो सकती है अमीन साहब। वरना आज इस भ्रष्ट युग मे आप जैसे ईमानदार लोग कहा मिलते है।

अमीन देखिए आप मुझे ख्वामखाह शर्मिन्दा कर रहे है।

शर्मा नही-नही ऐसी कोई बात नही है खान साहब। प्लीज आप बैठिए मैं रीता को अभी बुलाता हूँ।

(शर्मा कॉलबैल बजाता है। रामसुख प्रवेश करके)

रामसुख यस सर ?

शर्मा देखो रामसुख रीता देवी को बोलो कि मैंने उन्हे बुलवाया है।

रामसुख वो जब से आई है तब से बाथरूम मे है सर।

शर्मा क्या बकवास कर रहे हो ?

(प्रवेश करके)

दुलीचन्द मैं अन्दर आ सकता हू सर ?

शर्मा पधारिए पधारिए दुलीचन्द जी कहिए कैसे आना हुआ आपका ?

दुलीचन्द ऐसा है सर। जैसे ही मै गोदरेज की आलमारी को बन्द करने लगा तो एकाएक मेरी नजर जमीन पर पड़े इस सौ के नोट पर पड़ी।

(अमीन व करमचन्द एकाएक कुर्सी से उठते हैं)

शर्मा लाइए-लाइए, दुलीचन्द जी, लगता है रीता ने अरे-अरे आप लोग कहा चल दिए, बैठिए आप लोग, मुझे आपसे जरा काम है। रामसुख

(प्रवेश करके)

रामसुख यस सर।

शर्मा जल्दी से अन्दर से दो-तीन कुर्सियां लेकर आओ।

रामसुख ला रहा हूँ सर। तब तक आप सोफे पर बैठिए ना दुलीचन्द जी।

शर्मा हा-हा आप लोग इधर आइए ना।

(रामसुख का अन्दर प्रस्थान और उसी दौरान चुन्नीलाल, चम्पालाल और चिमनलाल एक साथ प्रवेश करके बोलते है)

हम लोग अन्दर आ सकते हैं सर?

शर्मा पधारिए-पधारिए, चिमनलाल जी आप लोगो का एक साथ कैसे आना हुआ?

(चिमनलाल, चम्पालाल, चुन्नीलाल तीनो एक साथ बोलते हैं)

ऐसा है सर, हम तीनो लोग अपने काम मे व्यस्त थे कि यह सौ का नोट उड़कर हमारे पैरो से टकराया।

शर्मा मै समझ गया। लेकिन सबसे पहले इस नोट को देखा किसने?

चिमन हम तीनो की नजर नोट पर एक साथ ही पड़ी सर। क्यो चम्पालालजी?

चम्पा चिमनलालजी सच कर रहे है सर, क्यो चुन्नीलालजी?

चुन्नीलाल हण्ड्रेड परसैण्ट सही है सर।

शर्मा अच्छी बात है, लेकिन सबसे पहले इस नोट को फर्श पर से उठाया किसने?

(तीनो एक साथ बोलते है)

हम तीनों जनो का हाथ एक ही साथ इस नोट पर पडा सर।

(उसी दौरान अन्दर की ओर से प्रवेश करके)

रीता मैं अन्दर आ सकती हूँ सर ?

शर्मा आओ मैडम, वैसे मैंने रामसुख के साथ आपको बुलवाया भी था। क्यो क्या हुआ ?

रीता मैं बहुत ही शर्मिन्दा हूँ सर।

शर्मा वो किसलिए मैडम ?

रीता ऐसा है सर, गलती से मेरा वो सौ का नोट मेरे पर्स मे ही चिपका रह गया।

(सब लोग एक साथ)

क्या ?

(धीरे-धीरे पूर्ण अन्धकार)

'माफ करना सर'

सुबह वापस लौटा दूंगा

सुबह वापस लौटा दूंगा

'सुबह वापस लौटा दूगा' का प्रदर्शन वैसे तो शहर मे पचासो बार किया जा चुका है लेकिन सर्वप्रथम इसका प्रदर्शन दिनाक 15 4 1969 को राजकीय टॉउन हाल, बीकानेर मे मुख्य अतिथि माननीय एन सी दत्ता (डी आई जी पी) बीकानेर एव माननीय राजसिह निर्माण (R A.S) कॉमरसियल मैनेजर, स्टेट वूलन मिल बीकानेर की अध्यक्षता मे किया गया जिसमे इन कलाकारो ने भाग लिया—

सर्वश्री करीम साहिल	*बेनीप्रसाद*
वेद प्रकाश मिश्रा	*मिश्रीलाल*
सूरजसिह पवार	*हरिया*
जैड एम खान	*मिर्जा साहब*
रजन गौतम	*श्यामलाल*
राम मोहन व्यास	*पेमाराम*
रमेश व्यास	*चोखेलाल*
एस के बिस्सा	*बिस्साजी*
सुश्री पुष्पा जैन	*शारदा*
गीतकार	*श्री मोहम्मद सदीक*
सगीतकार	*श्री खुर्शीद अहमद*
लेखक-निर्देशक	*सूरजसिंह पवार*

सुबह वापस लौटा दूंगा

बेनीप्रसाद का मकान और उसी का एक कमरा। सुबह का समय—हरिया नाम का एक जवान सा नौकर आराम से सौफे पर पड़ा सो रहा है। कमरे के बीचोबीच फर्श पर प्लास्टिक का डिब्बा, प्लास्टिक की बाल्टी, फूलो का गमला और कुत्ते को बाधने की जजीर पड़ी है। अन्दर की ओर से भजन सुनाई पड़ता है। भजन की समाप्ति पर मकान मालिक की आवाज—हरिया हरिया। हरिया चौक कर उठता है। दीवार घड़ी की ओर देखता है और बाहर की ओर निकल जाता है। उसी क्षण बेनीप्रसाद कमरे मे प्रवेश करता है। कमरे मे बिखरा हुआ सामान देखता है और उठाकर कमरे के एक कोने मे रखता है। सौफे पर बैठकर सिगरेट जलाते हुए—

बेनी हरिया हरिया—अरे! ओ हरामखोर। सुबह-सुबह कहा मर गया तू!

(बेनीप्रसाद की पत्नी चाय की ट्रे के साथ प्रवेश करके)

शारदा सुबह-सुबह पागलो की तरह क्यो चिल्ला रहे हो? क्या कहना है हरिया से?

बेनी वो हरामखोर कहा मरा है?

शारदा वो मरा नही, अभी जिन्दा है।

बेनी अगर वो जिन्दा है तो सुबह-सुबह कहा गया है। मै उसे एक घन्टे से बाग लगा रहा हू।

शारदा बाग मुर्गा लगाता है। इन्सान नही। मैने उसे बाजार भेजा है।

बेनी अगर उसे बाजार ही भेजना था तो मुझे भी पूछ लिया होता। उससे काम लेने का मुझे हक है या नही?

(चाय का कप पकड़ाते हुए)

शारदा कल तो पूरी तनख्वाह का कुण्डा करके आए हो। अब क्या मगवाना बाकी रह गया?

बेनी लेकिन मेरी सिगरेट कहा लाया मै, और न तुमने मगवा कर दी,

अगर आज्ञा प्रदान करे तो मैं सिगरेट पीना भी छोड़ दू। तुम्हारे लिए दो रेशमी साड़ियो का कोटा बढ़ जाएगा।

शारदा नही नही, तुम सिगरेट पीना क्यो छोड़ो। मैं ही छोड़ देती हू साड़ी पहनना। बनवा दो मेरे लिए भी पेन्ट और शर्ट।

बेनी देखो शारदा! तुम हर बात का उल्टा मतलब निकाल लेती हो। मेरा रोना मेरी चारमीनार सिगरेट का है।

शारदा तो कौनसी सिगरेट का अकाल पड़ा जा रहा है जो इस तरह बौखलाए जा रहे हो! पचास तरह की सिगरेट मिलती है बाजार मे। जितनी चाहो उतनी मगवा दूगी। अगर मरना ही चाहते हो तो चौखे काम करके मरो। जहर पीकर क्यो मर रहे हो?

बेनी अरे! मरे मेरे दुश्मन! मै तो यू ही मूग दलूगा।

शारदा लेकिन चक्की किस के यहा है जो मूग दलोगे। अगर सिगरेट की इतनी ही भूख है तो तम्बाकू का डिपो खुलवा दू।

बेनी कभी बाप दादाओं ने खोला है डिपो, जो मुझे ताना मार रही हो?

शारदा देखोजी! सुबह सुबह मेरे बाप दादाओं तक गए तो ठीक नही रहेगा।

बेनी तो ठीक है मै सुबह नहीं साय को चला जाऊगा।

शारदा चला जाऊगा, अरे वो तुम मर भी जाओ तो तुम्हारी बैठक तक में आने वाले नही है।

बेनी तो मैं कौनसा उनके उठावने मे शामिल होने वाला हूँ। दस वर्ष हो चुके हैं हमारी शादी को, क्यो? एक बार भी बुलाया है उन भिखमगो ने? अब बोलती क्यो नही? गोदरेज का ताला क्यो लग गया जुबान पर। बोल दो चाबी खो गई?

शारदा ताला लगाया ही किसने था जो चाबी खो जाती। तुम तो घर जमाई बनने को बड़ा मुह धो रहे थे लेकिन मैने ही मम्मी डैडी को मना कर दिया था कि क्यो उड़ता तीर

(बीच मे ही चिल्लाकर)

बेनी शारदा

शारदा हा हा बोलो बोलो, चुप क्यो हो गए। अगर गले मे टोनसिल्स हो गए है तो बुलाऊ डा जी पी गुप्ता को।

बेनी मै कहता हू भाषण देना बद करो, जाओ और किचन को हैण्डल करो। फिजूल मे स्टोव का तेल जल रहा है। जानती हो एक लीटर मिट्टी के तेल का कितना लगने लगा है। अरे! तुम्हे क्या पता,

लाली-लिपिस्टिक थोड़े ही है। जब देखो, सड़ाए रहती हो अप्सराओं की तरह।

(बिगड़ते हुए)

शारदा देखो जी। अब ज्यादा फूक मे मत आइए। अगर मैने पोल खोलनी शुरू कर दी तो ?

(बीच मे ही)

बेनी अब तुम खोलने पर ही उतारू हो गई हो तो अन्दर जाकर दरवाजा क्यो नही खोल देती, गर्मी के मारे बुरा हाल हो रहा है।

शारदा जनवरी के महीने मे गर्मी लग रही है तो मई-जून मे साइबेरिया जाओगे ?

बेनी अब तुम अन्दर जा रही हो या मै तुम्हारा पासपोर्ट बनवाऊ।

शारदा मर गए मारने वाले।

बेनी क्या बोला ?

शारदा बोल रही हू यह प्रदर्शनी क्यो लगा रखी है ? कहा से इकट्ठा किया है यह अटाला ?

(बिगड़ते हुए)

बेनी जहन्नुम से।

शारदा लेकिन तुम वहा कब गए थे।

बेनी अगर चला जाता तो वापस यहा झख मारने को आता ? नो डाउट, यहा से मै वहा बहुत ईजी रहता।

(हरिया का प्रवेश)

शारदा आ गया हरिया।

हरिया दूध की दूकान पर बहुत भीड़ थी मेमसाहब।

(बीच मे ही)

बेनी अरे। ओ हरामखोर। मेरी सिगरेट लाया या नही ?

हरिया सिगरेट लाने का आपने मुझे बोला ही कब था बाबूजी।

बेनी अरे ओ अक्ल के दुश्मन। जब भगवान के यहा अक्ल बट रही थी तो तू कहा मर गया था उस वक्त ?

हरिया मै तो आपके साथ ही था बाबूजी।

बेनी क्या ?

हरिया बगैर पूछे मै कही जाता ही नही। पूछ लीजिए मेमसाब से।

शारदा ठीक ही कह रहा है हरिया। मै पूछ रही हू कि तुम कहा थे उस वक्त ?

बेनी ज्यादा नौकरो को मुह लगाना अच्छी बात नही है शारदा, वरना..

(बीच मे ही)

शारदा वरना गला घोटोगे या फासी पर चढ़ाओगे ?

(हरिया दीवार की तरफ मुह करके खड़ा हो जाता है)

बेनी देखो शारदा! तुम अपनी चमड़ी के बाहर होकर फुदक रही हो, अगर मुझे गुस्सा आ गया तो मै चमड़ी उधेड़ कर, जापानी डिजाइन की जूतिया बना डालूगा।

शारदा लगता है आपके बाप दादाओं ने जिन्दगी भर मोचियो का धन्धा ही किया है।

(बिगड़ते हुए)

बेनी शारदा! सच कह रहा हू। मुझे गुस्सा आ जाने के बाद मै अपने बाप का भी नही।

शारदा ठीक कहते हो, वैसे तुम्हारे गुस्से को मैने बहुत अच्छी तरह से देख रखा है। भूल गए पडौसी वाला झगड़ा। उस रोज क्या हो गया था तुम्हारे गुस्से को! वो कमीना बेमतलब जानवर की तरह तुमको पीट जा रहा था और तुम चोर की तरह पिटते रहे। वापस थप्पड़ तो क्या एक शब्द नही बोला नही गया तुमसे !

बेनी अरे! मै उस नीच के बराबर नीच थोड़े ही बन जाता। दुनिया क्या कहती। मोहल्ले वाले क्या कहते। वरना नो डाउट, तोड़ कर रख देता तीन जगह से।

शारदा बस-बस रहने दो अपनी हेकड़ी। मारपीट तुम्हारे साथ हुई और घर से निकलना मेरा मुश्किल हो गया। जब भी घर के बाहर निकलती हू पूरा मोहल्ला मुझे घूरने लगता है।

बेनी अरी बेवकूफ! वो लोग तुम्हें इसलिए घूरते हैं कि देखो इस चुड़ैल को आई मीन इस औरत को, कितना सभ्य पुरुष प्राप्त हुआ है इसे। कितनी भाग्यशाली है ये औरत।

शारदा आहsss अपने मरे दिल को तसल्ली देने के लिए अच्छा बहाना है। मेरी मानो और चूड़ियां पहन कर घर मे ..

(बीच मे ही)

बेनी — सोए हुए साप को मत जगाओ शारदा, वरना मै किसी का गुस्सा किसी पर उतार दूगा। समझ गई ?

शारदा — समझ गई! अच्छा होता तुम्हारे पल्ले न बधकर कुआरी रहती या फिर, मीरा बन जाती।

बेनी — तो मुझे कौनसा कृष्ण बनना नही आता। मीरा, बन जाती। अरे! क्यो लगाए थे फेरे ? जब तो फुदक रही थी फटाफट-फटाफट-सात फेरो की जगह कितने फेरे खा गई। मै आज तक नही गिन पाया।

शारदा — मैंने फेरे ही खाए थे। लग्न मण्डप मे बैठे-बैठे चुरा चुरा कर लड्डू तो नही खाए थे।

(शारदा का प्रस्थान)

बेनी — अरे! ओ हरामखोर। तू यहा खड़ा-खड़ा क्या तमाशा देख रहा है ?

हरिया — जरा मुह पर काबू रखिए बाबूजी। मैंने आप लोगो को झगड़ते सुना जरूर है लेकिन देखा बिल्कुल नही।

बेनी — क्या मतलब ?

हरिया — मतलब साफ है बाबूजी। चौबीसो घटे आप मुझे हरामखोर कहते रहते है। मेरा नाम हरिया है। हरामखोर नही। अण्डरस्टेन्ड।

बेनी — अरे ओ! सेक्सपीयर की औलाद। चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी होकर तू मेरे सामने अग्रेजी बोल रहा है ? माईसेल्फ इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल यू नो हरामखोर का ट्रासफर करके इमीडियटली कपूरीसर जॉयन करवा दूगा।

हरिया — कपूरीसर ? जहा कन्हैयालाल सोनी रहता है ?

बेनी — हाँ, बिल्कुल वही। हरामखोर को लूणकरनसर से अठारह किलोमीटर रेते मे पैदल चलना पड़ेगा।

हरिया — ट्रासफर पर अभी बेन लगा हुआ है बाबूजी। जरा अखबार पढ़ने की आदत डालिए वरना यही बैठे रह जाओगे और दुनिया कही की कही पहुच जाएगी।

बेनी — क्या बोला हरामखोर। जरा दुबारा बोलना!

हरिया — मै सिर्फ एक बार बोलता हूँ। मेरा नाम हरिया है। हरामखोर नही ?

बेनी — क्या बोला हरामखोर ?

हरिया — देखिए बाबूजी आपने मेरे मना करने के बाद फिर मुझे हरामखोर कहा।

बेनी हा, हा, हरामखोर, हरामखोर, हरामखोर।

हरिया आपने मुझे फिर हरामखोर बोला? अगर आइन्दा हरामखोर बोल दिया तो ।

(बिगड़ते हुए)

बेनी तो।

हरिया तो।

बेनी तो।

हरिया तो।

बेनी तो।

हरिया तो चल दरिया मे डूब जाए।

(चिल्लाते स्वर मे)

बेनी चुप।

(कुछ क्षण खामोशी के बाद)

हरिया बाबूजी।

बेनी हा जी।

हरिया एक सिगरेट जलाइएगा। मूड ऑफ कर दिया आपने।

बेनी मैंने मूड ऑफ कर दिया?

हरिया नही, मेरे बापूजी ने।

बेनी वो कैसे?

हरिया मुझे पैदा करके।

(बेनीप्रसाद हसता है)

हरिया क्या हुआ बाबूजी?

बेनी अरे बेवकूफ! पैदा औरत करती है मर्द नही।

हरिया तो लोगबाग यह क्यो कहते है बाबूजी कि बधाई हो शर्माजी! आपके लड़का हुआ है

(हसते हुए)

बेनी हरिया!

हरिया हा बाबूजी।

बेनी हरिया।

हरिया हां बाबूजी।

बेनी हरिया।

(पास आते हुए)

हरिया हां बाबूजी, हा बाबूजी, हा बाबूजी।

बेनी तो चिल्ला क्यो रहा है। मै बहरा नही हू।

हरिया तो आप मुझे बार-बार हरिया-हरिया क्यो कहे जा रहे है?

(उसी क्षण दरवाजे पर दस्तक)

बेनी इसलिए कि बाहर जाकर देख, कौन गधा फाटक तोड़ रहा है?

(तपाक से बोलता है)

हरिया शायद आपके पिताजी है।

बेनी मारे गए गुलफाम। देख हरिया! तू बाहर जाकर पिताजी को बोल दे कि मैं घर पर नही हू। सिनेमा देखने गया हू।

(कुछ क्षण रुककर)

हरिया अभी बोल देता हू बाबूजी, लेकिन अभी पिक्चर का कौनसा टाइम है बाबूजी?

बेनी बोल देना विकलागो के लिए कोई चैरिटी शो है।

हरिया अभी बोल आता हू बाबूजी।

(हरिया बाहर की ओर जाकर उसी क्षण वापस लौट आता है)

बेनी क्या हुआ हरिया?

हरिया वो ही हुआ बाबूजी, जिस बात का डर था।

बेनी क्या मतलब?

हरिया हा बाबूजी। आपके पिताजी बाहर भौहे ताने खड़े थे। रावण की तरह।

बेनी रावण की तरह। यह मजाल उनकी? मेरे घर आकर मेरे पर दादागिरी। मै अभी देखता हूँ।

(बेनीप्रसाद जाने लगता है—हरिया पकड़ते हुए)

हरिया रहने भी दो बाबूजी। आप के पिताजी घर मे तो घुसे ही नही। बाहर से ही वापस चले गए क्योकि मैने उन्हे बोल दिया कि बेनीप्रसाद जी ने बोला है कि मै घर पर नही हू।

बेनी — अरे ओ बीरबल की औलाद, तेरे को कितनी बार बोला है कि तू हर जगह अपना विकसित भेजा इस्तेमाल मत किया कर।

हरिया — बाबूजी आपको यह किसने बतलाया है कि मेरे पिताजी का नाम बीरबल है।

बेनी — क्या बोला तुमने? बीरबल और तेरे पिताजी का नाम। हो ही नही सकता। अगर इस बात का बीरबल को पता लग गया तो वो आत्महत्या कर लेगा और अकबर के आदमी तेरे को पकड़कर दिल्ली ले जाएगे और जिन्दा दीवार मे चिनवा देंगे।

हरिया — परवाह नही एक दिन तो सबको मरना ही है लेकिन आप एक बात बतलाइए बाबूजी

बेनी — क्या है?

हरिया — जब कभी आपके परम पूज्य पिताजी हमारे यहा आगमन करते है तो आप छुप क्यो हो जाते है?

बेनी — अरे ओ बेवकूफ! पिताजी जब भी यहा आते हैं मै यह अटाला यहा लिए ही बैठा रहता हू।

(पास बैठते हुए)

हरिया — बाबूजी।

बेनी — हा जी।

हरिया — आखिर इतना सारा अटाला आप कहा से इकट्ठा करते हैं?

(पकड़कर दूर फेंकते हुए)

बेनी — मै इकट्ठा करता हू। कितनी बार कह चुका हू कि तू रात को घोड़े बेचकर मत सोया कर।

हरिया — मै रात को सोता ही नही बाबूजी। बैठे-बैठे नीद लेता हू और पूरे मकान का ध्यान भी रखता हू।

(वापस पास बैठ जाता है)

बेनी — क्या ध्यान रखता है? बतला, कहा से आता है यह सारा सामान और कौन रख जाता है यह सारा सामान?

(पकड़ कर दूर फेंकते हुए)

हरिया — यही बात मै आपसे पूछना चाहता हू बाबूजी कि कहा से आता है यह सारा सामान और कौन रख जाता है।

(बीच मे ही)

बेनी किस-किस को बतलाऊ क्या क्या बतलाऊ।

हरिया क्या फिल्मी धुन मे गाया है बाबूजी।

बेनी मैने गाना गाया है?

हरिया एक ऐसा गाना भी है बाबूजी। किस-किस को बताऊ। किस किस को सुनाऊ अपनी प्रेम कहानिया।

(बिगड़ते हुए)

बेनी चुप।

(दरवाजे पर दस्तक)

बाहर जा कर के देख। कौन बदतमीज किस बदतमीज से मिलने आया है।

हरिया मेरे खयाल से आपके पिताजी सिनेमा हॉल सम्भाल कर वापस आ गए है।

बेनी और मुझे ऐसा लग रहा है कि इस बार मेरे नही, तेरे अब्बाजी आए है।

(लम्बी हसी हसकर)

हरिया मुझ गरीब के साथ क्यो मजाक कर रहे है बाबूजी मेरे पिताजी को मरे हुए पूरे पचपन वर्ष हो चुके हैं।

बेनी और मेरे पिताजी को एक सौ दस—आई एम सॉरी, बाहर जाकर देख किसके पिताजी है।

हरिया लगता है दोनो साथ-साथ आए है।

बेनी शटअप—तू बाहर जाकर देखता है या नही।

(हरिया बाहर जाता है और अपने साथ चार आदमियो को लेकर प्रवेश करता है और एक लाइन मे खड़ा हो जाता है। बेनीप्रसाद चिल्लाते स्वर मे—

बेनी हरिया

हरिया हा बाबूजी।

बेनी कौन है ये लोग?

हरिया ये लोग बाहर धूप मे खड़े थे बाबूजी।

बेनी तो तेरे को यहा पेड़ो की छाया नजर आ रही है?

हरिया नही तो बाबूजी।

(मिर्जा के पास जाकर)

बेनी आपकी तारीफ?

(बीच मे ही)

हरिया जितनी की जाय, उतनी ही कम है बाबूजी।

(बिगड़ते हुए)

बेनी तू बीच मे टाग मत अड़ा। मै मिर्जा साहब से पूछ रहा हू।

मिर्जा खाकसार को सुल्तान मिर्जा कहते है। मै पिछले कई वर्षों से आपका किरायेदार हू।

बेनी किराया लेकर आए है आप?

मिर्जा हमारे यहा से पहली तारीख को ही किराया पहुचा दिया जाता है आपको।

बेनी किसके साथ भेजते है किराया?

मिर्जा मेरी बेगम साहिबा खुद किराया जमा करवाने आती है।

बेनी ओह! समझा। वो आपकी बेगम साहिबा है?

मिर्जा *जी हा, अल्लाह के फ़जल से*

बेनी बहुत खूबसूरत है। सच कहता हू मुझे बहुत पसन्द है।

मिर्जा क्या बोला आपने?

बेनी मेरा मतलब

(बीच मे ही)

मिर्जा वो बुर्का पहनती है। आपने उसे कहा देख लिया?

बेनी मेरी धर्मपत्नी बोल रही थी कि आप कहे तो मै उसे अपनी धर्म बहिन बना लू। मैने कहा, मुझे क्या ऐतराज हो सकता है, फिर शुभ काम मे देरी कैसी। खैर! आप सुनाइए आप का कैसे आना हुआ?

मिर्जा ऐसा है जनाब, रात को गले की जजीर बाहर रह गई थी।

(बिगड़ते हुए)

बेनी तो आपने मुझे चोर समझ रखा है। अगर ऐसा था तो आप पुलिस को साथ लेकर आते?

मिर्जा मेरा मतलब था कि रात को कुत्ते को बान्धने की जजीर, मै बाहर भूल गया था।

(बीच मे ही)

हरिया केस कोम्प्लीकेटिड है बाबूजी। आप अन्दर जाकर आराम करे, तफ्तीस मै करता हू।

(बेनीप्रसाद का अन्दर प्रस्थान)

हा जनाब। फरमाइए क्या तकलीफ है आपको ?

मिर्जा मैं बेनीप्रसादजी को बतला चुका हूं।

हरिया दुबारा बतलाने मे चुंगी कट रही है आपकी ?

मिर्जा आप कुछ भी समझ लीजिए।

हरिया ऐसा है मिर्जा साहब। आप अपने गडक को, आई मीन कुत्ते को, कमरे के अन्दर बद करके सोते है। जबकि वो बाहर बाधने की चीज है। अन्दर गन्दगी फैलाने की नही।

मिर्जा तुम्हारा कहना ठीक है किबला—मगर मेरे पास जो कुछ भी मालामात है उसकी हिफाजत करने के लिए मुझे कुत्ते को अन्दर बाधना पड़ता है।

हरिया यू आर रॉइट मिर्जा साहब। वैसे आप किस महकमे मे मुलाजिम हैं ?

मिर्जा मै कस्टम विभाग मे कान्सटेबल था लेकिन गबन के एक आरोप मे मुझे कम्पलसरी रिटायरमेन्ट दे दिया गया।

हरिया कान्ग्रेचुलेशन। तो आप घर बैठे उसी गबन की हुई राशि को पचाने मे लगे हुए हैं ?

मिर्जा ऐसी तो कोई बात नही है मगर मेरी छोटी वाली बेगम साहिबा कई दिनो से बीमार चल रही है।

हरिया छोटी वाली बेगम से मतलब, आपने दो शादिया कर रखी है ?

मिर्जा जी नही। अल्लाह के फजल से चार शादिया की है मैने और यह हमारे मजहब मे छूट है।

हरिया अगर हमारे धर्म मे छूट होती तो मैं लाइन लगा देता।

मिर्जा क्या फरमाया ?

हरिया मै कह रहा था चारो बेगमे जिन्दा है ?

मिर्जा जी नही। पहली सन् सत्तावन मे मर गई। दूसरी जवान होते ही जल गई। तीसरी मेरे बड़े भाई के साथ भाग गई और चौथी, कई दिनो से बीमार चल रही है।

हरिया यू आर लकी मियां मिर्जा। वैसे इलाज किसका चल रहा है ?

मिर्ज़ा फिलहाल तो मेरा ही चल रहा है।

हरिया पाचवी कहा तलाश कर रखी है आपने?

मिर्जा क्या फरमाया घटियारामजी।

हरिया घटियारामजी नही हरियारामजी बोलिएगा।

मिर्जा गुस्ताखी माफ हो हरियारामजी।

हरिया ऐसा है, आप दस बार मेरा नाम लगातार बोलिए।

मिर्जा मै समझा नही?

हरिया दस बार मेरा नाम बराबर बोलने से आपसे दुबारा गलती नही होगी। समझ गए आप?

मिर्जा अब समझा।

हरिया समझ गए है तो देर किस बात की है बोलिए हरियारामजी।

मिर्जा हरियारामजी।

हरिया शाबाश! एक।

मिर्जा हरियारामजी।

हरिया दो।

मिर्जा हरियारामजी।

हरिया तीन। अरे! तुम लोग चुपचाप क्यो खड़े हो? तुम लोग भी मिर्जा साहब के साथ-साथ बोलिए ताकि—

(बीच मे ही चारो आदमी साथ बोलते है)

मिर्जा हरियारामजी-हरियारामजी-हरियारामजी

हरिया शाबाश! अब घर जाकर एक बार और दोहरा लेना (चीखते स्वर मे) और मिर्जा साहब आप भी जाइए और ले जाइए अपने गले की जजीर।

मिर्जा शुक्रिया! क्या कर्कश आवाज पाई है तुमने?

(मिर्जा का बाहर की ओर प्रस्थान और उसी क्षण बेनीप्रसाद का प्रवेश। पेमाराम एकाएक हसने लगता है)

बेनी पेमारामजी।

(हसते हुए)

पेमाराम बेनीप्रसादजी।

बेनी पेमारामजी।

पेमाराम बेनीप्रसादजी।

(चिल्लाकर)

बेनी हरियारामजी।

हरिया बेनीप्रसादजी।

(बिगड़ते हुए)

बेनी क्या हो गया है तुम लोगो को?

(पेमाराम के पास जाकर)

हरिया पेमारामजी कैसे आना हुआ है आपका? बाबूजी पूछ रहे हैं।

पेमा मैं बहुत शर्मिन्दा हू बेनीप्रसादजी।

बेनी इसलिए पूरी बत्तीसी दिखला रहे है आप?

पेमा भविष्य मे यह भूल कभी नही होगी।

(बीच मे ही)

हरिया अगर हो गई तो?

पेमा मैं पहले से शर्मिन्दा हू।

हरिया किसलिए शर्मिन्दा है आप?

पेमा मैं तीन महीनो से आपका किराया नही दे पा रहा हू।

(बीच मे ही)

बेनी अभी आप किराया लेकर आए हैं?

पेमा अभी?

बेनी जी हा, अभी आप कितने दिनो का किराया लेकर आए है?

पेमा आज अट्ठारह तारीख है और अट्ठारह तारीख को मुझे तनख्वाह थोड़े ही मिलती है।

(बीच मे ही)

हरिया तो सुबह-सुबह यहा मक्खिया क्यो भिनभिना रहे है आप?

पेमा मैं जरा चाय की पत्ती लेने आया था।

हरिया क्यो? आज भारत बद है?

पेमा क्या फरमाया आपने?

हरिया मे पूछ रहा हू कि चीनी है घर पर?

पेमा थोड़ी वो भी दे दीजिएगा।

हरिया और दूध ?

पेमा पड़ौसी से ले आऊगा, सुना है उसके यहा बकरी कल ही ब्याही है।

हरिया बहुत बहुत बधाई हो।

(पेमाराम से दोनो हाथ मिलाता है)

पेमा आपको भी

(बीच मे ही)

बेनी पेमारामजी, आप मेरा मकान कब खाली कर रहे है ?

पेमा जब भी आप कह देगे मै उसी वक्त आपका मकान खाली कर दूगा।

बेनी मै तो कह रहा हू कि आप मेरा मकान आज और अभी खाली कर दीजिए।

पेमा अगर दीपावली के बाद खाली कर दू तो ?

(बीच मे ही)

हरिया क्यो दीपावली पर जन्मदिन है आपका ?

पेमा नही। मैने सोचा उस मौके पर मकान की मरम्मत तथा व्हाइटवास हो जाती।

हरिया अच्छी बात है आप पधारिए। हो गया हमारा मकान खाली।

पेमा धन्यवाद (जाते-जाते) नमस्कार।

हरिया नमस्कार-धमस्कार-चमत्कार।

(पेमाराम का बाहर की ओर प्रस्थान)

बेनी तुमने उसको मकान खाली हो गया क्यो बोला ?

हरिया इसलिए बाबूजी कि लड़की ब्याह के बाद पराई हो जाती है।

बेनी क्या मतलब।

हरिया मतलब साफ है बाबूजी। आदमी को अपनी जिन्दगी मे मकान कभी नहीं बनाना चाहिए।

बेनी क्यो ?

हरिया अगर मकान बना भी ले तो उसे किराए पर नही चढ़ाना चाहिए।

बेनी किसलिए।

हरिया वो इसलिए कि करोड़ो लोग फुटपाथ पर पड़े पड़े गुजारा करते है और आप मकान का किराया कमाते है।

बेनी मै क्या कमाता हूं। पूरी दुनिया किराया कमाती है।

हरिया एक बात बतलाओ बाबूजी ?

बेनी दो पूछ ले। मेरा क्या घिसता है।

हरिया ऐसा है बाबूजी अगर किसी आदमी के सात लड़के है और उनमे छ लड़के कमाते है और एक लड़का बेकार है तो आप उस लड़के को घर से निकाल देगे?

बेनी ऐसा कैसे हो सकता है?

हरिया बस यही समझदारी है।

बेनी क्या मतलब?

हरिया आपके सारे किराएदार आपको बराबर किराया देते रहते है अगर पेमाराम किराया नही देता तो क्या फर्क पड़ता है आपके?

बेनी फर्क कैसे नही पड़ता। वो मेरे मकान मे रहता है। मेरे मकान मे तोड़-फोड़ करता है।

हरिया आपके मकान मे पेमारामजी किराए पर रहते है मै मानता हू। लेकिन एक बात बतलाओ बाबूजी?

बेनी दो पूछ ले, मेरा क्या घिसता है।

हरिया ऐसा है बाबूजी! जो आदमी चाय की पत्ती पड़ौसियो से उधार मागता फिर रहा है उस व्यक्ति से आप मकान का किराया वसूल करने की सोच रहे है? बड़े बेवकूफ है आप।

(बिगड़ते हुए)

बेनी क्या बोला तुमने?

हरिया मेरा मतलब बड़ा बेवकूफ है वो। जो गर्मी की मौसम मे चाय की पत्ती मागता फिरता है। उसे तो लस्सी के लिए दही मागना चाहिए।

(पास जाकर)

बेनी श्यामलालजी

श्यामलाल शु छ।

बेनी श्यामलालजी

श्यामलाल शु छ देवीनु जै

हरिया गुजराती बोल रहा है बाबूजी।

बेनी जल्दी से पट्टी कर इसे यहा से।

हरिया श्यामलाल जी, आप भी चाय की पत्ती लेने आए हो?

श्यामलाल मै बुधवार को नागौर गया था।

हरिया ओफ ओ! मै पूछ रहा हू चीनी है घर मे?

श्यामलाल रात को बैगन की सब्जी बनाई थी। बढ़िया बनी।

हरिया — लेकिन बैगन की सब्जी खाने कौन आया था?

श्यामलाल — आज ट्रक वालो की हड़ताल है।

(हाथ फैलाकर)

हरिया — हे भगवान—मेरी लाज रखना।

श्यामलाल — लाजवन्ती के लड़का हुआ है।

हरिया — अरे! कौन लाजवन्ती? कहां है आप?

बेनी — क्या बोल रहा है ये?

हरिया — ये पूरी तैयारी कर के आया है बाबूजी। आप ही निपट लीजिए।

बेनी — श्यामलालजी! आप भी ले जाइए अपना गमला।

श्यामलाल — कमला? कहा है कमला? मैं तो उसे घर छोड़ कर आया था।

(बीच मे ही गमला उठाकर हाथो मे पकड़ाते हुए)

हरिया — कमला नही, श्यामलालजी! यह रहा आपका गमला।

श्यामलाल — ओह—गमला (जाते-जाते) कल रोशनी दिन भर नहीं थी।

हरिया — फूटे तुम्हारे। हमारे यहा तो रात भर थी।

(गमला लेकर बाहर निकल जाता है)

(हरिया बिस्सा जी के पास जाकर)

हरिया — आप कब से बीमार है अनामिकाजी?

बिस्सा — मै तो श्यामलाल जी के साथ वैसे ही आ गया था।

हरिया — टेलीविजन ठीक है आपकी?

बिस्सा — मै समझा नही।

हरिया — श्यामलालजी कब के खिशक गए यहा से।

बिस्सा — लेकिन कहा? मे तो उनका घर भी नही जानता? अब मै उनको कहा ढूढूगा।

हरिया — उन्हे ढूढने की जरूरत नही पड़ेगी आपको क्योंकि बाहर निकलते ही दाए-बाए वैसे के वैसे कई मिल जाएँगे।

बिस्सा — धन्यवाद, माफ करना मैं परदेशी हू।

हरिया — मै देशी हू।

बिस्सा — देशी घी।

हरिया — अरे! फूट

(बिस्सा बाहर निकल जाता है)

बेनी हरिया।

हरिया हा बाबूजी।

बेनी तेरे को कितनी बार बोला है कि जब दो बुद्धिजीवी आपस मे बात कर रहे हो तो तू बीच मे टाग मत अड़ाया कर।

(लम्बी हंसी हसते हुए)

हरिया बुद्धिजीवी।

बेनी क्या हुआ, क्यो पेमारामजी की तरह बतीसी दिखला रहा है?

हरिया बुद्धिजीवी

बेनी तो मैं तेरे को बेवकूफ नजर आ रहा हूं?

(एक आदमी हाथ मे एक दूध का कटोरा लेकर प्रवेश करता है)

हरिया अरे! अरे! कटी पतंग की तरह कहां लिप्सी खा रहे है आप?

चौखेलाल मै चौखेलाल चारण। आप का किराएदार।

(बीच मे ही)

बेनी आप मेरा मकान कब खाली कर रहे हैं?

चौखे जब आप कह दे बेनीप्रसादजी।

बेनी मैं अभी मकान खाली करने को कह रहा हू।

चौखे तो आप समझ लीजिए कि मैंने आपका मकान खाली कर दिया। सपोज यह रहा आपका मकान और यह रही आपके मकान की चाबी।

बेनी यह बात तो आप काफी समय से बोल रहे हैं?

चौखे लेकिन मै इस बार आपकी तरह सिरियसली कह रहा हू।

बेनी फरमाइए! अभी कैसे आना हुआ आपका?

चौखे मै आपके लिए थोड़ा-सा कच्चा दूध लेकर आया हू।

बेनी कच्चा दूध? और मेरे लिए?

चौखे बस थोड़ा-सा है बेनीप्रसाद जी।

बेनी कच्चा दूध किस खुशी मे लेकर आए हैं आप?

चौखे वैसे ही आज नागपचमी थी तो मैंने सोचा

(बिगड़ते हुए)

बेनी तो आपने मुझे साप समझ रखा है?

चौखे ऐसी तो कोई बात नही है बेनीप्रसादजी, मैंने सोचा रोजमर्रा की लड़ाई से

(बीच मे ही चिल्लाकर)

बेनी एक तो आप समय पर किराया नही देते और दूसरे आए दिन मकान मे तोड़-फोड़ करते रहते है। आप ऐसा कीजिए, फौरन मेरा मकान खाली कर दीजिए।

चौबे कर दूगा बेनीप्रसादजी लेकिन पहले आप यह दूध तो पी लीजिए। सब ठीक हो जाएगा।

बेनी मैं कहता हू दफा हो जाइए यहा से?

चौबे जाना तो एक दिन सब को है बेनीप्रसादजी लेकिन मैं अब इस दूध को लिए लिए कहा भटकूगा। कृपया पी लीजिए, बस थोड़ा-सा है।

(बीच मे ही)

हरिया अब ये ले ही आया है तो पी लीजिए ना बाबूजी। क्या फर्क पड़ता है आपके?

(बिगड़ते हुए)

बेनी शटअप—

चौबे प्लीज बेनीप्रसादजी। मै आपके आगे हाथ जोड़ता हू दूध पी लीजिए ना।

(बिगडते हुए)

बेनी कमाल है। तुम दूध लाए हो या जहर। हजार बार मना करने के बावजूद, बार बार दूध पीने के लिए आग्रह करते जा रहे हो।

चौबे नही-नही, दूध जहर नही अमृत होता है बेनीप्रसादजी।

(बीच मे ही)

हरिया आज त्यौहार का दिन है बाबूजी, प्लीज पी लीजिए। मै आपकी मदद करता हू।

(हरिया बेनीप्रसाद के दानो हाथ पकड़ कर)

अब जल्दी कीजिए चौबेलालजी मुहूर्त टले जा रहा है।

(दोना जने मिलकर बेनीप्रसाद को दूध पिला देते हैं)

(बेनीप्रसाद मुह पौंछकर चिल्लाता है)

बेनी आई से गेटआउट।

चौबे धन्यवाद।

(चौबे लात जाते-जाते)

थैंक्यू हरियारामजी।

(हरिया मुस्करा कर दो अंगुलियां हिलाता है और हसने लगता है)

बेनी क्यो हंस रहा है बदतमीज की तरह?

हरिया काश! यह त्यौहार रोजाना आता रहे, बाबूजी।

बेनी क्या मतलब?

हरिया मतलब! मैं हैवान हो गया हू बाबूजी।

बेनी हैवान हो गया है?

हरिया हैवान नही बाबूजी *(तेज बोलते हुए)* हैरान।

बेनी तो चिल्ला क्यो रहा है? मै बहरा नही हू। किसलिए हैरान हो गया है?

हरिया रोज सवेरे अपने यहां यह सामान इकट्ठा हो जाता है और रोज सवेरे ये लोग आते है और सामान उठाकर ले जाते है। आखिर ये रामलीला क्या है। मेरी समझ मे नही आने की!

बेनी अरे तेरे बाप-दादा ने कभी रामलीला देखी हो तब ना।

हरिया देखिए बाबूजी, आपको हजार बार कहा है कि आप मेरे बाप-दादा तक न जाया करें।

बेनी क्यो? जाऊंगा। तू कौन होता है मुझे मना करने वाला?

हरिया जाइए, लेकिन वापस आना मुश्किल हो जाएगा।

बेनी क्या मतलब?

हरिया मतलब साफ है बाबूजी—मेरा बाप और मेरा दादा बत्तीस साल पहले दोनो एक साथ एक सड़क दुर्घटना मे मारे गए थे।

बेनी तो तू जिन्दा कैसे रह गया?

हरिया उस वक्त मै अपनी मम्मी के पेट मे था।

बेनी काश! तू भी उनके साथ होता।

(बिगड़ कर)

हरिया बाबूजी

बेनी हा जी।

हरिया मैं आपको इतना बुरा लगता हू।

बेनी तो साफ-साफ क्यो नही कहता, पहेलियां क्यो बुझा रहा है?

हरिया तो आप बतलाते क्यो नही? कहा से आता है यह सारा सामान और कौन रख जाता है यह सारा सामान?

बेनी मैंने कितनी बार बोला है तेरे को कि तू रात को घोड़ बेच कर मत सोया कर और मकान का ध्यान रखा कर कि रात को अपने यहां क्या-क्या गुल खिलते है।

हरिया गुल खिलते है अपने यहां कोई भूत-वूत तो

(बीच मे ही)

बेनी अरे! यही मुसीबत तो मेरे लिए सरदर्द बनी हुई है।

(हरिया जाने लगता है)

अरे! कहा चल दिया?

हरिया मैं समझ गया बाबूजी, अगर कुछ कहा-सुना हो तो मुझे माफ कर देना।

बेनी लेकिन हुआ क्या? कहां जा रहा है तू?

हरिया मैं अपने गाव जा रहा हूं बाबूजी।

बेनी लेकिन जाने से पहले आखिरी बार मुझे सिगरेट तो लाकर दे दे, क्या पता फिर कब मिलना होगा।

हरिया अभी ला देता हू, लाइए पैसे दीजिए।

बेनी पैसे होते तो मै ही नहीं ले आता। शर्मा जी से उधार ले आ, बोल देना पैसे एक तारीख को देगे।

हरिया लेकिन आज दो तारीख है बाबूजी। एक तारीख मे उनतीस दिन बाकी पड़े है।

बेनी देख तू फिर बहस करने लग गया, जल्दी से जा और—

हरिया मैं अभी लेकर आता हू।

(हरिया का बाहर की ओर प्रस्थान। बेनीप्रसाद कमरे मे रोशनी जलाता है और एक किताब लेकर पढ़ने बैठ जाता है। अन्दर की ओर से शारदा प्रवेश करती है।)

बेनी अरे शारदा! तुम अभी तक सोई नही?

शारदा अभी तो रात के ग्यारह ही बजे है जल्दी क्या है।

बेनी रात के ग्यारह बज गए?

शारदा जी हा! तुम अन्दर चलकर खाना खाओगे या उपन्यास पढ़ने से पेट भर जाएगा। तुम्हारा?

बेनी तुम जाकर खाना खा लो—खामख्वाह क्यो पतिव्रता बने जा रही हो? आखिरी पेज रह गया है बस मै अभी आया।

शारदा तीन घंटे से सुन रही हू कि आखिरी पेज रह गया है। लाओ आखिरी पेज मैं पढ़कर सुना देती हू।

(शारदा किताब छीनकर फेंक देती है, बेनीप्रसाद बिगड़ते हुए—)

बेनी देखो शारदा। तुम जरूरत से ज्यादा सर पर चढ़े जा रही हो। अगर एक झटका दे दिया तो जमीन पर आ गिरोगी।

शारदा तुम झटका क्या दोगे अगर मैंने झटका कर दिया तो—

बेनी समझ गया क्योंकि तुम को आभास हो गया है ना कि मेरे सर के बाल सफेद होने लगे है।

शारदा लगता है झटका करने से पहले ही दिमाग की नसे काम करने लग गई हैं।

बेनी मेरा भेजा तो काम कर ही रहा है लेकिन यह मत भूलना बदर बूढ़ा होने बाद भी गुलाची खाना नही भूलता। सुहागन नही तो विधवा-विवाह से कौन मना कर सकता है। मुझे।

शारदा मै जानती हू। कुत्ते की दुम कभी सीधी नही हो सकती।

बेनी अब फसी है कुतड़ी कादे मे।

शारदा क्या बोला तुमने ?

बेनी कुछ नही, तुम अन्दर चलो। मैं तुम्हारे पीछ-पीछे आ रहा हू।

शारदा मेरी बला से—

(शारदा का अन्दर प्रस्थान)

(बेनीप्रसाद फिर से उपन्यास पढ़ने लगता है। कुछ क्षणो बाद हरिया का प्रवेश—)

बेनी जब का गया, अब आया है तू ?

(लम्बी हसी हसकर)

हरिया मै तो कभी का आ गया था और खाना भी खा लिया मैंने।

बेनी खाना भी खा लिया तुमने ?

हरिया जी बाबूजी।

बेनी लेकिन मेरी सिगरेट कहा है ?

हरिया शर्मा जी ने उधार देने से मना कर दिया कि पहले, पहले वाले पैसे लेकर आओ।

बेनी ये मजाल उस मच्छर की। मै अभी देखता हू उस कमीने को।

(बेनीप्रसाद को पकड़ते हुए)

हरिया रहने भी दीजिए बाबूजी।

बेनी ऐसे कैसे रहने दूं।

हरिया वो ऐसा है बाबूजी। मैंने शर्माजी को बोला—मैं अभी वर्माजी को भेज रहा हूं। मेरे इतना बोलते ही वो दूकान बंद कर के भाग गया।

बेनी साला अपने आपको समझता क्या है।

हरिया अब छोड़िए न बाबूजी।

बेनी अरे! हां तुमने खाना खा लिया?

हरिया बोला ना बाबूजी हां, खा लिया खाना।

बेनी क्या बनाया है खाने मे?

हरिया सिर्फ दलिया।

बेनी दलीया और सब्जी मे क्या है?

हरिया राम का नाम।

बेनी क्या मतलब?

हरिया मेमसाब बोलती है—हल्का खाना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी होता है।

बेनी लेकिन ये बात मेमसाब को किसने बतलाई?

हरिया डॉक्टर मिश्रा ने।

बेनी मेमसाहब डॉक्टर मिश्रा के पास क्यो गई थी?

हरिया मेमसाब नही गई थी, डॉक्टर मिश्रा को घर पर बुलवाया था।

बेनी और फीस कितनी दी?

हरिया सिर्फ छ सौ रुपए।

बेनी छ सौ रुपये?

हरिया साढे पाच सौ पिछले बाकी थे।

बेनी मेरी तनख्वाह कितनी है?

हरिया अब मेरे से तो ज्यादा ही होगी बाबूजी।

बेनी बेवकूफ कही का। मै ऊपर जा रहा हू।

हरिया जाइए बाबूजी लेकिन अभी बच्चे छोटे हैं।

बेनी क्या मतलब?

हरिया मेरा मतलब बच्चे वगैरह सो गए होगे। आप कहे तो मै दलिया यही परोस लाऊ?

बेनी रहने दे। दलिया खिला-खिला कर मेरा पूरा मुह छालो से भर दिया है तुम लोगो ने।

हरिया छालो के लिए कच्चे दूध का इस्तेमाल बहुत बढ़िया रहता है बाबूजी।

बेनी बकवास बद कर, मैं ऊपर जा रहा हू।

हरिया जाइए बाबूजी, जाने वाले को कौन रोक सकता है। वैसे आपने बतलाया नही कि कहा से आता है यह

(बीच मे ही)

बेनी हा सुन! आज की रात तू सोना नही। तेरे को सब पता चल जाएगा कि कहा से आता है यह सारा सामान और कौन रख जाता है यह सारा सामान।

हरिया समझ गया बाबूजी।

बेनी क्या समझ गया?

हरिया यही कि कहा से आता है यह सारा सामान और अपने यहा कौन रख जाता है सारा सामान। जाइए सोइए बाबूजी।

बेनी पहले मै खाना खाऊगा।

हरिया कायदे से तो पहले स्नान करना चाहिए।

बेनी क्या?

हरिया मेरा मतलब खाना खाने के बाद आप क्या करेगे?

बेनी झख मारूगा, क्यो? तुम्हे भी मारनी है?

हरिया अच्छा निर्णय लिया है आपने? क्योंकि घड़ी दो घड़ी तो इन्सान को मारनी ही चाहिए।

(बेनीप्रसाद का अन्दर की ओर प्रस्थान)

(हरिया इधर-उधर देखता है और हनुमान जी की तस्वीर को देख कर बोलता है।)

बजरग बली। अगर आज्ञा प्रदान करे तो एक झपकी मै भी मार लू। अगर कोई उल्लू का पट्ठा मुझे परेशान करने आवे तो तो तुम उसे सम्भाल लेना। गुडनाइट।

हरिया हनुमान जी को हाथ जोड़कर सोफे पर लेट जाता है और जोरो से सास लेने लगता है। उसी क्षण दरवाजे पर दस्तक। हरिया चौंककर)

कौन है?

(दरवाजे पर लगातार खटखटाने की आवाज)

किए जा खटखट। जब तक अपना नाम नही बतलाएगा दरवाजा हर्गिज नहीं खोलूंगा।

(दरवाजे पर फिर दस्तक)

हां-हां बेटे, किए जा खटखट तेरे बाप का ही दरवाजा है।

(दरवाजे पर फिर खटखट)

हा-हा और जोर से।

(प्रवेश करके)

बेनी हरिया क्या बात है? अकेले मे किस से बात कर रहा है?

हरिया न जाने कौन आदमी तीन घटे से दरवाजा तोड़े जा रहा है बाबूजी।

बेनी तीन घटे से - दरवाजा उसके बाप का है। तू बाहर जाकर देखता क्यों नही, कौन है वो बदतमीज।

हरिया छोड़िए ना बाबूजी अपना क्या जाता है।

बेनी अपना क्या जाता है, तेरे बाप का है दरवाजा।

हरिया ओह बाबूजी, अपना दरवाजा नही, किसी पड़ौसी का दरवाजा खटखटाए जा रहा है।

बेनी तो तुमने पहले क्यो नही बतलाया बुद्धू कही का।

(बेनीप्रसाद का प्रस्थान)

(हरिया फिर सो जाता है और दरवाजे पर फिर दस्तक होती है। हरिया चौक कर)

(सोफे पर बैठते हुए।)

हरिया कौन है?

(दस्तक)

कौन है भाई।

(दस्तक)

अरे बोलते क्यो नही कौन हो तुम?

(दस्तक)

तो तुम ऐसे नही मानोगे।

(हनुमान जी की फोटो को देखकर)

मैं दरवाजा खोलने जा रहा हू बजरग बली। मुझे शक्ति प्रदान कर और आने वाले कर्महीन की रक्षा करना। कही 302 का मुकदमा दर्ज न हो जाय।

(दस्तक)

हां-हां आ रहा हू बेटे। तैयार हो जा तू ?

(हरिया जाकर दरवाजा खोलता है और एक आदमी को पकड़कर लाता है, जिसके हाथ मे ब्रीफकेश, थर्मस, बन्दूक व एक ऐअर बेग होता है, और चिल्लाकर)

बाबूजी ?

मिश्री अरे ! अरे ! क्या कर रहे हो तुम ?

(चिल्लाते स्वर मे)

हरिया बाबूजी ?

मिश्री अरे भाई कौन हो तुम ?

हरिया अच्छा बेटे। मुझे पूछ रहा है कि मै कौन हू।

मिश्री अरे भाई छोड़ो मुझे ?

हरिया बड़ी मुश्किल से हाथ लगे हो तुम ऐसे कैसे छोड़ दू बाबूजी।

मिश्री बाबूजी के बच्चे, छोड़ मुझे। मैं बेनी-प्रसाद का दोस्त हू।

हरिया दुश्मन कही के। बहुत दिन हो गए हैं तुम्हे हमे परेशान करते हुए। सच-सच बतला, कहा से लाया है यह सामान और यहा क्यू रख जाता है यह सारा सामान ?

मिश्री अरे ! यह मेरा अपना सामान है, बोला ना मै बेनीप्रसाद का दोस्त हू, मिश्रीलाल।

हरिया मिश्रीलाल हो या गुड़लाल। मैं तुम्हे नही छोड़ूगा। बाबूजी।

मिश्री बड़े बदतमीज आदमी हो, छोड़ो मुझे ?

हरिया नही छोड़ूगा ?

मिश्री नही छोड़ेगा ?

हरिया नही छोड़ूगा।

मिश्री अच्छी बात है मत छोड़, पकड़े रख अगर छोड़ दिया तो तुम्हे तेरे बाप की सौगन्ध है।

(हरिया हाथ छोड़ देता है)

अरे ! पकड़ ना क्यो छोड़ दिया ?

बेनी भगवान जो भी करता है अच्छा ही करता है मिश्रीलाल, वरना तेरे को मुझ गरीब के पास आने की कहा फुरसत थी।

मिश्री नही-नही, ऐसी बात नही बेनीप्रसाद। कुछ तो नौकरी ही ऐसी है और सर पर पाच-पाच बच्चो की जिम्मेवारी।

बेनी पाच बच्चे? अरे मिश्रीलाल, तेरी शादी को तीन साल भी पूरे नही हुए हैं और पांच पाच बच्चे?

मिश्री सब ऊपर वाले की दया है बेनीप्रसाद।

(पास मे जाकर धीरे-से पूछता है)

बेनी ऊपर कौन रहता है, मिश्रीलाल?

मिश्री तू इतना बड़ा हो गया है बेनीप्रसाद लेकिन तेरी बचपने वाली आदते अभी तक नही गई? मैं ऊपर वाले भगवान की बात कर रहा हू।

(हसते हुए)

बेनी माफ करना मिश्रीलाल मैने सोचा खैर जाने दे। पहले यह बतला खाना-वाना खाएगा।

मिश्री बिल्कुल नही बेनीप्रसाद, देख मुझे जोरो की नीद आ रही है। मै सोना चाहता हू।

बेनी वो तो ठीक है लेकिन इतनी दूर से आया है पहले खाना तो खा लेता।

मिश्री मैंने बोला ना बेनीप्रसाद खाना बिल्कुल नही चलेगा। आते वक्त एक होटल मे खा लिया था। देख मुझे जोरो की नीद आ रही है। मै बस सोना चाहता हू। प्लीज।

बेनी अरे सो जाना मिश्रीलाल, लेकिन तेरी भाभी को

(बीच मे ही)

मिश्री भाभी को अभी सोने दे यार, मै भाभी से सुबह मिल लूगा।

बेनी ओफ् ओ मिश्रीलाल, मेरे कहने का मतलब है कि तेरी भाभी को नीद म

(बात काटते हुए)

मिश्री भाभी को नीद से उठाने से क्या फायदा बेनीप्रसाद, खाना मै खाकर आया हू। रही बात मुलाकात की सो मैं सुबह मिल लूगा। अब आया हू तो दो-चार दिन ठहरकर ही जाऊगा।

बेनी — देख मिश्रीलाल! किराए के लालच मे मैने अपना पूरा मकान किराए पर चढ़ा रखा है। मेरे पास सिर्फ दो ही कमरे हैं। एक मे मैं और तेरी भाभी और दूसरा यह ड्राइगरूम है और हरिया बाहर खुले मे सोता है।

मिश्री — कमाल की बात करता है बेनीप्रसाद। मै ड्राइगरूम मे सो जाऊगा। इतना बढ़िया सजा रखा है तुमने ये मुलायम सोफा। तू अन्दर जा मैं यही ठीक हू गुडनाइट।

बेनी — गुडनाइट, लेकिन तू जरा ध्यान से सोना क्योंकि तेरी भाभी को

मिश्री — बड़ा चामण है तू। गुडनाइट के बाद भी भेजा चाट रहा है। अगेन गुडनाइट सोने दे मुझे।

बेनी — गुडनाइट।

(बेनीप्रसाद अन्दर की ओर जाता है।

मिश्रीलाल अपना ब्रीफकेस सर के नीचे तथा बाकी सामान छाता, थर्मस, सूटकेस आदि को सोफे के पास रखकर सोफे पर सो जाता है और कुछ ही क्षणो मे उसकी जोरो से नाक बजने लगती है। कुछ क्षणो बाद हरिया कमरे मे प्रवेश करके —)

हरिया — क्यो सो गए क्या दानेदार साहब? मै कड़क आदमी हू। गोली मार दूगा। आज मै भी आपकी पूरी रड़क निकाल कर रहूगा अगर एक मिनट भी चैन से सोने दिया तो मेरा नाम हरिया नही।

(उसी क्षण मिश्रीलाल नींद से बहकता है)

मिश्री — पूड़ी वाले, एक पाव पूड़ी - अरे गर्म देना।

हरिया — अच्छा बेटे नीद मे पूड़ी खाएगा। पूड़ी क्या मैं तेरे को शुद्ध घी के पराठे मगवा देता हू।

(मिश्रीलाल फिर नींद मे ही बहकता है)

मिश्री — चाय वाले! एक कप चाय

(बीच मे ही)

हरिया — चाय क्यो बेटे मै तेरे को मिलन रेस्टोरेन्ट से गर्मागर्म झाग वाली कॉफी पिलाता हू।

(मिश्रीलाल नींद मे)

मिश्री — टेक्सी

हरिया अच्छा बेटे कॉफी पीते ही खिसकने की कोशिश कर रहा है। पहले टैक्सी के पैसे निकाल।

(हरिया मिश्रीलाल की नीद मे तलाशी लेने लगता है)

(मिश्रीलाल नीद मे सोए-सोए बारी-बारी हाथ-पाव उठाता है। हरिया बार बार पकड़ कर रखता है। उसी दौरान मिश्रीलाल की आख खुल जाती है)

मिश्री यहां क्या कर रहा है तू?

हरिया आपको मच्छर काट रहे थे इसलिए मै मच्छरो को उड़ा रहा था।

मिश्री भाग जा यहा से मगरमच्छ कही का और दुबारा इस कमरे मे आ गया तो साले को गोली मार दूगा।

(हरिया, बाहर निकल जाता है)

(मिश्रीलाल वापस सो जाता है। कुछ क्षणो बाद ही बेनीप्रसाद की धर्मपत्नी नीद मे चलती हुई कमरे मे प्रवेश करती है और फर्श पर पड़ा हुआ मिश्रीलाल का सामान उठाकर अन्दर चली जाती है। उसी दौरान मिश्रीलाल की आख खुल जाती है और शारदा को अन्दर जाते हुए देखकर चिल्लाता है)

बेनीप्रसाद, अरे! ओ बेनीप्रसाद।

(बेनीप्रसाद प्रवेश करके)

बेनी क्या बात है मिश्रीलाल तू अभी तक सोया नही?

बेनी यहा सोने कौन देता है यार। पहले तेरे पालतू कुत्ते ने आकर परेशान किया। उसके बाद तेरी पत्नी आई और मेरा सामान उठाकर अन्दर ले गई।

बेनी मेरी धर्मपत्नी? अगर वो तेरा सामान उठाकर अन्दर ले गई तो इसमे इतनी चिन्ता करने की क्या बात है। अभी आराम से सो जा, मैं तेरा सारा सामान, सुबह वापस लौटा दूगा।

मिश्री लौटा देना बेनीप्रसाद। *(बड़बड़ाता है)* नमाज पढ़ने आया था और रोजे गले पड़ गए।

बेनी क्या बोला तुमने?

मिश्री कुछ नही। मुझे जोरो की नीद आ रही है, मुझे सोने दे।

बेनी अच्छा गुडनाइट।

(बेनीप्रसाद का प्रस्थान। मिश्रीलाल अपना ब्रीफकेस सर के नीचे अच्छी तरह दबाकर सो जाता है और उसकी नाक बजने लगती है। उसी क्षण हरिया प्रवेश करता है)

हरिया क्यो सो गए क्या दानेदार साहब ? मै फिर आ गया हू आपकी रड़क निकालने।

(मिश्रीलाल गहरी नींद मे खराटे भरता है। हरिया सर का बाल तोड़ कर मिश्रीलाल के कान मे डालता है। मिश्रीलाल मच्छर समझ कर बार-बार मारता है और हरिया मौका पाकर मिश्रीलाल के सर के नीचे से ब्रीफकेश निकाल लेता है और उसी क्षण बेनीप्रसाद की पत्नी शारदा नींद मे चलकर कमरे मे आती है। हरिया शारदा को देखकर ब्रीफकेश को फर्श पर छोड़कर धीरे से बाहर निकल जाता है शारदा फर्श पर पड़ा ब्रीफकेश उठाकर अन्दर चली जाती है। मिश्रीलाल चौककर उठता है और ब्रीफकेस को न पाकर चिल्लाता है।)

मिश्री बेनीप्रसाद, अरे! ओ, बेनीप्रसाद।

(प्रवेश करके)

बेनी क्या बात है मिश्रीलाल, क्यो पागलो की तरह चिल्ला रहा है ?

मिश्री मै लुट गया बेनीप्रसाद, बर्बाद हो गया।

बेनी आखिर हुआ क्या ? किसी ने तेरी इज्जत

(बात काटते हुए)

मिश्री देख तू बन मत बेनीप्रसाद। तेरी औरत मेरा कलेजा निकाल कर ले गई।

बेनी तेरी भाभी डायन है, या तू छोटा बच्चा है ?

मिश्री अरे डायन नही बेनीप्रसाद, चोट्टी है तेरी औरत।

बेनी देख मुह सभाल कर बात कर मिश्रीलाल, वरना मैं तेरा थोबड़ा तोड़ डालूगा।

मिश्री मै सच कह रहा हू, बेनीप्रसाद। तेरी औरत मेरे सर के नीचे दबा हुआ ब्रीफकेस निकाल कर अभी-अभी अन्दर लेकर गई है। तेरे को पता नही है वो औरत चोट्टी है, रात को चोरी करती है।

बेनी अगर वो ब्रीफकेस निकाल कर अन्दर ले गई तो तू मर क्यो रहा है ब्रीफकेश मैं, सुबह वापस लौटा दूगा।

मिश्री तू वापस क्या-क्या लौटाएगा बेनीप्रसादजी ? तू ऐसा कर मेरा ब्रीफकेश वापस लोटा दे। मैं तेरे पाव पकड़ता हू।

बेनी आखिर ब्रीफकेश मे ऐसा क्या है? मै तुम्हे एक नही दस ब्रीफकेश लाकर दे दूगा।

मिश्री मुझे दस ब्रीफकेश नही चाहिए बेनीप्रसाद। मुझे मेरा ब्रीफकेश लौटा दे। उसमे मेरे सात लाख रुपए नगद पड़े है।

बेनी सात लाख रुपए और इतनी-सी रकम के लिए तू पागल हुआ जा रहा है! ऐसा कर अभी आराम से सो जा, मै तेरा सारा सामान, सुबह वापस लौटा दूगा।

मिश्री तू सारे सामान को गोली मार बेनीप्रसाद। तू मेरा सिर्फ ब्रीफकेश वापस लौटा दे वरना मुझे पुलिस स्टेशन जाना पड़ेगा।

बेनी तू मेरा जिगरी दोस्त होकर पुलिस स्टेशन जाएगा। तू तेरी भाभी को पकड़वाएगा। जा चला जा पुलिस स्टेशन   अरे! तू पुलिस स्टेशन क्या जाएगा, मै जाता हू पुलिस स्टेशन कि एक छोटा-सा थानेदार होते हुए इतनी बड़ी रकम लाया कहा से।

(बेनीप्रसाद जाने लगता है - मिश्रीलाल उसे पकड़ते हुए)

मिश्री अरे! कहा जा रहा है बेनी? मै तो तेरे साथ वैसे ही मजाक कर रहा था।

बेनी एक घण्टा हो गया तुझे परेशान करते हुए।

मिश्री कौन परेशान कर रहा है बेनी, जा अन्दर जा ना रे - सो जा रे गुडनाइट रे।

बेनी गुडनाइट

(बेनीप्रसाद अन्दर जाने लगता है)

मिश्री एक बात पूछू बेनीप्रसाद। तू बुरा तो नही मानेगा।

(रुकते हुए)

बेनी क्या है?

मिश्री तू मेरे सर पर हाथ रख कर बोल कि तेरी नीयत बुरी नही है। तू मेरा ब्रीफकेश सुबह वापस लौटा देगा।

(बिगड़कर)

बेनी बड़े घटिया किस्म का आदमी है रे तू। लगता है मुझे पुलिस स्टेशन जाना ही पड़ेगा।

मिश्री पुलिस को गोली मार बेनीप्रसाद - रात बहुत हो चुकी है जाकर सो जा ना, भाभी इन्तजार कर रही होगी।

(बेनीप्रसाद अन्दर जाते-जाते)

बेनी गुडनाइट

मिश्री वेरी बेड नाइट रे। मै बहुत गलत फंस गया रे। (मुंह बनाकर) सुबह वापस लौटा दूंगा हूं बदमाश कही का। औरत को आगे करके चोरी कराता है, साले दोनो गिनने मे लग गए होगे सो जा मिश्रीलाल, अब तेरे पास रखा ही क्या है जो वो लेकर जाएगी आ जा, ले जा

(मिश्रीलाल कुछ क्षण इधर-उधर करवट बदलता है और कुछ देर बाद उसकी नाक बजने लगती है और नीद मे बहकता है)

मिश्री आइए-आइए, मनिया जी ? पधारिए अगर आप मुझे बीस लाख फाइनेंस कर दे तो मैं हेमा मालिनी को लेकर फिल्म बना डालू कौन हेमा जी।

(हाथ ऊपर उठाता है।)

(उसी क्षण बेनीप्रसाद की पत्नी नीद मे चलकर कमरे मे प्रवेश करती है और मिश्रीलाल का हाथ पकड़ कर खीचते हुए अन्दर की ओर जाने लगती है। घबराया हुआ मिश्रीलाल उसके पीछे-पीछे जाने लगता है और उसी क्षण अन्दर की ओर से बेनीप्रसाद प्रवेश करके चिल्लाते स्वर मे

बेनी अरे! मिश्रीलाल! मेरी वाइफ?

मिश्री चिन्ता मत कर बेनीप्रसाद, मै सुबह वापस लौटा दूगा।

(तीनो फ्रीज हो जाते है और धीरे-धीरे मच पर अन्धेरा फैलने लगता है।)

'सुबह वापस लौटा दूगा'

मोटी आवाज़

मोटी आवाज़

'मोटी आवाज़' का प्रदर्शन वैसे तो हिन्दुस्तान के कई शहरो मे कुल मिलाकर करीब 92 (बानवे) बार किया जा चुका है लेकिन सबसे पहले इस नाटक को अनुराग कला केन्द्र, बीकानेर द्वारा आयोजित हास्य नाटक प्रतियोगिता सन् 1973 मे खेला गया और प्रतियोगिता के सारे पुरस्कार जीते। इसमे इन कलाकारो ने नाटक मे भाग लिया—

सर्वश्री प्रदीप भटनागर	*डा सी के रस्तोगी*
शहनशाह बाबर	*मामूलीराम*
सूरजसिंह पवार	*बालम*
एस डी चौहान	*पाचोली*
आशुतोष कोठारी	*सेठ गुलगुलालिया*
कन्हैयालाल सोनी	*भगत*
हनुमान पारीक	*राजबहादुर*
मिस्टर महेश शर्मा	*जोर्ज*
रजन गौतम	*डा पट्टनायक*
अनुराधा टी वी	*माला*
असगर अली	*नर्स*
जैड एम खान	*पुलिस इन्सपेक्टर*
बी एल नवीन	*डाक्टर सुलेमान*
गीत	*श्री रजब अली*
सगीत	*श्री कामेश सहल*
लेखक-निर्देशक	*सूरजसिंह पंवार*

मोटी आवाज़

डॉक्टर सी के रस्तोगी का निजी नर्सिंग होम और उसी का एक परामर्श कक्ष। कक्ष का सारा सामान अस्त-व्यस्त पड़ा है। बार बार फोन बजता है और बन्द हो जाता है। कुछ क्षणो बाद मामूलीराम नाम का एक सहायक कर्मचारी कमरे मे झाड़ू, फ्लीट पम्प तथा कन्धे पर झाड़न डालकर प्रवेश करता है। कमरे मे फ्लीट छिड़कता है। दीवार घड़ी मे सुबह के आठ बजते है। मामूलीराम घड़ी की आवाज के साथ अपनी एक अगुली हथेली मे मार कर आठ गिनता है, जिसे अन्दर से नर्स प्रवेश करके देखती है और हसते हुए—

नर्स अरे! मामूलीराम, ये क्या तमाशा हो रहा है?

मामूलीराम कुछ नहीं सिस्टर, घड़ी ने सुबह के आठ बजाए है और मै इसकी हा मे हा मिला रहा हूँ।

नर्स घड़ी की हा मे हा मिला रहे हो या अपनी मुण्डी हिला रहे थे?

मामूलीराम तो तुमने मुझे मुण्डी हिलाते देख ही लिया सिस्टर, लेकिन मै तो यह प्रैक्टिस रोज करता हूँ।

नर्स यह तो बहुत खुशी की बात है क्योकि इन्सान को अपना कार्य नियमित रूप से ही करना चाहिए।

मामूली हा सिस्टर, एक रोज मैं छुट्टी पर अपने गाव चला गया था। दूसरे रोज जब ड्यूटी पर आया तो यह कमबख्त घड़ी बन्द पड़ी हुई थी। बड़ी मुश्किल से मैने इसे ठीक करवाया। उस रोज के बाद अव्वल तो मै छुट्टी पर जाता ही नही, अगर किसी खास कारणवश जाना ही पड़ जाता है तो मै इस घड़ी मे सुबह के आठ बजाकर ही जाता हूँ।

नर्स अच्छा बाबा! अब जल्दी से सफाई मे लग जाओ वरना डॉक्टर साहब आते ही चिल्लाना शुरू कर देगे मामूलीराम नर्स।

मामूली बस अभी लो सिस्टर, अभी चमका देता हूँ पूरी क्लिनिक को चाद की तरह।

नर्स प्लीज जरा जल्दी करो, आज बहुत देर हो गया है और अन्दर मेरे काफी काम बाकी पड़ा हुआ है।

(नर्स का अन्दर की ओर प्रस्थान मामूलीराम गुनगुनाते हुए जल्दी-जल्दी झाड़न मारते हुए सफाई करने लगता है और अकेले मे बोलता है।)

मामुली — कुछ समझ मे नही आ रहा है। डॉक्टर साहब, इस कमरे मे मरीज देखते है या साण्ड ?

(उसी क्षण फोन बजता है, मामूलीराम रिसीवर उठाकर)

हैलो, मै डॉक्टर सी के रस्तोगी के यहा से उनका चहेता नौकर मामूलीराम बोल रहा हूँ। वैसे आप कौन साहब, किन साहब से, किसलिए और क्यो बात करना चाहते है ? *(एकाएक घबराकर)* कौन डॉक्टर साहब आप ? गलती हो गई सर! यस सर नो सर , मै मैं आते ही बोल दूगा सर।

(रिसीवर रखता है और पसीना पोंछता है। फोन फिर बज उठता है। मामूलीराम घबराए हुए से रिसीवर उठाकर)

यस सर, कौन ? डॉक्टर साहब किसी जरूरी काम से बाहर पधारे हुए है। वैसे जल्दी ही आ जाएगे। जी हा जी। अरे साहब मैने आपको बोला ना डॉक्टर साहब विलायत नही कोलायत गए है, जल्दी ही लौट आएगे।

(बाहर की ओर से पुलिस इन्सपेक्टर खान (एक बहरूपिए के रूप मे) प्रवेश करके)

पु इन्स — आएगे नही, मै आ गया हूँ श्रीमान् और काफी देर से आपके सामने खडा हूँ।

मामूली — सामने खड़े है तो पीछे जाकर बैठ जाइए और तसल्ली से बतलाइए कि कौन हैं आप ?

पु इन्स — नही पहचाना आपने मुझे ?

(पुलिस इन्सपेक्टर के चारो ओर चक्कर लगाकर)

मामूली — मैंने आपको बिलकुल नही पहचाना क्योकि आपका साइनबोर्ड कहा लटक रहा है। मुझे दिखलाई नही दिया।

पु इन्स — देखिए आप मजाक छोडिए, क्या सच मे आपने मुझे नही पहचाना ?

मामूली — मै भोमिया जी की कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने आपको नही पहचाना, क्योकि आपका यह खूबसूरत खोबड़ा मै आज पहली बार देख रहा हूँ।

पु इन्स — देखिए आप घबराइए नही।

मामूली कौन घबरा रहा है, वैसे डरने की मेरी आदत है।

पु इन्स तो लीजिए, मैं आपको पहचानने के लिए अपने अमूल्य समय मे से थोड़ा वक्त देता हूँ।

(कुछ देने का संकेत करता है, मामूलीराम अपनी हथेली मे लेने का संकेत करके देखता है और फेंकता है और कुछ क्षण सोचकर तपाक से बोलता है)

मामूली अगर मै गलत नही हूँ तो आप श्रीदेवी के साले बाबू हो?

(हसते हुए)

पु इन्स गलत, आप एक चेष्टा और कीजिए।

(मामूलीराम कुछ क्षण दुबारा सोचकर)

मामूली अब पहचान गया। चारण होस्टल के चौकीदार चोरूलाल नसेड़ी हो?

(लम्बी हसी हसकर)

पु इन्स बिलकुल गलत, मैंने बोला ना, तुम मुझे नही पहचान सकोगे। आखिर मुझे ही बतलाना होगा कि मैं कौन हूँ और यहा किसलिए आया हूँ।

मामूली आखिर कौन है आप? बतलाते क्यो नही? पहेलिया क्यो बुझा रहे हो?

पु इन्स ऐसा है कोडाराम जी

मामूली वैसा है मोडाराम जी?

पु इन्स कल मै डॉक्टर रस्तोगी के पास आया था।

मामूली जरूर आए होगे, क्योंकि यहा रोजाना सौ मरीज आते है और पचास वापस जाते है।

पु इन्स सौ आते हैं और पचास वापस जाते हैं (कुछ क्षण सोचकर) बाकी पचास कहा जाते हैं?

(ऊपर की तरफ इशारा करते हुए)

मामूली डॉक्टर साहब ने मुझे बतलाने के लिए मना कर रखा है।

पु इन्स हा तो, मैं क्या कह रहा था?

मामूली आप कह रहे थे कि मक्खी गुड़ मे फस गई।

पु इन्स अरे हा, डॉक्टर रस्तोगी ने मुझे बोला

(बीच मे)

मामूली सिर्फ बोला? पीटा नही आपको?

पु इन्स   क्या मतलब ?

मामूली   मेरा मतलब डॉक्टर रस्तोगी ने क्या बोला आपको ?

पु इन्स   डॉक्टर रस्तोगी ने मुझे बोला कि आज आपको एक ऐसा इन्जैक्शन लगा दिया है कि कल से आपको यहां आने की जरूरत नही पड़ेगी।

मामूली   ऐसा है। आप एक मिनट यहां तशरीफ रखिए। आज मैं आपको एक ऐसा इन्जैक्शन लगा देता हूँ कि आपको यहां से वापस जाने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। आप एक मिनट यहां बैठिए मैं अभी आया।

(मामूलीराम का अन्दर की ओर प्रस्थान। पुलिस इन्सपेक्टर जल्दी से उठता है और टेबिल की एक दराज मे से फाइल निकालकर बाहर की ओर निकल जाता है। कुछ क्षण बाद मामूलीराम एक बड़ा सा इन्जेक्शन लेकर प्रवेश करता है और इधर-उधर देखकर)

भाग गया साला *(मुह बनाकर)* ऐ, ऐ, ऐ, तुम मुझे नही पहचान सकोगे

(नर्स प्रवेश करके)

नर्स   अरे मामूलीराम, अभी तक सफाई नही हुई ? आखिर तुम क्या कर रहे हो ?

(उसी क्षण फोन बजता है)

मामूली   अब तुम ही बतलाओ सिस्टर, मैं सफाई करू या फोन सुनू। सुबह से अब तक सत्तर बार बज चुका है।

नर्स   नही बाबा, तुम फोन सुनो, सफाई हम कर लेगा।

(नर्स का अन्दर प्रस्थान। मामूलीराम रिसीवर उठाकर)

मामूली   आप कौन साहिबा बोल रही है ? देखिए मैडम, आप जरा हिन्दी मे बात कीजिएगा, माईसैल्फ सिम्पली फोर्थ क्लास सरवैण्ट, देअरफोर आई डोण्ट नो इगलिश। थैंक्यू मैडम, यस मैडम। वैसे आपका शुभ नाम ? क्या नाम बतलाया आपने ? जानकी ? तो जय बोलो हनुमान की।

(मामूलीराम हनुमान की तरह आकृति बनाकर खड़ा हो जाता है। नर्स प्रवेश कर देखती है कि उसी क्षण मिसेज रस्तोगी प्रवेश करके)

माला   क्या हो रहा है यह नाटक ?

मामूली   कुछ नही मेम साहब, किसी जानकी का फोन आया था, इसलिए मै उसे रामचन्द्रजी का पता बतला रहा था।

माला डॉक्टर रस्तोगी कहां हैं? उनका पता ठिकाना जानते हो?

मामूली हम उसी की तलाश मे लगे हुए हैं मैडम, क्यो सिस्टर?

नर्स यह बेकार की बकवास कर रहा है मैडम, डॉक्टर साहब आने वाले ही है।

माला फिर भी कब तक आ जाएंगे, कुछ पता है?

मामूली बस दो तीन घटो मे आ जाने चाहिए।

माला लेकिन घर से तो कभी के निकल गए थे कि मैं क्लिनिक जा रहा हूं।

मामूली शायद पिछले गेट से वापस घर मे घुस गये हो?

माला क्या बकवास कर रहे हो?

(बीच मे ही)

नर्स शायद किसी विजिट पर चले गये हो मैडम।

मामूली आप बैठिए ना मैडम, आप आई तब से यू खड़ी है, जैसे नगर परिषद के चुनाव मे खड़ी हो।

माला ओह! यू शट अप

मामूली मेरा मतलब आप आराम से बैठिए ना।

माला यहाँ कोई बैठने की जगह भी है? पूरा कबाड़खाना बना रखा है क्लिनिक को।

नर्स प्लीज, आप अन्दर चल कर बैठिए ना।

माला तुम लोगो के ड्यूटी पर आने का समय क्या है?

(दोनो एक साथ बोलते हैं)

सुबह आठ बज मैडम।

माला फिर वार्ड की हालत तो और ज्यादा खराब होगी। चलो आओ मेरे साथ।

(माला व नर्स का अन्दर प्रस्थान। पीछे से मामूलीराम दोनो हाथ फैलाकर जोड़ता है और उसी क्षण बाहर की ओर से डॉक्टर रस्तोगी प्रवेश करके)

डॉक्टर मामूलीराम?

(कुत्ते की तरह पैर से धूल फेकते हुए)

मामूली यस मेम साहब।

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर मेम साहब के बच्चे।

मामूली यस सर। *(एकाएक डॉक्टर को देखकर)* सॉरी सर।

डॉक्टर क्या हो रहा था यहां?

मामूली सफाई कर रहा था सर।

डॉक्टर लेकिन यह कौनसा तरीका है सफाई करने का?

(नर्स प्रवेश करके)

नर्स गुडमार्निंग सर।

डॉक्टर गुडमार्निंग, सिस्टर अभी तक क्लिनिक की सफाई क्यो नही हुई?

नर्स शायद रात को क्लिनिक मे कोई चोर घुस आया

(बीच मे ही)

डॉक्टर बेवकूफ लड़की, चोर की यह हिम्मत कि वो पागल रस्तोगी आई मीन मेरी क्लिनिक मे घुस जाए।

नर्स तो सर, यह सारा सामान उथल-पुथल

डॉक्टर वो मै जानता हू।

मामूली क्या जानते है सर, हमे नही बतलाएगे?

डॉक्टर तुम लोगो के घर चले जाने के बाद मैंने एक पेशेण्ट और एडमिट किया था, लेकिन लगता है, तुम लोगो ने अभी तक वार्ड का राउण्ड नही लिया?

नर्स मै राउण्ड ले चुकी हूँ सर, सारा काम पूरा हो चुका है।

डॉक्टर अच्छी बात है, मामूलीराम तुम अन्दर जाकर जल्दी से मेरे चैम्बर की सफाई करो। मेरे कुछ गैस्ट आने वाले हैं।

मामूली यस सर।

(मामूली का प्रस्थान, डॉक्टर रस्तोगी बैठते हुए)

डॉक्टर सिस्टर सुबह की चार्टिंग हो गई?

नर्स यस सर।

(कुछ पेपर साईन करके नर्स को एक एक करके पकड़ाते हुए)

डॉक्टर बैड नम्बर पन्द्रह का क्या कडीशन है?

नर्स सॉरी सर, चार्ज के मुताबिक बैड नम्बर पद्रह रात को दस बजकर दस मिनट पर मर गया।

डॉक्टर गुड, बैड नम्बर सोलह?

नर्स रिपोर्ट के अनुसार बेड नम्बर सोलह आज रात दो बजे मर गया।

डॉक्टर गुड, बैड नम्बर सतरह?

नर्स आई एम रियली वैरी सॉरी सर, बैड नम्बर सतरह अभी अभी मेरे ड्यूटी पर आ जाने के बाद एकाएक मर गया, आई मीन कॉलेप्स हो गया।

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर नॉनसैन्स और बैड नम्बर अठारह?

(उसी क्षण पांचोली प्रवेश करके)

पाचोली उसे अभी तक दवा नही दी है।

डॉक्टर यह गधा कौन है?

पांचोली माईसैल्फ पांचोली, वैसे आप चाहे तो मुझे द्रौपदी भी कह सकते है।

नर्स यह पाचोली है सर, बैड नम्बर अठारह।

डॉक्टर बैड नम्बर अठारह?

(फाईल देते हुए)

नर्स यस सर।

डॉक्टर लेकिन इसके इतनी लम्बी मूछे कहां से आ गई?

नर्स मैं क्या बतलाऊं सर, कभी यह मूछ बढ़ा लेता है और कभी मूछ काट लेता है।

डॉक्टर लेकिन अभी इसके मूछे नक्ली है या असली?

नर्स मालूम नही सर लेकिन थोड़ी देर पहले तो नही थी।

डॉक्टर लीव इट, तुम अन्दर जाओ और बैड नम्बर नौ को प्रिपेयर करो।

नर्स यस सर लेकिन आज उसके शौक पूरे हो चुके हैं।

डॉक्टर मैं जानता हू, तुम अन्दर जाकर उसे तैयार करो।

नर्स यस सर।

(नर्स का अन्दर की ओर प्रस्थान)

डॉक्टर क्यो पाचोली, तुम्हे छुट्टी दे दी जाए?

पाचोली किसलिए? मुझे यहा कोई तकलीफ नही है।

(उसी क्षण माला अन्दर की ओर से प्रवेश करके)

माला ठीक कहता है ये क्योंकि इतने बड़े डॉक्टर के होते हुए इसे तकलीफ हो भी कैसे सकती है।

(बीच मे ही)

पाचोली यू आर राइट।

डॉक्टर माला डार्लिंग तुम।

माला डार्लिंग गई भाड़ मे, पहले मुझे यह बतलाओ, तुम रोजाना सुबह छ बजे घर छोड़ देते हो और यहां इस समय आते हो?

(बीच मे ही)

पाचोली वैरी बैड मिस्टर, तुम्हे ऐसा नही करना चाहिए।

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर यू गेट आऊट।

पाचोली व्हाई नौट, अभी चले जाते है।

(लेफ्ट राईट-लेफ्ट राईट करते हुए अन्दर की ओर प्रस्थान)

माला क्यो, यह समय है तुम्हारा क्लिनिक आने का?

डॉक्टर सॉरी डार्लिंग, मै एक विजिट पर चला गया था।

माला मालूम है, मै यहा पर कितनी देर से इन्तजार कर रही हू?

डॉक्टर तुम नही जानती माला डार्लिंग, एक डॉक्टर की कितनी बिजी लाइफ होती है।

माला मै सब जानती हू, तुम तो कल डॉक्टर बने हो, वो भी पागलो के। सुनो, तुमने आज तक जितने मरीज देखे हैं ना उससे चार गुना ज्यादा तो मेरे डैडी ने इलाज करते-करते मार डाले है।

डॉक्टर मै जानता हू डार्लिंग। मै रोगियो को मारता नही, जीवनदान देता हू।

माला *क्या बोला तुमने? जरा दुबारा बोलना?*

डॉक्टर ओफ्फो सुबह-सुबह झगड़ा करने आई हो?

माला मैं झगडा करने नही बल्कि यह कहने आई हू कि ड्यूटी के बाद सीधे घर चले आना। डॉक्टर भारद्वाज के यहा चलना है और हा, कार मै लिए जा रही हू, मुझे बहुत सारी मार्केटिंग करनी है।

डॉक्टर हा-हा तुम चलो। मै पैदल ही पहुच जाऊगा।

(उसी क्षण अन्दर की ओर से नर्स तेजी से प्रवेश करते हुए)

नर्स जल्दी कीजिए सर, वार्ड मे एक भी पैशेण्ट नही है।

डॉक्टर व्हाट । आओ मेरे साथ ।

(डॉक्टर व नर्स का तेजी से अन्दर की ओर प्रस्थान। माला उन्हे देखती रह जाती है और उसी क्षण चुपके से बालम प्रवेश करता है और माला के पीछे खड़ा हो जाता है। माला एकाएक बालम को पीछे खड़े देखकर घबरा जाती है और उसके हाथ से पर्स छूट जाता

है। बालम लपक कर पर्स को उठा लेता है। माला जरा सम्भल कर दूर हटती है)

बालम नमस्ते बहन जी।

माला कौन हो तुम?

(पर्स को खोलते हुए)

बालम इकड़ बिकड़ बम्बा बो, अस्सी नब्बे पूरे सौ।

(सौ का एक नोट निकाल लेता है)

माला मैं पूछती हूँ कौन हो तुम?

बालम ए बी सी डी एम हम साहब तुम मेम।

माला शट अप, मेरा पर्स दो।

बालम नही देते, पहले मेरी नमस्ते का जवाब दो।

माला बड़े बदतमीज हो, कौन हो तुम?

बालम आलू मटर गोभी, हम साहब तुम धोबी।

माला ओह यू ब्लडी, मुझे मेरा पर्स दो।

बालम नही देते, पहले मेरी नमस्ते का जवाब दो।

(दोनो हाथ जोड़कर)

माला नमस्ते-नमस्ते-नमस्ते।

(खुश होते हुए)

बालम नमस्ते-नमस्ते नमस्ते तो यह लो, यह लो, यह लो।

(माला पर्स लेकर जल्दी से बाहर निकल जाती है। बालम कुर्सी पर डॉक्टर का कोट टंगा हुआ देखता है और पहन कर कुर्सी पर बैठ जाता है और एक्सरे आदि देखने लगता है। उसी क्षण अन्दर की ओर से पाचोली प्रवेश करके)

पाचोली गुड मार्निंग सर।

(बगैर देखे ही

बालम वैरी गुडमार्निंग।

पाचोली डॉक्टर बालम, तुमने एम बी बी एस कब कर लिया?

बालम अभी अभी रिजल्ट आया है, लेकिन बोलना मत किसी को।

पाचोली बिल्कुल नही बोलेगा।

बालम शाबास! क्या नाम बतलाया तुमने?

पाचोली माईसैल्फ पाचोली, योरसैल्फ बालम।

बालम इसका मतलब तुम बिलकुल ठीक हो गए हो?

पाचोली कमाल है, मै बीमार ही कब था। दैट इज एक्ट ओनली यू नो?

बालम गुड, तो तुम्हे छुट्टी दे दी जाए?

पाचोली इसके लिए मैं तुम्हारा एहसानमन्द रहूंगा।

बालम लेकिन एक बात बतलाओ, तुम घर जाकर क्या करोगे?

पाचोली तुम किसी को बोलेगा तो नही।

बालम बिल्कुल नही बोलेगा। इसलिए सच सच बतलाओ तुम घर जाकर क्या करोगे?

(इधर उधर देखकर)

पाचोली झख मारूगा, क्यो तुम्हे भी मारनी है?

(बिगड़ते हुए)

बालम नर्स ।

(प्रवेश करके)

नर्स यस सर। अरे, बालम तुम? तुम इधर बैठा क्या कर रहा है?

बालम अन्धी हो, दिखलाई नही देता तुमको? जल्दी से इस कमबख्त को अन्दर ले जाओ और सिस्टर से बोलो इसके एनीमा लगाए।

(नर्स खड़ी-खड़ी बालम की तरफ देखती है)

क्या सोच रही हो सुना नही तुमने?

नर्स सोच रही हू कि मैं बहुत गलत जगह फस गई हूं।

बालम कोई बात नही, निकल जाओगी। पहले इस कमबख्त को अन्दर ले जाओ और जल्दी से दूसरे मरीज को भेजो।

(नर्स पाचोली को लेकर अन्दर जाती है और उसी क्षण बाहर की ओर से राजबहादुर प्रवेश करके)

राजबहादुर गुडमार्निंग सर।

बालम तुम्हे यह तकलीफ कितने दिनो से है?

राजबहादुर कौनसी तकलीफ?

बालम मेरा मतलब तुम्हारे अलावा तुम्हारे खानदान मे और किस किस को यह तकलीफ थी? अगर थी, तो उसका रिजल्ट क्या रहा?

(बिगड़ते हुए)

राजबहादुर तुम डॉक्टर हो या घनचक्कर ?

बालम तो मै तुम्हे पोस्टमैन लग रहा हूं ?

राजबहादुर मैं पूछ रहा हू कि डॉक्टर रस्तोगी कहा है ?

बालम उसे पुलिस पकड़कर ले गई और तुम्हारी तलाश है, इसलिए भग लो यहा से।

राजबहादुर क्या कह रहे हो, मै डॉक्टर रस्तोगी का फ्रेण्ड हू।

बालम यहा जो भी आता है, अपन आपको चाचा नेहरू ही बतलाता है। मैंने भी बतलाया था। वैसे सच मे तुम कितने दिनो से बीमार हो ? मेरा मतलब तुम अकेले हो या तुम्हारे साथ कोई है ?

(उसी क्षण डॉक्टर रस्तोगी प्रवेश करके)

डॉक्टर क्या बात है राजबहादुर ? तुम कब आ गए ?

(बीच मे ही)

बालम तुम इसके साथ हो या इसके बाप हो ?

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर शटअप *(चीखते हुए)* मामूलीराम ।

बालम चीखिए नही, यह हॉस्पिटल है फड़ बाजार नही।

(चिल्लाकर)

डॉक्टर मामूलीराम ।

(नर्स प्रवेश करके)

नर्स यस सर।

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर तुम मामूलीराम हो ?

नर्स सॉरी सर, वो अन्दर है। मै अभी भेज रही हू।

(तेजी से अन्दर प्रस्थान। डॉक्टर चिल्लाते स्वर मे)

डॉक्टर नर्स ।

(मामूलीराम प्रवेश करके)

मामूली यस सर।

(चिल्लाकर)

डॉक्टर तुम नर्स हो ?

बालम बकवास तुम कर रहे हो, नही उतारूगा।

मामूली मै कह रहा हू उतारो इसे।

बालम बहरे हो क्या ? बोल दिया ना नही उतारूंगा।

मामूली सुना नही तुमने, उतारो इसे।

बालम डोण्ट टच मी। नही उतारूगा।

मामूली अरे ओ अग्रेज की औलाद, जल्दी उतार इसे।

बालम नही उतारूगा बोल दिया ना।

(सर पर हाथ फेर कर प्यार से)

मामूली उतार दो मेरे बेटे।

बालम नही उतारूगा बापू।

(नर्स प्रवेश करके)

नर्स अरे जल्दी करो बालम, डॉक्टर साहब तुम्हारा अन्दर बेसब्री से इन्तजार कर रहे है।

बालम इन्तजार करने दो उन्हे। मजा ही इन्तजार मे है।

मामूली ओह, कौन कहता है यह पागल है।

बालम मेरा बाप सालगराम कहता है कि मै पागल हू।

नर्स देखो बालम, समझदार लड़के ज़िद नही किया करते।

बालम मामुलीराम, सिस्टर बोल रही है कि मैं समझदार लड़का हू।

मामूली बिल्कुल ठीक कह रही है सिस्टर, क्योकि दूसरा पैदा ही नही हुआ ससार मे।

बालम तुम झूठ तो नही बोल रहे हो मामूलीराम।

मामूली बिलकुल नही, वरना देश का बण्टाढ़ार हो जाता।

बालम तुम मेरी कसम खाकर कहो कि मै समझदार लड़का हू।

मामूली देखो मैं खाऊगा कुछ नही क्योंकि आज मेरे उपवास है।

बालम अच्छी बात है। उतार लो कोट।

(मामूलीराम कोट उतारने लगता है)

तुम नही सिस्टर को उतारने दो। बेचारी पैदल चलकर आई है।

(सिस्टर तथा मामूलीराम कोट उतार कर उसे अन्दर ले जाते हैं। डॉक्टर व राजबहादुर उसी क्षण प्रवेश कर उन्हे देखते हैं।)

राजबहादुर आखिर ये क्या मुसीबत है सर ?

मामूली यस सर, नो सर।

डॉक्टर नो सर के बच्चे।

मामूली यस सर।

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर यू इडियट।

मामूली यस सर।

डॉक्टर ओह यू ब्लडी।

मामूली यस सर, क्या सर?

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर इस कमबख्त को अन्दर ले जाओ और सिस्टर से बोलो इसके एनीमा लगाए।

मामूली क्या लगाए सर?

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर ए नी मा

मामूली अभी लगवा देता हू सर *(धीरे से)* सुबह ऑपरेशन रक्खा है सर?

डॉक्टर यू इडियट, ये कमबख्त दुबारा यहा नही आना चाहिए।

मामूली नही आएगा सर।

डॉक्टर आओ राजबहादुर हम अन्दर बैठते है।

राजबहादुर एज यू विश सर।

(दोनो का अन्दर की ओर प्रस्थान)

मामूली सुनो बालम।

बालम इरशाद।

मामूली चलो उठो, अन्दर घुसो।

बालम अभी घुसता हू।

(उठकर टेबिल के नीचे घुसने लगता है)

मामूली टेबिल के नीचे नही, अन्दर चलकर बिस्तर मे घुसो और जल्दी से डॉक्टर साहब का ये कोट उतारो।

बालम नही उतारते, हमे अभी और मरीज देखने है।

मामूली मैं कहता हू बकवास बन्द करो और जल्दी से उतारो इसे।

बालम बकवास तुम कर रहे हो, नही उतारूंगा।

मामूली मैं कह रहा हूं उतारो इसे।

बालम बहरे हो क्या ? बोल दिया ना नही उतारूंगा।

मामूली सुना नही तुमने, उतारो इसे।

बालम डोण्ट टच मी। नही उतारूंगा।

मामूली अरे ओ अंग्रेज की औलाद, जल्दी उतार इसे।

बालम नही उतारूंगा बोल दिया ना।

(सर पर हाथ फेर कर प्यार से)

मामूली उतार दो मेरे बेटे।

बालम नही उतारूंगा बापू।

(नर्स प्रवेश करके)

नर्स अरे जल्दी करो बालम, डॉक्टर साहब तुम्हारा अन्दर बेसब्री से इन्तजार कर रहे है।

बालम इन्तजार करने दो उन्हे। मजा ही इन्तजार मे है।

मामूली ओह, कौन कहता है यह पागल है।

बालम मेरा बाप सालगराम कहता है कि मै पागल हूं।

नर्स देखो बालम, समझदार लड़के ज़िद नही किया करते।

बालम मामुलीराम, सिस्टर बोल रही है कि मैं समझदार लड़का हू।

मामूली बिल्कुल ठीक कह रही है सिस्टर, क्योंकि दूसरा पैदा ही नही हुआ ससार मे।

बालम तुम झूठ तो नही बोल रहे हो मामूलीराम।

मामूली बिलकुल नही, वरना देश का बण्टाढ़ार हो जाता।

बालम तुम मेरी कसम खाकर कहो कि मैं समझदार लड़का हू।

मामूली देखो मै खाऊगा कुछ नही क्योंकि आज मेरे उपवास है।

बालम अच्छी बात है। उतार लो कोट।

(मामूलीराम कोट उतारने लगता है)

तुम नही सिस्टर को उतारने दो। बेचारी पैदल चलकर आई है।

(सिस्टर तथा मामूलीराम कोट उतार कर उसे अन्दर ले जाते हैं। डॉक्टर व राजबहादुर उसी क्षण प्रवेश कर उन्हे देखते हैं।)

राजबहादुर आखिर ये क्या मुसीबत है सर?

डॉक्टर अरे पुराना केस है, पाचवी बार एडमिट हुआ है।

राजबहादुर रियली, साला बड़ा टिपिकल है। मुझे कहने लगा—तुम कितने दिनो से बीमार हो?

डॉक्टर अरे उसे मारो गोली। पहले यह बतलाओ, उस काम का क्या हुआ? क्योंकि जॉर्ज का तीन बार फोन आ चुका है।

राजबहादुर राजबहादुर पक्के गुरु का चेला है डॉक्टर साहब। मै काम पूरा करके फिर चर्च गया था।

डॉक्टर सब दवाइया मिल गईं? कोई तकलीफ तो नही हुई?

राजबहादुर जब दवाइया मेरे पास मौजूद थी तो तकलीफ होने का सवाल ही पैदा नही होता सर।

डॉक्टर रियली बडे स्मार्ट हो राजबहादुर। आज के बाद मैं तुम्हे राज बहादुर की बजाय टाईगर बोला करूगा।

(उठते हुए)

राजबहादुर आप माई बाप है सर! जो भी

(बीच मे ही)

डॉक्टर अरे क्या हुआ? उठ क्यो गए?

राजबहादुर मै चलूगा सर, पटनायक मिडवे पर मेरा इन्तजार करेगा!

डॉक्टर ओ के लेकिन जॉर्ज से सम्पर्क करते जाना।

राजबहादुर ओह, यस सर।

(राजबहादुर का प्रस्थान। फोन बजता है, रिसीवर उठाकर)

डॉक्टर डॉक्टर रस्तोगी कौन ! जॉर्ज? हा, हा, वो जस्ट तुम्हारे यहीं पहुच रहा है। बाय -

(सेठ पोकरमल प्रवेश करके)

सेठ पहुच नही रहा सर, मै पहुच गया हूँ।

डॉक्टर अरे, आइए सेठजी, आज सुबह सुबह कैसे आना हो गया?

सेठ एक तकलीफ देने आया हू सर।

(बालम प्रवेश करके)

बालम डॉक्टर साहब तुम्हारे बाप के नौकर है?

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर बालम !

बालम मेरे होते हुए यह आपको तक्लीफ देने आया है, सर।

डॉक्टर मामूलीराम ।

बालम सेठ साहब, यह टिंगू आपका कौन है ?

सेठ ये मेरा बेटा मगल है।

बालम लेकिन दाढ़ी मूछ देखते हुए तो यह तुम्हारा बाप लागे छै

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर बालम..

(मामुलीराम प्रवेश करके)

मामूली यस सर।

डॉक्टर इस कमबख्त को अन्दर ले जाओ और सिस्टर से बोलो इसके एनीमा लगाए।

(बीच मे ही)

बालम अभी-अभी लगाया था सर। देख लीजिए पाजामा गीला पड़ा है।

मामूली बालम ठीक कह रहा है सर।

डॉक्टर परवाह नही, सिस्टर से बोलो एक एनीमा और लगाए।

मामूली यस सर, अभी बोल देता हू (सेठ को पकड़कर) आइए।

(घबराकर)

सेठ डॉक्टर साहब।

(चिल्लाते स्वर मे)

डॉक्टर मामूलीराम, किसे ले जा रहे हो ?

(सेठ को छोड़कर)

मामूली सॉरी सर, आओ बालम।

बालम सेठ जी अगर चीखते नही तो अभी इनका भला हो जाता।

(मामूलीराम व बालम का अन्दर प्रस्थान)

सेठ यह तो अच्छा हुआ डॉक्टर साहब कि आपने उसे बीच मे टोक दिया वरना वो सच मे मेरे एनीमा ठोक देता।

(हसते हुए)

डॉक्टर नही-नही, ऐसे कैसे हो सकता है सेठ जी।

सेठ आपकी कसम डॉक्टर साहब, मुझे तो वैसे भी दो-तीन रोज से दस्त लग रहे है।

(हसते हुए)

डॉक्टर आपका भी जवाब नही सेठ साहब, रियली बड़े दिलचस्प आदमी हैं।

सेठ मै सच कह रहा हूं डॉक्टर साहब (मुह फाड़कर) देखिए, दही चावल खाते-खाते पूरा मुह छालो से भर गया है।

डॉक्टर खैर छोड़िए।

(बात काटते हुए)

सेठ एक बात बतलाइए डॉक्टर साहब, इस एनीमा और बालम का क्या राज है?

डॉक्टर ऐसा है सेठजी, कोई भी पागल एक विशेष बात को लेकर जरूर डरता है और हमारा बालम एनीमा लगाने से डरता है। जब कभी ये ज्यादा शरारत करने पर उतर आता है तो हम इसे एनीमा लगाने का डर दिखाते है।

सेठ लेकिन मेरे मगल के साथ इसका बिल्कुल उलटा है डॉक्टर साहब।

डॉक्टर क्या मतलब सेठ जी?

सेठ आपका बालम एनीमा लगवाने से डरता है और मेरा मगल एनीमा लगवाने से बहुत खुश होता है।

डॉक्टर बहुत खूब सेठ साहब, आपके मगल का भी जवाब नही।

सेठ जवाब तो उस ऊपर वाले का नही है डॉक्टर साहब, अब देखिए, भगवान ने एक ही औलाद दी है-वो भी ऐसी। पूरा समय हम मिया-बीबी इस पागल को देख-देख हसते है और अपनी किसमत को रोते है।

डॉक्टर घबराइए नही, सेठजी।

(बीच मे ही)

सेठ लाखो का धन्धा है डॉक्टर साहब, लेकिन हमारे पीछे सारा चौपट हो जाना है।

डॉक्टर नही-नही सेठजी, आखिर हम किस मर्ज की दवा है। आप बिलकुल न घबराइए, ईश्वर ने चाहा तो बहुत जल्द आपका मगल

(उसी क्षण प्रवेश करके)

बालम शनि बनकर सात साल के लिए सबको लग जाएगा।

डॉक्टर मामूलीराम ।

(प्रवेश करके)

मामूली यस सर।

डॉक्टर इस कमबख्त को अन्दर ले जाओ।

मामूली ले जा रहा हू सर।

डॉक्टर क्या ले जा रहे हो? यह हरामखोर दुबारा इस कमरे मे नही आना चाहिए वरना मैं तुम्हारी

(बीच मे ही)

मामूली नही आएगा सर, अगर इस बार यह इस कमरे मे आ गया तो मै इसकी टागे तोड़ डालूगा।

(बीच मे ही)

बालम अगर तुमने मेरी टागे तोड़ दी तो मै लगड़ा कहा जाऊगा, इसी कमरे मे पड़ा रहूगा।

मामूली आई एम सॉरी बालम।

(दोनो का बाहर प्रस्थान)

सेठ कुछ भी हो डॉक्टर साहब, मेरे मगल का मन यहा जरूर लग जाएगा। *मेरा मगल और आपका बालम खूब जमेगी यह जोड़ी।*

डॉक्टर ओह सेठ जी, मेरे लिए यह बालम ही पूरा सरदर्द है, इसलिए आप अपनी सुनवाइए कैसा चल रहा है स्वास्थ्य आपका?

सेठ आपकी दवाओं के सहारे अच्छी तरह खाने-पीने लगा हू डॉक्टर साहब। लेकिन वो सफेद वाले कैप्सूल खतम हो गए है।

डॉक्टर अरे हा, *(ब्रीफकेस खोलकर)* ये सैम्पल के कुछ कैप्सूल है। सुबह-साय खाना खाने के बाद एक एक खाइएगा। सब आराम हो जाएगा लेकिन सावधान, मक्खन आपके लिए हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

सेठ नही, नही, परहेज का मै शुरू से पक्का हू।

(नर्स प्रवेश करके)

नर्स यस सर।

डॉक्टर सिस्टर, यह मगल है। इसे बैड नम्बर सात पर एडमिट कर लो ओर हा, इसे कोई तकलीफ न हो, अपने सेठजी का बचा है।

नर्स मै पूरा ध्यान रखूगी सर। आओ मगल अन्दर चलते है।

(मगल अन्दर जाने मे आनाकानी करता है)

डॉक्टर देखो सिस्टर, यह ऐसे अन्दर नही चलेगा, ऐसा करो अन्दर से एनीमा केन लाकर इसे दिखलाओ।

नर्स यस सर।

(नर्स का प्रस्थान)

डॉक्टर इधर आओ मगल, देखो तुम सिस्टर के साथ अन्दर जाओ। अन्दर तुम्हारे लिए बहुत सारे खिलौने है। रेलगाड़ी, मोटरगाड़ी, हाथी, घोड़ा, बोलो तुमको कौनसा खिलौना अच्छा लगता है?

(उसी क्षण नर्स एनीमा केन लेकर प्रवेश करती है। मगल नर्स के हाथ मे एनीमा केन देखकर खुश होता है और उछलता हुआ नर्स के साथ अन्दर चला जाता है)

सेठ अच्छा डॉक्टर साहब, अब मैं भी इजाजत चाहता हू।

डॉक्टर फिर आइएगा सेठ जी।

सेठ अब आना-जाना तो लगा ही रहेगा, डॉक्टर साहब!

(सेठ का बाहर की ओर प्रस्थान और उसी क्षण राजबहादुर का प्रवेश)

डॉक्टर अरे! आओ राजबहादुर, मैने अभी-अभी तुम्हे याद किया था। बडी लम्बी उम्र है।

राजबहादुर अपने धन्धो मे ज्यादा लम्बी उम्र कहा पडी है सर, आज सुबह किसी भले इन्सान का मुह देखा था वरना अभी एक ट्रक के नीचे आ जाता।

डॉक्टर जरूर आईना देखा होगा।

(दोनो हसते है—उसी क्षण नर्स प्रवेश करके)

नर्स यह बालम बहुत परेशान कर रहा है सर, मगल को घोड़ी बनाकर पूरे वार्ड मे चक्कर लगा रहा है।

डॉक्टर ओह सिस्टर, किसी भी तरह निभाओ उसे, साला बहुत पैसे वाली पार्टी है। अगर ज्यादा परेशान करे तो उसे

(बीच मे ही)

नर्स मै अपनी ओर से पूरी कोशिश कर रही हू सर लेकिन वो

(बीच मे ही)

डॉक्टर प्लीज कैरी ओन, उसके लिए मैं तुम्हे एक्सट्रा एलाउन्स दिला दूगा।

नर्स थैक्यू सर।

(नर्स का प्रस्थान)

राजबहादुर माफ करना सर, यह लड़की कौन है?

डॉक्टर क्यो क्या हुआ?

राजबहादुर लगता है मैंने इसे पहले भी कही देखा है।

डॉक्टर ओह नो-नो राजबहादुर, तुम्हे कोई गलतफहमी हुई है, क्यो गरीब पूना की रहने वाली है। बेचारी का हसबैण्ड उसकी अ सामने एक रोड एक्सीडेण्ट मे मारा गया।

राजबहादुर सॉरी सर, लेकिन मैंने इसे कही देखा जरूर है।

डॉक्टर मै उसे दुबारा बुलाता हू, ध्यान से देख लो।

राजबहादुर नही-नही सर, फिर कभी सही, अभी हमे गेलॉर्ड पहुचना बहुत है, क्योंकि डॉक्टर नरूला अब तक वहा पहुच गया होगा।

डॉक्टर ओह यस! (कॉल बेल बजाकर) मामूलीराम!

(मामूलीराम प्रवेश करके)

मामूली यस सर!

डॉक्टर देखो, मै एक जरूरी काम से बाहर जाकर आ रहा हू, अग खास मैसेज हो तो मुझे बतलाए कोड पर फोन कर देना।

मामूली यस सर।

(डॉक्टर व राजबहादुर का बाहर की ओर प्रस्थान। उसी क्षण मगल को घोड़ी बनाकर कमरे मे प्रवेश करता है और मामुली देख कर दोनो रोने लग जाते है। मामुलीराम भी उन्हे देखत हुए पूछता है)

क्या बात है बालम, रो क्यो रहे हो?

बालम डॉक्टर मामूलीराम

(रोते हुए)

मामूली क्या बोला प्लीज, जरा दुबारा बोलना।

बालम मगल की तबीयत ठीक नही है।

मामूली क्या हुआ इस मच्छर को, थोड़ी देर पहले तो ये बिलकुल मग की तरह जबाड़ा फाड़ रहा था।

बालम नीद मे बहकता है और सर से जुए निकालकर अकेले खाता है

मामूली गलत बात है मगल, इन्सान को हर चीज पाण्डवो की तरह बाट

(बीच मे ही।

मोटी आवाज

बालम डॉक्टर रस्तोगी राम जी कहा है मामूलीराम ?

मामूली डॉक्टर साहब सिस्टर के साथ सिनेमा देखने गए है।

बालम सिस्टर के साथ ? सिस्टर मुझे भी बहुत अच्छी लगती है।

मामूली तो तुम भी मेरी तरह सिस्टर से प्यार करते हो बालम ?

बालम नही, यह बात नही है। मुझे सिस्टर के कपड़े बहुत अच्छे लगते है, सफेद सफेद।

मामूली लेकिन सिस्टर तो तुम से सच्चा प्यार करती है।

बालम ऐसी बात है तो मै सिस्टर से जल्दी शादी कर लूगा, तुम मेरी बारात म चलोगे मामूलीराम ?

मामूली जरूर चलूगा और डॉक्टर साहब भी चलेंगे तुम्हारी बारात मे।

बालम सिस्टर नही चलेगी मेरी बारात मे ?

मामूली सिस्टर से शादी और सिस्टर भी बारात मे (जरा सोचकर) हा हां, सिस्टर भी चलेगी तुम्हारी बारात मे।

(बालम और मगल खुश होते हुए नाचते हुए गाते है)

बालम सिस्टर भी चलेगी ?

(बीच मे बोलता है)

मामूली मेरी बारात मे।

बालम सिस्टर भी चलेगी।

मामूली मेरी बारात मे।

बालम सिस्टर भी चलेगी।

मामूली मेरी बारात मे।

(डॉक्टर रस्तोगी प्रवेश करके)

डॉक्टर क्या हो रहा है यहा ?

बालम डॉक्टर साहब, मै सिस्टर के साथ शादी कर रहा हू।

(नर्स का प्रवेश)

डॉक्टर सिस्टर, इस कमबख्त को अन्दर ले जाओ और दफा करो यहा से।

नर्स बालम अन्दर चलो, मै तुम्हे तैयार करती हू।

बालम आओ मगल, पहले बान की रस्म पूरी कर ले।

(नर्स, मगल व बालम का अन्दर प्रस्थान)

डॉक्टर मामूलीराम मेरे हाथ धुलाओ।

मामूली यस सर।

(मामूलीराम हाथ धुलाने लगता है। उसी क्षण पुलिस इन्सपेक्टर एक भुलक्कड़ के रूप मे लुगी पहने हुए प्रवेश करता है। मामूलीराम उसे देखने लगता है)

डॉक्टर मामूलीराम पानी चालू रखो।

पु इन्स नमस्ते डॉक्टर।

(डॉक्टर उसे देखता है)

मामूली हाथ धोइए डॉक्टर साहब।

पु इन्स डॉक्टर साहब, मेरी याददाश्त ठीक नही, बिलकुल भूख नही लगती है उसको।

(बीच मे ही)

मामूली याददाश्त तुम्हारी ठीक नही और भूख उसे नही लगती ?

डॉक्टर आप बैठिए।

पु इन्स सब्जी लेने जाता हू, सब्जी वाले को पैसे देने ही भूल जाता हू। रास्ते मे धर्मपत्नी मिल जाती है तो उसे भी पूछ लेता हू—नमस्ते बहन जी, आपको पहले भी कही देखा है।

डॉक्टर आप एक मिनट बैठिए।

पु इन्स कल कितने बजे आऊ मैनेजर साहब ?

(मामूलीराम मुह पर हाथ रखकर हसता है)

डॉक्टर क्या तकलीफ है आपको ?

पु इन्स कौनसी तकलीफ ?

डॉक्टर आपका शुभ नाम ?

पु इन्स पिछले साल तीन सौ चालीस की ली थी।

डॉक्टर मै आपकी साइकिल के बारे मे नही पूछ रहा हू।

(पुलिस इन्सपेक्टर अन्दर जाने लगता है। मामूलीराम उसे पकडते हुए छुपाकर पत्र देता है और कहता है)

मामूली ऐसा है भुलक्कड़सिंह जी, आप अन्दर उस दरवाजे से आए थे अन्दर जाने के लिए कुछ दिन ठहर कर आइए और सुनो, आईन्दा कभी घर से बाहर निकले तो पैण्ट पहन कर निकला करो।

(पुलिस इन्सपेक्टर पैरो की ओर देखता है और दौड़ते हुए बाहर निकल जाता है)

डॉक्टर भगवान जाने यहां-वहां से आ जाते हैं।

मामूली मैं बतलाऊं सर?

डॉक्टर तुम रहने दो और अन्दर जाकर अपना काम करो?

मामूली यस सर।

(मामूलीराम का अन्दर प्रस्थान और उसी क्षण बाहर की ओर से माला का प्रवेश)

डॉक्टर अरे! माला डार्लिंग तुम?

माला डार्लिंग गई भाड़ मे, पहले मुझे यह बतलाओ, अगर तुम्हें घर आने की फुर्सत नही तो तुमने मुझ से शादी ही क्यो की?

डॉक्टर गलती हो गई डार्लिंग, मैं जरा जल्दी मे था।

(बिगड़ते हुए)

माला क्या बोला तुमने?

डॉक्टर मेरा मतलब जरा धीरे डाटो डार्लिंग, अगर कोई सुनेगा तो क्या सोचेगा हमारे बारे मे।

माला अगर इतना ही अपनी बदनामी का डर है तो अपनी आदतों से बाज क्यो नही आ जाते?

डॉक्टर ओह! प्लीज माला डार्लिंग

माला मैंने बोला ना डार्लिंग गई भाड़ मे। कोई जरूरत नही मुझे माला या डार्लिंग कहने की। शर्म नही आती तुमको मुझे डार्लिंग कहते हुए?

डॉक्टर ओह! माला

माला मै तुम्हारी लगती ही क्या हू। जब देखो मरीज, जब देखो हॉस्पिटल, पैसा, मै पूछती हू आखिर क्या करोगे तुम इतने पैसे का? कौन है तुम्हारा खाने वाला?

डॉक्टर प्लीज माला, मुझे समझने की कोशिश करो।

माला पूरे आठ साल से समझ रही हू तुम्हे और तुम्हारे धन्धे को। अब भी कोई बाकी रह गया है तुम्हे समझने मे?

डॉक्टर भगवान के लिए जरा धीरे बोलो माला, मै तुम्हारे पाव पड़ता हू।

माला छी छी-छी, पाव पड़ो मरीजो के, पागलो के, जिससे तुम्हारा पेट भरता है, यह भी कोई जिन्दगी है रात गए घर लौटते हो, सुबह हुआ नही कि तुम्हे हॉस्पिटल जाना है।

डॉक्टर ओह! माला डार्लिंग, अब मै तुम्हे कैसे समझाऊं।

माला न खुद चैन से सोते हो और न दूसरो को चैन से सोने देते हो ? नीद मे चिल्लाते हो, मामूलीराम ले जाओ इसे, नर्स इसके एनीमा लगाओ।

(माला के चिल्लाने की आवाज सुनकर नर्स, मामूलीराम व बालम तीनो दौड़कर कमरे मे प्रवेश करते है और एक साथ तीनो बोलते है)

यस सर-यस मैडम, यस मेम।

(बिगड़ते हुए)

माला किसने बुलाया है तुम लोगो को ? आई से यू गैट आऊट ।

(बीच मे ही)

बालम हा हा, किसने बुलाया तुम लोगो को जाओ यहा से, आई से यू पे कोलगेट

(नर्स व मामूलीराम का प्रस्थान)

आपने तो मुझको याद किया था मेम साहब ?

माला शटअप!

बालम मेम साहब अगर आपको कोई एतराज नही है तो मै आपके साथ शादी करने को तैयार हू।

(चिल्लाते स्वर मे)

माला शटअप ।

(चिल्लाते हुए)

डॉक्टर बालम मामूलीराम ।

बालम मेम साहब आप जाना नही, मै नए कपड़े बदलकर

(बालम का प्रस्थान)

माला देखा, यह है तुम्हारी जिन्दगी, यही है तुम्हारे मनारजन का साधन ? एक से एक बढ़कर पागल। खूबसूरत नर्स, तुमको घर आने की जरूरत ही क्या है ?

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर तुम मेरे चरित्र पर शक कर रही हो माला। मै इसे कभी बर्दाश्त नही करूगा।

माला मुझे आख दिखा रहे हो ? फोड़ डालूगी ये आखे। इसलिए लाए थे

शादी करके कि दिन भर मै अकेली बैठी तुम्हारे जी को रोती रहू और तुम इन पागलो के

(बीच मे ही)

डॉक्टर ओह! माला, क्या बच्चो जैसी हरकते कर रही हो। आखिर क्या कमी है तुमको यहा? लाखो की जायदाद है। बैठने को कार, कोठी बगला और क्या चाहिए तुमको? आखिर क्या तकलीफ है तुमको?

माला क्या बोला तुमने? तकलीफ। तकलीफ हो तुम्हे और तुम्हारे खानदान को, बाजार जाऊ तो अकेली सिनेमा जाऊ तो अकेली

(उसी क्षण बालम प्रवेश करके)

बालम अकेली क्यू मेम साहब? मै चलूगा तुम्हारे साथ सिनेमा देखने। जोरू का गुलाम बहुत बढ़िया फिल्म है।

(चिल्लाकर)

डॉक्टर बालम नर्स ।

बालम आप जाना नही मेम साहब, मै पैसे लेकर आ रहा हू।

(बालम का तेजी से अन्दर की ओर प्रस्थान और नर्स प्रवेश करके)

नर्स यस सर।

(डाटते हुए)

डॉक्टर गेट आऊट।

(नर्स का प्रस्थान)

माला तुमसे तो यह पागल अच्छा जो पागल होते हुए भी सिनेमा देखने का शौक रखता है।

डॉक्टर तो कर लो ना शादी इस पागल से?

(गरजते हुए)

माला क्या बोला तुमने? मै और इस पागल से शादी कर लू और वो भी तुम्हारे जीते जी ?

डॉक्टर मेरा यह मतलब नही था डार्लिंग

माला खबरदार, अगर मुझे डार्लिंग कहा। मर गई तुम्हारी माला, आज के बाद मेरा और तुम्हारा कोई रिश्ता नही। मै अभी, इसी वक्त अपने डैडी के यहा जा रही हू। मै तुम्हे कोर्ट मे खड़ा करवाऊगी। तुमसे तलाक लूगी।

(तेज रफ्तार से माला का बाहर की ओर प्रस्थान। डॉक्टर रस्तोगी माला-माला करता हुआ उसके पीछे ही निकल जाता है और उसी क्षण मामूलीराम प्रवेश करके)

मामूली माला माला यह तुमने क्या कर डाला?

(मामूलीराम अपना एक हाथ ऊपर उठाए कमरे के बीच मे खड़ा हो जाता है और उसी क्षण बालम पाच-सात पागलो के साथ रेलगाडी बनाकर कमरे मे प्रवेश करता है। दो-तीन चक्कर लगाने के बाद अपनी एक मुट्ठी बन्द करके)

बालम बोल मामूलीराम, मेरी मुट्ठी मे क्या है?

(मामूलीराम कुछ क्षण सोचकर)

मामूली रेलगाडी !

बालम साले देखकर बोलता है?

(सारे पागल नाचने लगते हैं)

साले देखकर बोलता है, साले देखकर बोलता है।

(अन्दर की ओर से नर्स तथा बाहर की ओर से सेठ पोकरमल प्रवेश करके उन्हे देखते हैं और वो भी नाचने लगते है। कुछ क्षणो बाद डॉक्टर रस्तोगी और राजबहादुर प्रवेश कर उन्हे देखते है और डॉक्टर रस्तोगी चिल्लाकर)

डॉक्टर मामूलीराम नर्स!

(सारे लोग अन्दर की ओर भाग जाते हैं)

सेठ पोकरमल जी, इन पागलो के साथ तुम भी पागल बन गए?

सेठ नही-नही डॉक्टर साहब, ऐसी तो कोई बात नही है, लेकिन अपने बेटे मगल को नाचते हुए देखकर मेरा भी नाचने का मूड बन गया।

डॉक्टर वैसे आपकी उम्र को देखते हुए आप अच्छा नाच लेते है।

सेठ नाच तो क्या, बस यू ही जरा कोशिश कर लेता हू।

डॉक्टर अच्छी बात है, अब आप जा सकते है।

सेठ जय रामजी की।

(सेठ का बाहर की ओर प्रस्थान)

राजबहादुर कुछ भी हो सर, मोटी आवाज होते हुए भी आपका सिस्टर बहुत अच्छा डान्सर भी है।

डॉक्टर तो तुम भी आशिक बन गए हमारी सिस्टर के?

राजबहादुर अरे, नहीं सर! मैं इस धन्धे में कभी नहीं पड़ा।

(हसते हुए)

डॉक्टर लीव इट, उन कैप्सूल का क्या हुआ? क्योंकि वो लोग अभी यहाँ पहुचने वाले हैं, कहीं ऐसा न हो कि ये पार्टी भी हाथ से निकल जाए।

राजबहादुर यह गुस्ताखी मेरे से कैसे हो सकती है सर। मैं कैप्सूल लेकर सीधा आपके पास पहुचा हू। यह लीजिए कैप्सूल टेरामाईसीन

(राजबहादुर ब्रीफकेस खोलकर कुछ पैकिट निकाल कर डॉक्टर रस्तोगी को थमाता है और उसी क्षण बालम तथा मामूलीराम घुटनो के बल चलकर कमरे मे प्रवेश करके चुपके से दोनो को छुपकर देखते है कि एकाएक डॉक्टर रस्तोगी की नजर उन पर पड़ती है)

डॉक्टर अरे, तुम लोग यहां छुपे क्या कर रहे हो?

बालम ये मामूलीराम बार बार एनीमा लगाता है सर।

मामूली ये बालम बहुत परेशान कर रहा है सर।

बालम तुम एनीमा क्यो लगाते हो?

मामूली तुम परेशान क्यो करते हो?

(दोनो आपस मे झगडना शुरू कर देते है)

बालम एनीमा!

मामूली परेशान!

बालम एनीमा!

मामूली परेशान!

बालम एनीमा!

(डॉक्टर चिल्लाकर)

डॉक्टर शट अप !

(दोनो अन्दर भाग जाते हैं)

राजबहादुर रियली बडे बिगडे हुए नवाब है सर?

डॉक्टर इन लोगो ने हमारी बाते तो नही सुन ली?

राजबहादुर ओह नो सर! बालम तो साला एकदम पागल का बच्चा है और मामूलीराम मेरा खास पिल्ला बन गया है। मैं रोजाना उसे दस-बीस

रुपये पकड़ा देता हू। कुत्ते के आगे रोटी का टुकड़ा फेंको, साला दुम हिलाने लगता है।

डॉक्टर रियली मै तो एक बार बिलकुल डर गया था।

राजबहादुर वाह सर, शेर मार लेते है और छिपकली से डरना?

डॉक्टर हा, कुछ ऐसा ही है।

(बाहर की ओर से जॉर्ज, डॉक्टर पटनायक व सुलेमान का प्रवेश)

अरे, आओ सुलेमान! मै तुम लोगो का ही इन्तजार कर रहा था।

(बीच में ही)

राजबहादुर हा सर, मेरे लिए क्या आदेश है?

डॉक्टर हा राजबहादुर, तुम फौरन जाओ और डॉक्टर रायजादा से सम्पर्क करो क्योकि वो मिडवे पर हम लोगो का इन्तजार करेगा।

(कॉलबेल बजाता है)

राजबहादुर यस बॉस, मैं उसे अभी कवर कर लेता हू।

(राजबहादुर का प्रस्थान व नर्स प्रवेश करके)

नर्स यस सर।

डॉक्टर हा सिस्टर, दूसरा स्टाफ ड्यूटी पर आ गया?

नर्स यस सर। आज नाइट मे शालिनी दिनकर आया है।

डॉक्टर गुड, मामूलीराम ऑफ हो गया?

नर्स यस सर, अभी अभी घर गया है।

डॉक्टर अच्छी बात है। अब तुम भी जा सकती हो लेकिन जाने से पहले बालम तथा मगल को कुछ सैडेशन दे देना।

नर्स मैने दोनो को डाईजापॉम इन्जेक्ट कर दिया है सर।

डॉक्टर गुड।

नर्स गुडनाइट सर।

डॉक्टर गुडनाइट।

(नर्स का प्रस्थान)

जॉर्ज बुरा न माने तो मै एक बात कहू सर।

डॉक्टर हा हा क्या बात है?

जॉर्ज इस नर्स को मैने सिविल ड्रेस मे किसी पुलिस स्टेशन पर देखा है।

डॉक्टर यू आर राइट, इसका हसबैण्ड कुछ दिनो पहले एक सड़क दुर्घटना मे मारा गया था इसलिए

(बीच मे ही)

जॉर्ज ओह सॉरी सर।

(बाहर की ओर से राजबहादुर प्रवेश करके)

डॉक्टर क्या बात है राजबहादुर, तुम वापस क्यो आ गए ?

राजबहादुर एक बुरी खबर है बॉस, कुछ ए. सी एम एजेण्ट अपनी ऑफिस

(उठते हुए)

डॉक्टर ओह नो नो राजबहादुर, ऐसा नही हो सकता वरना हम बर्बाद हो जाएगे।

राजबहादुर उमर खान हमारे विश्वास का आदमी है बॉस, वो गलत सूचना नही दे सकता।

डॉक्टर बिलकुल गलत इनफोरमेशन है ये—वो अपने बाप का भी नही है, फिर भी हमे होशियार रहना चाहिए।

जॉर्ज यू आर राइट बॉस।

डॉक्टर मिस्टर पटनायक, तुम अपने सारे साथियो के साथ फौरन सी-साइड पर पहुचो, हम तुम्हारा नारियल के झुण्ड मे इन्तजार करेगे।

पटनायक यस बॉस लेकिन

(उसी क्षण अन्दर की ओर से बालम व पाचोली दुल्हन तथा मगल को दूल्हा बनाकर दूसरे पागलो के साथ गाते हुए प्रवेश करते है)

केसरियो लाडो जीवतो रे ओ लो जितो जितो

(डॉक्टर रस्तोगी चिल्लाते हुए)

डॉक्टर मामूलीराम ।

(पाचोली साडी उतार कर फेकते हुए)

पाचोली वो ड्यूटी ऑफ होकर घर चला गया सर।

(बिगडते हुए)

डॉक्टर नर्स ।

(बालम साड़ी उतार कर फेकते हुए)

बालम यस सर। सिस्टर मुझे चार्ज देकर घर चला गया क्योंकि उसका एक बॉय फ्रैण्ड उसे लेने आ गया था।

डॉक्टर शट अप।

बालम हमारे लिए क्या आदेश है सर?

(बिगड़ते हुए)

डॉक्टर आई से यू गैट आऊट

(बालम सारे पागलो के साथ अन्दर भाग जाता है)

पटनायक रियली ये लोग आपको बोर तो नही होने देते होंगे बॉस?

राजेन्द्र ऑल आर हैडेव मिस्टर जॉर्ज?

जॉर्ज यस सर।

डॉक्टर तुम जरा गेट पर वॉच रखो।

जॉर्ज यस बॉस।

(जॉर्ज का बाहर की ओर प्रस्थान)

डॉक्टर राजबहादुर, तुम भी जरा होशियार रहना, मै जरा चीफ से बात करता हू।

राजबहादुर यस बॉस, राजबहादुर जिन्दा मच्छर भी अन्दर नही घुसने देगा।

(डॉक्टर रस्तोगी ब्रीफकेस खोलकर ट्रासमीटर निकाल कर)

डॉक्टर हैलो, डॉक्टर परपा ओवर। डॉक्टर रस्तोगी हियर ओवर। हैलो डॉक्टर परपा- यस बॉस ओवर। एक बुरी खबर है बॉस ओवर। ए सी एम के एजेण्ट ओवर। यस बॉस, यस बॉस ओवर। आज रात दो बजे हम इस सिटी से डिपार्चर

(उसी क्षण पुलिस इन्सपेक्टर खान जॉर्ज को धकेलते हुए कमरे मे प्रवेश करके)

पु इन्स हैण्ड्स अप। खबरदार अगर किसी ने अपनी जगह से जरा भी हिलने की कोशिश की, पूरा क्लिनिक चारो ओर से पुलिस फॉर्स से घिरा हुआ है लाईन अप

(सारे बदमाश एक घेरे मे खडे हो जाते है उसी क्षण सेठ पुगलिया प्रवेश करता है)

डॉक्टर सेठ पुगलिया तुम?

पु इन्स सेठ पुगलिया नही, सी बी आई इन्सपैक्टर मल्होत्रा।

सेठ वो सफेद वाले कैप्सूल खत्म हो गए सर।

(उचकते हुए)

डॉक्टर ओह, यू ब्लडी। मैं तुम्हें देख लूंगा।

सेठ हैन्ड्स अप, जगह से जरा भी हिले तो खोपड़ी उड़ा दूंगा।

पु इस राजबहादुर उर्फ मे थोमस, हसीनो के सौदागर। डॉक्टर पटनायक माल सब ठीक है। पांच समय के नमाजी सुलेमान भाई। डॉक्टर जैसे महान् प्रोफेशन को बदनाम करने वाले दरिन्दे।

(उसी क्षण मौका पाकर राजबहादुर पुलिस इन्सपेक्टर को दबोच लेता है)

राजबहादुर हैन्ड्स अप पिस्टल फेंक दो सेठ पुगलिया, वरना छ की छ गोलिया इन्सपैक्टर के सीने मे उतार दूगा।

(सेठ पुगलिया से डॉक्टर पिस्टल छीन लेता है)

डॉक्टर शाबाश, राजबहादुर, आई प्राऊड ऑफ यू।

राजबहादुर अपने खुदा को याद करलो इन्सपेक्टर खान!

डॉक्टर सेठ पुगलिया?

राजबहादुर सारे जहा से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा

(सारे बदमाश जोरो से हसने हैं और उसी दौरान अन्दर की ओर से बालम दूसरे पागलो के साथ माल को हाथो पर बैठा कर गाते हुए प्रवेश करता है)

हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की,

हाथी घोडा पालकी, जय कन्हैया लाल की।

(चक्कर लगाते हुए बालम राजबहादुर को दबोच लेता है)

बालम हेण्ड्स अप, अगर जरा भी होशियारी की तो सीना छलनी कर दूगा।

(उसी क्षण नर्स व मामूलीराम प्रवेश करते है)

डॉक्टर सिस्टर तुम? मामूलीराम तुम लोग अभी तक घर नही गए? बालम यह पिस्टल है फेंक दो इसे।

(दहाड़ते हुए)

बालम हेण्ड्स अप मामूलीराम इस कमबख्त को अन्दर ले जाओ और सिस्टर से बोलो इसके एनीमा लगाए।

(दहाडते हुए)

अर्जुन सिंह।

(नर्स कैप उतारकर पोजीशन लेते हुए)

नर्स यस सर।

बालम तलाशी लो इस बदमाश की।

नर्स यस सर।

बालम जीवराज सिंह।

(पोजीशन लेते हुए)

मामूली यस सर।

बालम चैक दा ड्रॉवर्स।

मामूली यस सर।

(तलाशी लेते हुए)

नर्स क्यो डॉक्टर साहब, सिस्टर की मोटी आवाज से धोखा खा गए?

(सेठ पुगलिया तथा मामूलीराम सारे बदमाशो की तलाशी लेते है। नर्स पोजीशन लेते हुए)

सर, कैप्सूल टेरामाईसिन

बालम याने हीरे? इन्सपैक्टर खान!

(पोजीशन लेते हुए)

पु इन्स यस सर।

बालम पहचानते हो इन बदमाशो को?

पु इन्स इन बदमाशो को कौन नही पहचानता सर। इन लोगो ने कई बार पुलिस को धोखा दिया है। एक बार तो काफी देर तक सी-साइड पर इन लोगो के साथ हमारा मुकाबला भी हुआ लेकिन ऐन वक्त पर ये लोग हैलीकॉप्टर द्वारा उड़ा लिए गए।

सेठ इस बदमाश को चाहते तो हम कभी का पक्ड़ लेते सर लेकिन आपके आदेशानुसार हमे इनकी पूरी गैग को ही पकड़ना था।

(राजबहादुर कुर्सी उठाने की कोशिश करता है लेकिन बालम गरजते हुए)

बालम हैण्ड्स अप अब ज्यादा चालाकी ठीक नही राजबहादुर, क्योंकि तुम अपने पूरे परिवार के साथ अपनी मजिल तक पहुच चुके हो, अर्जुन सिंह?

(पोजीशन लेते हुए)

नर्स यस सर।

बालम इन्सपैक्टर मल्होत्रा।

सेठ यस सर।

बालम ले चलो इन बदमाशों को। स्टार्ट

मामूली हाथ ऊपर रखते हुए

(सारे बदमाश हाथ ऊपर उठाए दो कदम चलते हैं और फ्रीज हो जाते हैं और धीरे-धीरे मंच पर अंधकार फैलने लगता है)

'मोटी आवाज'

आप बोल दीजिये

आप बोल दीजिये

'आप बोल दीजिये' का प्रदर्शन कई मर्तबा किया जा चुका है लेकिन सब से पहले इस नाटक का प्रदर्शन दिनाक 3 अक्टूबर 1977 को राजकीय टॉउन हाल, बीकानेर मे माननीय मुख्य अतिथि श्रीमान सी एन वैष्णव, आयकर आयुक्त, राजस्थान, जयपुर एव श्रीमान् एम लाल, आयकर उपआयुक्त, बीकानेर की अध्यक्षता मे खेला गया। इसमे इन कलाकारो ने भाग लिया—

सर्वश्री गोपीबल्लभ गोस्वामी	*बरफीचन्द*
सूरजसिंह पवार	*भेवरचन्द*
सुश्री इन्दुबाला भट्ट	*माधुरी*
सुश्री अर्चना भट्ट	*इमरती*
गीतकार	*मोहम्मद सदीक, रजब अली*
सगीतकार	*मनोहर सिंह दईया*
लेखक निर्देशक	*सूरज सिंह पवार*

आप बोल दीजिये

पर्दा उठता है। मच पर हल्के हरे एव नीले रग का प्रकाश।

सुबह का समय। बरफीचन्द का मकान और उसी का एक आधुनिक ढग से सजाया हुआ कमरा। कमरे मे बैठी बरफीचन्द की धर्मपत्नी इमरती फिल्मफेयर पढ़ रही है और फोन की घण्टी लगातार बजती ही जा रही है। अन्दर की ओर से चाय की ट्रे लेकर बरफीचन्द कमरे मे प्रवेश करता है। इमरती फिल्मफेयर पढ़ते-पढ़ते फोन की तरफ इशारा करते हुए)

इमरती जरा सुनना।

(रिसीवर उठाकर)

बरफी हैलो। आप कौन साहब बोल रहे है? आप सिर्फ तनिक-सा इन्तजार कीजिए। मै अभी बात करवा देता हू। तुम्हारा फोन है मेम साहब।

इमरती कौन है पूछा नही तुमने?

बरफी कोई श्रीमती जी बोल रही है।

इमरती यह तुम कैसे कह सकते हो कि कोई श्रीमती ही बोल रही है? मेरी कोई मिस दोस्त नही हो सकती?

बरफी मेरा मतलब किसी लेडीज आवाज से है, मेम साहब।

(रिसीवर पकड़ते हुए)

इमरती इमरती बोल रही हू। कौन? अरे रीता बहन, गुड मार्निंग। बड़ी लम्बी उम्र पाई है यार, नही तो क्या मैंने अभी-अभी तुम्हे याद किया था *(हसते हुए)* हा-हा जरूर चलूगी लेकिन वो माधुरी की बची अभी तक यहा नही पहुची है। बस, मै उसके आते ही पहुच जाऊगी। गर्मागर्म समोसे सामने टेबिल पर पड़े हुए है *(हसते हुए)* तुम्हारे जीजाजी ने बनाए है। अरे क्या बताऊ, समोसे तो बहुत ही बढ़िया व खस्ता बनाते है। हा-हा, क्यो नही, एनी टाईम वेलकम *(हसते हुए)* बाय।

बरफी समोसे खाओ ना मेम साहब, ठण्डे हो रहे हैं।

इमरती लेकिन चाय का क्या हुआ?

बरफी बस, तैयार है। अभी लेकर आता हू।

इमरती चाय बनाने मे कितना समय लगा देते हो?

बरफी सॉरी मेम साहब। मै जरा रात वाले बरतन साफ करने मे लग गया था।

इमरती कितनी बार कह चुकी हू कि रात के बरतन रात को ही साफ कर लिया करो, लेकिन तुम्हे तो सोने की जल्दी रहती है।

बरफी मैं बरतन साफ कर रहा था, लेकिन तुमने मुझे बीच मे ही पान-पराग का डिब्बा लेने बाजार भेज दिया था।

इमरती तो कौन-सा विलायत भेज दिया था मैंने। वापस आकर क्या झख मार रहे थे?

बरफी वापस आते ही तुमने पैर दबाने को बोल

(बीच मे ही)

इमरती अच्छा-अच्छा, बाते ना बनाओ। मैं तुम्हे कितनी बार कह चुकी हू कि किचन मे सूट पहन कर काम मत किया करो। मालूम है किस भाव का कपड़ा है ये?

बरफी लेकिन ये सूट तो तुमने उस बरतन बेचने वाली से लेकर

(बीच मे ही चिल्लाते स्वर मे)

इमरती तो उसने कौनसा फोकट का दिया था और सुनो, किसी और को मत बोल देना कि यह सूट फुटपाथ से खरीदा हुआ है।

बरफी यह मै किसी को क्यो कहूँगा। वैसे एक बार घेवरचन्द जी ने मुझे काफी जोर देकर पूछा भी था कि मैने यह सूट कहा से सिलवाया *(मुस्कराकर)* लेकिन मैने फौरन ही बोल दिया कि मेरी मिसेज के अकल ने विलायत से भेजा है।

इमरती शाबाश! रियली तुम

(इमरती एक फूल सर मे लगाने को देती है)

प्लीज जरा इसे मेरे जूड़े मे लगा दो।

(जूड़े मे फूल लगाते हुए)

बरफी लेकिन उस रोज मुझे घेवरचन्द जी पर बड़ा गुस्सा आया। कहने लगे कि आजकल तुम्हारी मिसेज के अकल देहली, जामा मस्जिद के पास आकर ठहरे हुए है।

(पीछे धकेलते हुए)

इमरती — अब भाषण बन्द करो, जल्दी से चाय लेकर आओ। मुझे बाहर जाना है।

बरफी — अभी लेकर आता हू मैडम, लेकिन तुम समोसा खाओ, ठण्डे हो जाएगे।

इमरती — सुन लिया, तुम चाय लेकर आओ।

बरफी — अभी लाता हू मेम साहब।

(जाने लगता है)

इमरती — जरा सुनना।

बरफी — यस मेम साहब। आपने मुझसे कुछ कहा?

इमरती — आज तुम, इतनी जल्दी तैयार होकर कहा जाने की तैयारी मे हो?

बरफी — जा तो कही नही रहा पर आजकल मै, पहले से तैयार होकर काम मे लग जाता हू ताकि काम खत्म होते ही सीधा ऑफिस चला जाऊ।

इमरती — लेकिन आज तो छुट्टी का दिन है बुद्धूप्रकाश जी?

(मुस्कराते हुए)

बरफी — ओह सॉरी, सचमुच आज तो अवकाश है। मै तो भूल ही गया। अरे हा आज तुम्हे भी तो अग्रेजी फिल्म देखने के लिए जाना है मेम साहब।

इमरती — क्या करू वो माधुरी की बच्ची अभी तक नही आई है। पिक्चर तो कभी की शुरू हो गई होगी।

बरफी — तो आप अकेली क्यो नही चली जाती मेम साहब।

इमरती — अग्रेजी फिल्म मे अकेले जाना मुझे बिलकुल अच्छा नही लगता। कोई न कोई कम्पनी तो होनी ही चाहिए। अरे हा तुम

(बीच मे ही)

बरफी — नही-नही मेम साहब। मै तुम्हारे साथ फिल्म देखने कैसे चल सकता हू। आज छुट्टी का दिन है। मुझे ढेर सारे कपडे धोने है और आज साथ तुम्हारी दोस्त खाने पर आने वाली है। उनके लिए मुझे खाना भी बनाना है। वैसे कम्पनी के लिए तुम्हे क्या कमी है, आज विमल भी शहर आया हुआ होगा।

इमरती — अरे हा, मैं तो भूल ही गई थी।

बरफी — या माधुरी को फोन करके पूछ लो कि किस बात की देर है। अभी तक आई क्यो नही?

इमरती उस कजूस ने फोन कहा लगा रखा है।

बरफी रियली उनके यहा तो फोन नही लगा है, लेकिन मेम साहब

(गुस्सा दिखाते हुए)

इमरती तुमने आर ए एस के अलावा एम ए इग्लिश लिट्रेचर मे किया है। चौबीसो घण्टे मुझे मेम साहब मेम साहब बोलते रहते हो। मैडम या डार्लिंग नही बोला जाता तुमसे?

बरफी सॉरी मेम साहब मेरा मतलब

(बीच मे ही चिल्लाकर)

इमरती काम खत्म होने मे कितनी देर है?

बरफी नाश्ता वगैरह सभी तैयार है। बस थोड़े से बरतन साफ करने हैं अभी कर लेता हू। कपड़े धोकर मकान की धुलाई बाद मे करूगा।

(चिल्लाकर)

इमरती बाद मे नल चला गया तो?

बरफी कोई बात नही मैडम, मैने जल्दी उठकर सारे बरतन भर डाले हैं। मै इतना बेवकूफ नही हू जितना नजर आ रहा हू।

इमरती रियली कभी-कभी तो तुम कमाल ही कर देते हो *(जूड़े का फूल निकालकर बरफीचद के कोट की कॉलर पर लगाते हुए)* अच्छा जाओ लॉण्ड्री से मेरी साडिया ले आओ।

(तपाक से)

बरफी वो मै कल ऑफिस से आते वक्त ले आया था, क्योकि आज लॉण्ड्री का साप्ताहिक अवकाश जो था।

इमरती सच मे तुम कितने वो हो जी चाहता है कि

(बीच मे ही जरा मुस्करा कर)

बरफी देखो तुम मुझे शर्मिन्दा कर रही हो, मैडम। वैसे पति पत्नी एक ही गाडी के दो पहिए होते है और घेवरचदजी का तो यहा तक कहना है कि अगर पत्नी लडके को जन्म देती है तो पति को लड़की पैदा करनी चाहिए।

इमरती बकवास बन्द कीजिए और जल्दी से चाय लेकर आइए।

बरफी लेकिन समोसे ठण्डे हो रहे है मैडम। आप खाती क्यो नही? मै चाय अभी ले आता हू।

(बरफीचन्द का अन्दर की ओर प्रस्थान। इमरती समोसा खाने लगती है और मुह बिगाड़ कर वापस थूक देती है। उसी दौरान बरफीचन्द चाय लेकर प्रवेश करता है)

इमरती यह क्या बनाया है तुमने ?

बरफी समोसे मैडम। मैने अपने दिमाग से बनाए है *(मुस्कराकर)* दो पीस और लेकर आऊ मैडम ?

इमरती कितने सारे बनाए है ?

बरफी सारे मेहमान चाहे पेट भर के खाए, कम से कम साठ सत्तर पीस जरूर होंगे।

इमरती सत्यानाश हो तुम्हारा।

बरफी क्यो क्या हुआ मैडम ? समोसे कच्चे रह गये ?

(तेज स्वर मे)

इमरती नही।

बरफी आलू ज्यादा उबाल दिए मैने ?

इमरती नही।

बरफी तेल कड़वा रह गया मैडम ?

इमरती नही ऽऽऽ

बरफी समोसे मे ककर आ गया डार्लिंग।

इमरती नही-नही-नही,

(तेज स्वर मे)

बरफी तो फिर क्या कमी रह गई समोसे मे ?

(बिगड़ते हुए)

इमरती समोसे मे नमक डाला तुमने ?

(मुस्कराकर)

बरफी अरे हा, नमक तो मैने डाला ही नही मैडम जरा ऊपर से डाल दू ?

इमरती मिर्ची डाली तुमने ?

बरफी मिर्ची डालना तो मै भूल ही गया।

इमरती हरा धनिया ?

बरफी वो किसलिए मैडम ?

(चिल्लाकर)

इमरती और मीठा सोडा ?

बरफी मीठा सोडा डिब्बे मे नही था इसके लिए उसकी जगह मैंने थोड़ा कास्टिक सोडा डाल दिया।

(खीजते हुए)

इमरती ओफ ओ मेरे भाग्य मे तुम कहा बैठे थे ?

(घबराकर)

बरफी मै तो ड्राइग रूम म ही था मैडम, बगैर पूछे मै कही जाता ही नही।

इमरती ओफ ओ। मै पूछ रही हू, ये समोसे बनाए हैं या कपड़े धोने का साबुन ?

बरफी इन्हे रख दो मैडम मै दूसरे बना लाता हू।

इमरती इन्हे ले जाओ यहा से और भगवान के लिए मुझे अकेला छोड़ दो।

(समोसे उठाकर बरफीचन्द का अन्दर प्रस्थान कुछ ही क्षणो बाद कुछ टूटने की आवाज)

इमरती अजी क्या तोड डाला भाग्यवान ?

(ऊची आवाज मे)

बरफी नया वाला टी सैट टूट गया मैडम।

(इसी दौरान बाहर की ओर से माधुरी का प्रवेश)

इमरती हे दीनदयाल ! हम दोनो मे से किसी एक को उठा ले यहा से। अगर हो सके तो पहले इनको ही उठाना।

माधुरी क्यो इमरती ? इतना जल्दी दिल भर गया दुनियादारी से ?

इमरती आओ माधुरी। अब तुझे क्या बताऊ! एक पैसे का तो काम नही करते और आए दिन नुकसान पर नुकसान किए जाते है।

माधुरी आखिर हुआ क्या ? सुबह-सुबह महाभारत !

इमरती क्या बताऊ माधुरी। कल तो लेमन सैट तोड़ा और आज तुम्हारे वाला टी सैट तोड डाला इन्होने।

माधुरी मेरे वाला टी सेट तोड डाला ?

(माधुरी बेहोश होकर सोफे पर गिर जाती है। इमरती घबराकर)

इमरती माधुरी-माधुरी ! (ऊची आवाज मे) अजी सुनते हो ?

(प्रवेश कर)

बरफी क्या है मैडम ?

इमरती मेम साहब के बच्चे। जरा देखो तो माधुरी को एकाएक क्या हो गया?

बरफी माधुरी जी! माधुरी जी! आँखे खोलो रस माधुरी जी! देखो कौन आया है? आँखे खोलो सालीजी।

इमरती सालीजी के बच्चे। जल्दी से किसी डॉक्टर को फोन कीजिए।

(फ्रोन का डायल घुमाकर)

बरफी हेलो! कौन डॉक्टर रस्तोगी? मै बरफीचन्द बोल रहा हूं। ऐसा है डॉक्टर साहब, मेरी सालीजी बाते करते-करते अचानक बेहोश हो गई है। आप इसी वक्त जैसी भी हालत मे हो, फौरन घर पर आ जाइएगा।

(इमरती माधुरी पर पानी के छींटे मारती है। माधुरी आखे खोलकर बैठ जाती है। माधुरी को होश मे आते देखकर)

बरफी वाह पानी मे भी कितने गुण हैं। बगैर दवा ही होश आ गया सालीजी को। ऐसा है डॉक्टर साहब, पानी के छींटे डालने से मेरी सालीजी होश मे आ गई है। इसलिए अब आप अपनी रिस्क पर यहा आ सकते हैं।

इमरती बकवास बन्द कीजिए।

माधुरी मुझे क्या हो गया था इमरती बहन?

इमरती कुछ नही यू ही जरा चक्कर आ गया था, शायद कही

(बीच मे)

बरफी ये तो अच्छा हुआ मैडम कि चक्कर आपको रास्ते मे चलते हुए किसी ट्रक के सामने नही आया वरना

(बीच मे ही)

इमरती अन्दर जाकर जल्दी से दो कप चाय लेकर आइए।

(बरफीचन्द का अन्दर प्रस्थान। इमरती माधुरी के कान मे कुछ कहती है, माधुरी हसते हुए)

माधुरी नही नही इमरती बहन। हमारे ऐसे भाग्य कहा? बात यह है कि ये टी सैट मेरा नही था। मै भी मिसेज खन्ना से माग कर लाई थी। मिसेज खन्ना ने मुझे मना तो नही किया, लेकिन इतना जरूर बोल दिया था कि सुबह वापिस लौटा देना, क्योंकि कल मेरे यहा भी मेहमान आने वाले है।

इमरती सच मे, यह तो बहुत ही बुरा हुआ माधुरी। चलो बाजार चलकर दूसरा सैट देखती है।

माधुरी वो 1260 का जापानी सैट था यहा तो क्या पूरे हिन्दुस्तान मे नही मिलने का।

इमरती फिर भी तलाश करने मे क्या जाता है। चलो उठो।

(चाय व समोसो से भरी ट्रे के साथ बरफीचन्द का अन्दर की ओर से प्रवेश)

माधुरी ये लो चाय आ गई। मै तो पहले चाय पिऊगी। जीजाजी ये समोसे आपने बनाए है?

इमरती नही इनके बापूजी ने बनाए है।

बरफी देखिए मेरे मरे हुए बाप तक जाने की जरूरत नही है। अगर मै तुम्हारी जिन्दा मा तक गया तो?

(उठते हुए)

इमरती क्या बोला तुमने?

माधुरी अरे छोडो ना इमरती, लो चाय पीओ ठण्डी हो रही है।

(दोनो चाय पीकर एक साथ थूकती है)

(इमरती चिल्लाकर)

इमरती यह चाय बनाई है या शर्बत?

(घबराकर अन्दर की ओर दौडते हुए)

बरफी माफ करना। मै चीनी लेकर आता हूँ।

(माधुरी जोरो से हसती है)

इमरती अब तुम ही बताओ माधुरी मै जीऊ या मरू।

माधुरी बुरा न मानना इमरती बहन, कुछ तो तुम जीजाजी के सीधेपन का नाजायज फायदा उठा रही हो।

इमरती वो कैसे? तुम भी इनका पक्ष ले रही हो?

माधुरी कैसे क्या? कम से कम मेरे सामने तो जीजाजी को अपमानित मत किया करो। एक बार ढग से काम समझा दो ताकि

(बीच मे)

इमरती अरे मै तो पूरा काम इन्ही से करवाती हू यहाँ तक कि मैने नौकर को भी निकाल दिया है वरना ये रिटायरमैण्ट तक भी कुछ नही सीख सकेगे।

माधुरी — सच इमरती बहन, इस मामले मे मिसेज खन्ना लकी रही। खन्ना साहब चाय तो क्या खाना भी इतना स्वादिष्ट बनाते है कि खाते ही जाओ, पेट ही नही भरता।

इमरती — इतनी देर से कह रही हू चलो चाय का मूड है चाय व कही चलकर पीएगी।

माधुरी — कुछ देर ठहर कर चलेगी, क्योंकि खन्ना साहब आते वक्त मुझे रास्ते मे मिले थे। गैस का चूल्हा ठीक करवाने जा रहे थे।

इमरती — और मिसेज खना ?

माधुरी — उन्होंने ही बतलाया कि वो अग्रेजी फिल्म देखने गई है। हम लोग नही गए।

इमरती — सच तुमने आने मे देर कर दी माधुरी। सुना है आज फिल्म भी बहुत अच्छी थी।

माधुरी — क्या करती इमरती सुबह उठते ही उन्हे साड़ी प्रेस करने को बोला था, लेकिन इतने निक्कटू है कि अब तक साड़ी प्रेस नही की। देखो ना कल वाली साड़ी ही पहनकर आई हू।

(उसी दौरान बाहर की ओर से घेवरचन्द हैंगर मे साड़ी लटकाए हुए कमरे मे प्रवेश करता है)

इमरती — यह लो। याद करते ही जीजाजी तशरीफ ले आए। बड़ी लम्बी उम्र पाई है ? मैने कहा—नमस्ते जीजाजी।

(घेवरचन्द नमस्ते के जवाब मे दोनो हाथ जोड़ता है कि साड़ी जमीन पर गिर जाती है। माधुरी व घेवरचन्द दोनो साड़ी उठाने को एक साथ नीचे की ओर झुकते हैं और आपस मे टकरा कर दोनो गिर पड़ते है। चिल्लाते स्वर मे)

माधुरी — तुम्हे यहां साडी लेकर आने का किसने बोला था ?

घेवरचन्द — तुम बगैर कुछ कहे सुने नाराज होकर यहा चली आई, इसलिए पहले मैं सूरज टॉकीज की ओर गया, लेकिन वहा बोर्ड लटक रहा था कि अग्रेजी फिल्म की पेटी के न आने के कारण आज अग्रेजी फिल्म शो नही होगा। वहा से मै श्री गगा थिएटर पहुचा लेकिन वहा चैरिटी शो मे जोरू का गुलाम चल रही थी। अत मैं कोटगेट होते हुए विश्वज्योति सिनेमा पहुचा और वहा का दृश्य देखकर मै दग रह गया।

इमरती — ऐसा वहा क्या हुआ जीजाजी ? कोई विशेष बात ? हमे नही बतलाएगे आप ?

घेवरचन्द बतलाने मे मेरा क्या जाता है लेकिन न जाने मुझे शर्म क्यो लग रही है।

इमरती शर्म को गोली मारो जीजाजी। प्लीज बोलिए ना ऐसा आपने वहा क्या देखा?

घेवरचन्द तुम्हारी खन्ना दीदी आई टी ओ गोयल के बगल मे बैठी हुई सिगरेट पी रही थी।

(बिगड़ते हुए)

माधुरी सिगरेट पी रही थी तो कौन सा गुनाह हो गया। वैसे इतने अन्धेरे मे तुम कैसे कह सकते हो कि खन्ना दीदी सिगरेट पी रही थी?

घेवरचन्द हालाकि मुझे देखते ही खन्ना दीदी ने सिगरेट बुझाने की कोशिश की, लेकिन घबराहट व जल्दबाजी मे खन्ना दीदी ने सिगरेट को दीवार पर रगड़ने की बजाए, पास मे बैठे एक गजे की खोपड़ी पर रगड़ दिया। फिर क्या था, बेचारा गजा जोर से चिल्लाया और गुस्से मे आकर उसने एक तमाचा जड़ दिया।

माधुरी खन्ना दीदी के?

घेवरचन्द नही खन्ना दीदी तो डर के मारे नीचे की ओर दुबक गई और तमाचा बेचारे आई टी ओ गोयल के मुह पर लगा। फिर क्या था 'बॉक्स' मे महायुद्ध छिड़ गया। वो उसके ओर वो उसके। किसी तरह बड़ी मुश्किल से मैने स्थिति पर काबू पाया और हा, उस दौरान एक बात खन्ना दीदी ने मुझे कही और कसम दिला दी कि मै यह बात किसी को भी नही बतलाऊ।

माधुरी ऐसी कौनसी बात है जो तुम मुझे भी नही बतलाना चाहते?

घेवरचन्द खन्ना दीदी ने मुझे कसम दिला दी है। इसलिए यह बात मै किसी को भी नही बतला सकता।

माधुरी लेकिन तुम्हारे नजदीक मे हूँ या खन्ना दीदी?

घेवरचन्द देखो मैडम, दुनियादारी को देखते हुए तो तुम मेरे बहुत नजदीक हो जिगर का टुकडा तो मेरा , लेकिन हकीकत क्या है उसे तुम अच्छी तरह जानती हो। फिर इधर की बात उधर और उधर की बात इधर करना इन्सानियत के खिलाफ है।

(कान पकड़ते हुए)

माधुरी सीधी तरह बतला रहे हो या मै तुमको इन्सानियत सिखलाऊ?

इमरती अरे! अरे! ये क्या बच्चो जैसी हरकत कर रही हो माधुरी। प्लीज जीजाजी, बतलाइए ना खन्ना दीदी ने आपको क्या बोला?

घेवरचन्द देखो इमरती जी। आप मेरे सीधेपन का नाजायज फायदा उठा रही हो, लेकिन मै किसी भी कीमत पर वो बात किसी को नही बतलाऊगा चाहे मेरी जान क्यू न चली जाए।

इमरती प्लीज जीजाजी, इतने कठोर मत बनिए। आपको अपनी इमरती की कसम। बतलाइए ना खन्ना दीदी ने आपको क्या बोला?

घेवरचन्द मै धर्मसंकट मे पड़ गया हू, क्योंकि खन्ना दीदी ने भी मुझे अपनी कसम खिलाई है और मेरे कसम तोड़ते ही तुम दोनो मे से कोई एक

इमरती प्लीज जीजाजी तुम हमारी परवाह मत करो। जो भी है सच सच बतला दीजिए।

घेवरचन्द औरत औरत मे भी कितना फर्क होता है। चलो मैं बतला देता हू लेकिन खन्ना दीदी को मत कहना कि मैने उसकी कसम तोड़ दी है वरना

(बीच मे ही)

इमरती आपकी कसम जीजाजी। मै किसी को कुछ नही बतलाऊगी।

घेवरचन्द तुम अकेली नही ये भी।

इमरती हां हां हम दोनो कसम खाती है हम किसी को कुछ नही बतलाएगी।

घेवरचन्द पहले पूछ लो इससे वरना मुझसे बुरा

माधुरी *(चिल्लाकर)* क्या बोला तुमने।

इमरती अब छोड़ो ना माधुरी।

माधुरी तेरे को देख कर ज्यादा ही इतरा रहे है।

इमरती प्लीज माधुरी जरा चुप भी रहो, प्लीज बतलाइए ना जीजाजी। हम किसी को कुछ नही बोलेगी।

घेवरचन्द खन्ना दीदी ने मुझे बोला

(बीच मे)

माधुरी खन्ना दीदी हमारी है, तुम्हारी नही।

घेवरचन्द ओह सॉरी, मिसेज खन्ना ने मुझे बोला कि किसी को यह मत कहना कि वो सिगरेट पी रही थी और हा, अधेरे मे मुझे किसी ने चूम भी लिया।

(बिगड़ते हुए)

माधुरी उस चुड़ैल का यह हौसला?

घेवरचन्द — नहीं, मुझे बाद मे अहसास हुआ कि मुझे मिसेज खन्ना ने नहीं बल्कि यह बदमाशी आई टी ओ गोयल की थी। क्योंकि उसकी लम्बी मूछे किसी से छिपी थोड़े ही रह सकती थी।

(इमरती का हसना, माधुरी चिल्लाते स्वर मे)

माधुरी — बकवास बन्द कीजिए। मै पूछ रही हू कि यहा साड़ी लेकर आने का किसने बोला था।

घेवरचन्द — नही बोला था मगर लाईट चली जाय और मुझे साड़ी प्रेस करने मे देर लग जाए तो इसमे मेरा क्या दोष है। मैंने तुम्हे कई बार बोला था कि घर के अन्दर एक कोयले वाली प्रेस भी होनी चाहिए। जैसे लाईट के चले जाने पर लोगबाग रेडियो की जगह ट्रांजिस्टर स्टार्ट कर लेते है। उसी तरह लाईट के जाने पर कोयले वाली प्रेस जला ले ताकि लाईट का इन्तजार ही नही करना पड़े, लेकिन मेरी सुनता कौन है?

माधुरी — अब भाषण देना बन्द कीजिए और अन्दर जाकर जीजाजी की काम मे थोड़ी मदद कीजिए।

घेवरचन्द — चला जाता हू अन्दर, लेकिन मैं थोडी मोड़ी मे विश्वास नही रखता क्योंकि मै जिस काम मे हाथ डालता हू उसे पूरा करके ही छोडता हू। जब किसी की हैल्प ही करनी है तो थोड़ी क्यो, पूरी करनी चाहिए ताकि सामने वाले को पता तो चले कि किसी ने उसकी हैल्प तो की। क्यो इमरती जी, मै गलत कह रहा हू?

(बीच मे ही)

माधुरी — बिलकुल बजा फरमा रहे है आप, लेकिन मै कितनी बार कह चुकी हूं कि तुम जरूरत से ज्यादा मत बोला करो।

घेवरचन्द — अब मै ज्यादा कहा बोलता हू मैडम। एक जमाना था जब मै बोला करता था। जिस दिन से तुमने मुझे बोलने के लिए मना किया है मै फिजूल का एक शब्द नही बोलता, वरना मजाल थी उस रोज वो मरियल पड़ौसी मुझे गालिया निकालकर 'सेफ' चला जाता। अगर वो कमीना मुझे एक गाली निकालता तो मै उस हरामखोर को बीस गालिया निकालता, अगर वो मुझे बीस गालिया निकालता तो मै उसे चालीस गालिया निकालता, अगर वो मुझे चालीस गालियां निकालता तो मै उसे अस्सी गालिया निकालता, अगर वो मुझे अस्सी गालिया निकालता तो मै उसे

(बीच मे)

माधुरी तुम उसे एक सौ साठ गालिया निकालते।

घेवरचन्द हिसाब किताब मे तुम मेरे से भी ज्यादा होशियार हो। अगर वो मुझे एक सौ साठ गालियां निकालता तो मै उसे तीन सौ बीस गालिया निकालता।

(चिल्लाते स्वर मे)

माधुरी मैं कहती हू अब आप चुप रहने का क्या लोगे?

घेवरचन्द तुम कहती हो तो मै चुप हो जाता हू वरना वो मुझे तीन सौ बीस गालिया निकालता तो मै उसे छ सौ चालीस गालिया निकालता।

माधुरी आप अन्दर जाते है या मै अन्दर चली जाऊ।

घेवरचन्द अगर तुम्हे जाना ही है तो घर क्यो नही चली जाती, क्योकि मै जल्दबाजी मे मकान का दरवाजा खुला ही छोड़ आया।

माधुरी क्या कहा तुमने?

घेवरचन्द कुछ नही। मै अन्दर जा रहा हू।

(घेवरचन्द अन्दर जाने लगता है। इमरती हसते हुए व्यग्य करती है)

इमरती अगर वो मुझे 640 गालिया निकालता तो मै उसे

(घेवरचन्द रुकते हुए)

घेवरचन्द 1280 गालिया निकालता। अगर वो मुझे 1280 गालिया निकालता तो मैं उसे 2560 गालिया निकालता।

(हसते हुए)

इमरती अगर वो आपको 2560 गालिया निकालता तो आप उसे कितनी गालिया निकालते जीजाजी?

घेवरचन्द अगर वो मुझे 2560 गालिया निकालता तो मै उसे 5120 गालिया निकालता।

इमरती अगर वो आपको गालिया निकालनी बन्द करके वहा से चला जाता तो आप क्या करते जीजाजी?

घेवरचन्द अगर वो मुझे गालिया निकालनी बन्द करके वहा से चला जाता तो मै उसके वापिस न आ जाने तक वही खडा खडा गालिया निकालता रहता।

इमरती अच्छा यह मानले वो आप से झगड़ा न करके आपसे माफी माग लेता तो आप क्या करते जीजाजी?

घेवरचन्द अगर वो मुझसे झगड़ा न करके एक बार माफी मागता तो मै उससे

बीस बार माफी मागता। अगर वो बीस बार माफी मागता तो मै उससे चालीस बार माफी मांगता। अगर वो मुझसे चालीस बार

(बीच मे चिल्लाते स्वर मे)

माधुरी — अब तुम माफिया ही मागते रहोगे या अन्दर जाकर कुछ काम भी करोगे?

घेवरचन्द — जा रहा हू। मुझे यहा रह कर क्या करना है।

माधुरी — शर्म नही आती, जीजाजी अन्दर अकेले काम कर रहे है।

घेवरचन्द — अगर इतना ही जीजाजी पर तरस आ रहा है तो तुम खुद अन्दर क्यो नही चली जाती।

(बिगड़ते हुए)

माधुरी — क्या बोला तुमने? जरा दुबारा चोच खोलना?

घेवरचन्द — मै सिर्फ एक बार बोलता हू। भविष्य मे ध्यान रखना।

माधुरी — अब सीधी तरह अन्दर जा रहे हो या तुम्हे मै ध्यान करवाऊ?

घेवरचन्द — जा रहा हू। सहेली को देखकर रोब क्यो मार रही हो?

(घेवरचन्द का अन्दर प्रस्थान)

माधुरी — चलो इमरती, खन्ना दीदी के यहा चलती है। सुबह सुबह मूड ऑफ कर दिया।

(हसते हुए)

इमरती — क्या कहा? मूड ऑफ कर दिया। क्या बात करती हो माधुरी, मेरा तो मूड फ्रेश हो गया। इतना मजा तो अग्रेजी फिल्म मे भी नही आता।

माधुरी — अच्छी बात है। तुम यहा बैठी मजा लेती रहो मै चलती हू।

इमरती — अरे! कहा जा रही हो माधुरी? मै भी चल रही हू (उठते हुए) अजी सुनते हो?

(घेवरचन्द प्रवेश कर)

घेवरचन्द — कहिए क्या तकलीफ है?

माधुरी — तुमको आवाज किसने दी है। अन्दर जाओ और जल्दी से जीजाजी को बाहर भेजो।

घेवरचन्द — अगर गरज है तो खुद ही आवाज मार लो।

माधुरी — इमरती को देखकर कुछ ज्यादा ही बन रहे हो। मेरा नाम जानते हो ना?

घेवरचन्द नाम और काम ही जानता तो झख मारने को तुमसे शादी करता।

माधुरी क्या कहा तुमने ? घर चलो फिर खबर लूंगी तुम्हारी।

घेवरचन्द घर तो मैं देर से पहुचूगा। कुछ करना है तो यही कर लो ना।

(गुस्से मे भरकर)

माधुरी क्या बोला तुमने ?

(बीच बचाव करते हुए)

इमरती अरे! अरे! यह क्या कर रही हो माधुरी, पागल हो गई हो ?

(बिगड़ते हुए)

माधुरी छोड़ दो इमरती। मैं इनका खून पी जाऊगी।

घेवरचन्द उस रोज शराब तो पिया नही गया और आज मेरा खून पी जाएगी।

(दोनो हाथ जोड़ कर)

इमरती प्लीज जीजाजी, आप अन्दर जाइए।

घेवरचन्द चौबीसो घण्टे ये मुझे खाती रहती है और तुम्हारे सामने सती-सावित्री बने जा रही है।

(रोने लगता है, इमरती रूमाल देती है। घेवरचन्द नाक साफ करके वापिस इमरती को रूमाल पकड़ा देता है)

इमरती प्लीज जीजाजी, कृपया आप अन्दर जाकर आराम कीजिएगा।

घेवरचन्द प्यार से तो मै अन्दर क्या ऊपर जाने को भी तैयार हू इमरती जी लेकिन

(पुचकारते हुए)

इमरती नही नही, अभी आप ऊपर नही, अन्दर ही जाइए, जीजाजी।

(जाते जाते माधुरी की तरफ देखकर)

घेवरचन्द देखा, यह है अन्दर भेजने का तरीका।

(घेवरचन्द का प्रस्थान। इमरती तेज स्वर मे)

इमरती अजी सुनते हो ?

(बरफीचन्द प्रवेश करके)

बरफी कहिए मेमसाहब।

इमरती कानो के पर्दे फट गए है ?

बरफी परदे तो धुलने के लिए भेजे है।

इमरती ओफ्फो। मैं एक घण्टे से यहां चिल्ला रही हू अन्दर क्या कर रहे थे?

बरफी तुम्हारी सैण्डिल पॉलिश ।

(बीच मे ही)

इमरती मै खन्ना दीदी के यहा जा रही हूं।

बरफी तो मैंने मना कब किया है। वैसे रात को वापिस न आओ तो मैं घेवरचन्द जी को अपने पास सुला लूं?

(बिगड़ते हुए)

इमरती क्या कहा तुमने? जरा दोबारा बोलना?

बरफी मेरा मतलब वापस कब आओगी, क्योंकि साय को तुम्हारी सहेलिया आने वाली है।

इमरती मै जल्दी आने की कोशिश करूगी, और सुनो वो जल्दी आ जाय तो उनका ख्याल रखना। आओ माधुरी।

माधुरी आजकल जीजाजी काफी समझदार हो गए हैं।

बरफी यह सब आप लोगो की मेहरबानी है वरना हम लोग किस लायक थे।

इमरती ओह, आओ ना माधुरी, क्यो मुह लगे जा रही हो इनके।

(दोनो का बाहर की ओर प्रस्थान कुछ क्षण रुक कर)

बरफी कम ऑन घेवरचन्द जी।

(घेवरचन्द प्रवेश करके)

घेवरचन्द आफते टल गई बरफीचन्द जी?

बरफी ओ यस। बैठो यार। सिगरेट जलाइए और सुनाइए कैसी कट रही है आपकी?

घेवरचन्द कट क्या रही है बरफीचन्द। बस काट रहा हू और अपने आपको घसीट रहा हू।

बरफी घसीट क्यो रहे हो घेवरचन्द जी? आखिर इतने बडे अफसर हो और क्या चाहिए तुम्हे?

घेवरचन्द क्या चाहिए। ऑफिस जाता हू तो मुझे देखते ही पूरा ऑफिस खड़ा हो जाता है और घर पर, वो चुड़ैल मुझे एक मिनट बैठने नही देती।

बरफी मेरी हालत तुमसे भी ज्यादा नाजुक है घेवरचन्द जी। ऑफिस मे डाट मार मार कर कर्मचारियो को परेशान कर लेता हू और घर पर न जाने कितनी डाट मुझे खानी पड़ती है।

घेवरचन्द बिलकुल बजा फरमा रहे हो बरफीचन्द जी। सुबह उठते ही बैड टी, नाश्ता, खाना, यह करो वो करो

(दोनो गले लगे हुए रोनी सी आवाज मे)

बरफी घेवरचन्द जी।

घेवरचन्द बरफीचन्द जी।

बरफी मैने तुम्हे पहले ही बोला था कि शादी होते ही बीबी पर हावी हो जाना। क्यो, नही बोला था मैने?

घेवरचन्द बोला था बरफीचन्द जी, लेकिन उसने हावी हो जाने का मौका ही नही दिया। थोड़े से दहेज के लालच मे उम्र भर का रोग लगा लिया हमने। अगर दहेज के लालच मे नही फसते तो आज

(बीच मे ही)

बरफी तो अब क्यो दु खी हो रहे हो? किए जाओ पत्नी सेवा। एक न एक दिन जरूर मिलेगा मेवा।

(दूर हटते हुए)

घेवरचन्द तुम तो इस कदर चढ़कर बोल रहे हो बरफीचन्द जी, जैसे तुम अपनी जोरू से बिलकुल नही डरते हो।

बरफी अरे इसमे डरने की कौनसी बात है घेवरचन्द जी। एक न एक दिन तो इन्सान को मरना ही है।

घेवरचन्द यह मुह और मसूर की दाल। शर्म नही आती मर्द होकर जोरू की सैण्डिल पॉलिश करते हो?

बरफी ज्यादा फूक मे मत आइए घेवरचन्द जी। अभी अभी साडी प्रेस करके मेरे बापूजी लाए थे।

घेवरचन्द मुह सम्भाल कर बोलिए बरफीचन्द जी। जैसा नाम वैसा काम। अच्छा होता किसी हलवाई के यहा जन्म लेते।

बरफी चमड़ी के बाहर न निकलो घेवरचन्द जी। तुम क्या हो, मुझसे छुपा नही है।

घेवरचन्द अरे जा! जोरू के गुलाम। तू कितने पानी मे है। मै अच्छी तरह जानता हू।

बरफी होश मे बात करो घेवरचन्द जी, तुम मर्द होकर औरत के पैर दबाते हो।

घेवरचन्द अरे मेरा बस चले तो मै उस चुड़ैल का गला भी दबा दू, लेकिन तुम्हारी तरह कपड़े धोकर मकान की धुलाई तो नही करता।

बरफी मैं मकान की धुलाई करता हूँ और भाभी तुम्हारी धुलाई करती है, क्या फर्क पड़ता है।

घेवरचन्द अब मेरा मुंह ना खुलवाइए बरफीचन्द जी। मर्द होकर जोरू के लिए करवा चौथ का व्रत रखते हो तुम।

बरफी मर्द होकर औरत का सर दबाते हो तुम।

घेवरचन्द मर्द होकर जोरू के पैर दबाता है तू।

बरफी तू सर दबाता है।

घेवरचन्द तू पैर दबाता है।

बरफी तू सर दबाता है।

घेवरचन्द तू पैर दबाता है।

बरफी सर

घेवरचन्द पैर

बरफी सर

घेवरचन्द पैर

बरफी सर

घेवरचन्द पैर

(एकाएक 'चुप' की आवाज आती है। दोनों डर कर एक दूसरे के गले लग जाते हैं और कुछ क्षण रुक कर)

बरफी क्यों क्या हुआ घेवरचन्द जी ?

घेवरचन्द कुछ नही मैने सोचा वो डायन फिर से आ गई।

बरफी बातो ही बातो मे हम लोग कहा से कहा पहुच गए घेवरचन्द जी ?

घेवरचन्द जहा अपने को नही पहुचना चाहिए था बरफीचन्द जी।

बरफी बिल्कुल ठीक कहते हो घेवरचन्दजी।

घेवरचन्द इसलिए तो कहता हू कि कोई न कोई तरीका निकालिए वरना इसी तरह सर पैर-सर पैर करते करते एक दिन सपाट से सास निकल जाएगी।

बरफी तो इसके लिए हिम्मत से काम लेना होगा आपको।

घेवरचन्द कई बार हिम्मत से काम ले चुका हू, लेकिन घर के अन्दर महाभारत छिड़ गया।

बरफी महाभारत। वो कैसे ?

घेवरचन्द उल्लू की पट्ठी मुझे मारती भी रही और बचाओ-बचाओ भी करती रही।

बरफी केस कॉम्प्लीकेटेड है घेवरचन्द जी। ऐसा है आप एक काम कीजिए।

घेवरचन्द काम तो मै दिन भर करता हू बरफीचन्द जी।

बरफी मेरा इशारा गृह कार्य से नही है।

घेवरचन्द तो आदेश दीजिए ना, मुझे क्या करना होगा?

बरफी देखिए! बरफीचन्द जी

घेवरचन्द मुझे तो कुछ भी नजर नहीं आ रहा। कहा है आप?

बरफी देखिए मजाक छोडिए और जैसा मै कहू आप करते जाइए। नम्बर एक आपको साड़ी प्रेस करने को बोले तो आप साडी जला डालिए।

घेवरचन्द नम्बर एक, तुमको साड़ी प्रेस करने को बोले तो तुम साड़ी जला डालो।

बरफी तुम मेरी कॉपी कर रहे हो?

घेवरचन्द तुम मेरी कॉपी कर रहे हो?

बरफी यह क्या बकवास है, घेवरचन्द जी?

घेवरचन्द यह क्या बकवास है, बरफीचन्द जी?

बरफी मैने कहा तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ना?

घेवरचन्द मैने कहा तुम्हारा दिमाग तो ठीक है ना?

बरफी अजीब आदमी हो।

घेवरचन्द अजीब आदमी हो।

बरफी क्या बदतमीजी है ये?

घेवरचन्द क्या बदतमीजी है ये?

बरफी कमाल है।

घेवरचन्द कमाल है।

बरफी मै कहता हूँ बकवास बन्द कीजिए।

घेवरचन्द मै कहता हूँ बकवास बन्द कीजिए।

बरफी ओह! यू शट अप!

घेवरचन्द ओह! यू शट अप!

(बरफी तग आकर सोफे पर बैठ जाता है, घेवरचन्द पास बैठकर)

घेवरचन्द क्यो क्या हुआ, बरफीचन्द जी? चुप क्यो हो गए?

बरफी एक घण्टा हुआ, तुम्हारे को बदतमीजी करते हुए।

घेवरचन्द कमाल है। तुमने ही तो बोला था कि जैसा मै कहू, तुम करते जाना।

बरफी लेकिन मैने यह थोड़े ही बोला था कि तुम मेरी कॉपी करते जाओ।

घेवरचन्द अच्छा गलती हो गई। बोलिए, मुझे क्या करना होगा ?

बरफी पहले आप गम्भीर हो जाइए।

घेवरचन्द चलो हो गया गम्भीर।

बरफी अब जैसा मै कहूँ वैसा ही करते जाइए।

घेवरचन्द वैसा ही होगा। फरमाइए, मुझे क्या करना होगा ?

बरफी तुमको साड़ी प्रेस करने का बोले तो तुम साड़ी जला दो। खाना बनाने का बोले तो खाना जला दो। अगर चाय बनाने का बोले तो टी सैट तोड़ दो।

घेवरचन्द तुम्हारे कहे अनुसार मुझे साडी प्रेस करने का बोले तो मै साड़ी जला दू।

बरफी जगह जगह से ताकि साड़ी पहनने के लायक न रहे।

घेवरचन्द खाना बनाने का बोले तो खाना जला दू।

बरफी राख कर दो।

घेवरचन्द टी सैट बनाने को बोले तो चाय तोड दू।

बरफी टी सैट के टुकडे टुकड़े हो जाने चाहिए।

घेवरचन्द नौकरी मै करता हू या वो चुड़ैल।

बरफी सैण्ट परसेण्ट तुम करते हो, वरना तो डायने हमारा जीना दूभर कर देगी।

घेवरचन्द तो अभी कौन सी कमी रख छोड़ी है उन्होने ?

(बरफीचन्द एकाएक बैठ जाता है)

घेवरचन्द क्यो क्या हुआ बरफीचन्द जी? एकाएक रोशनी कैसे चली गई ?

बरफी मेरे से बड़ा बेवकूफ कोई नही है घेवरचन्द जी।

घेवरचन्द इस खूबसूरत राज का अहसास आज ही हुआ आपको ?

बरफी ऐसा है, घेवरचन्द जी। मै कई दिनो से अपना ही नुकसान करते जा रहा हू। कल मैने लेमन सैट तोडा और आज टी सैट तोड़ डाला।

घेवरचन्द इससे तो अच्छा रहता अगर तुम भाभी जान का खोपड़ा ही तोड डालते और दूसरी शादी कर लेते।

बरफी मेरा बस चले तो दुनिया के नौजवानो को आगाह कर दू कि दूसरी तो क्या पहली शादी भी कोई नही करे। अगर करे तो किसी गरीब की लड़की बगैर दहेज के ले आए।

घेवरचन्द इसलिए तो मै बार-बार कहता हू कि कोई न कोई तरीका निकालिए बरफीचन्द जी, वरना इसी तरह चूल्हे मै फूक मारते मारते एक दिन दोनो की फूक निकल जाएगी।

(एकाएक उठते हुए)

बरफी एक तरीका याद आया।

घेवरचन्द जल्दी इस्तेमाल करो बरफीचन्द जी, वरना फार्मूला हाथ से निकल जाएगा।

बरफी वो शेर।

(घेवरचन्द घबराकर सोफे पर पाव रखकर)

घेवरचन्द कहा है शेर। मै तो गीदड़ से भी डरता हू।

बरफी अरे! मै असली शेर की बात नही कर रहा हू घेवरचन्द जी?

घेवरचन्द तो क्या शेर भी नकली आने लगे है, मेरा मतलब शेरो मे भी मिलावट शुरू हो गई है?

बरफी मेरा मतलब शेर-शायरी से है। असली शेर से नही समझे आप?

घेवरचन्द बहुत देर से समझता हू बरफीचन्द जी, अगर पहले समझ जाता ता मजाल है किसी को एक गिलास पानी भी पिला देता। अरे बोलो ना उस शर का क्या हुआ?

बरफी मैंने शेर की बात कही और आपने रोना शुरू कर दिया। दु खी तुम अकेले नही हो। मै तुमसे ज्यादा हू।

घेवरचन्द तो जल्दी बतलाइए ना मुझ क्या करना होगा?

बरफी ऐसा है घेवरचन्द जी

घेवरचन्द कैसा है, बरफीचन्द जी।

बरफी आज के बाद हम लोग घर का कोई काम नही करेगे।

घेवरचन्द मै समझा नहीं।

बरफी समझा रहा हूँ। बराबर साथ दोगे मेरा?

घेवरचन्द बराबर साथ दूगा आपका।

बरफी आखिरी दम तक पीछे तो नहीं हटोगे?

घेवरचन्द नही हटूगा पीछे, दम तक आखिरी।

बरफी प्रॉमिस करते हो?

घेवरचन्द करता हू प्रॉमिस।

बरफी तो पोछ लो आसू।

घेवरचन्द पोछ लिए आसू, बतलाओ शेर कहा है?

बरफी शेर है- 'हिम्मत-ए-मर्द, मुद्दे पुदा'।

घेवरचन्द खोदा पहाड़, निकली चुहिया।

बरफी क्या मतलब?

घेवरचन्द कुछ नही, मेरा मतलब बहुत अच्छा शेर है। शेर क्या? यह तो बब्बर शेर है।

बरफी तो तैयार हो जाइए आप।

घेवरचन्द तैयार हो गया मै।

बरफी बोलिए तन कर।

घेवरचन्द बोलाइए जम कर।

बरफी आज के बाद हम लोग अपने घर का कोई काम नही करेंगे।

घेवरचन्द आज के बाद हम लोग अपने घर का कोई काम नही करेंगे।

बरफी जरा जोर से बोलिए, मजा नही आया।

घेवरचन्द इस बार आएगा। आज के बाद हम लोग अपने घर का कोई काम नही करेंगे।

बरफी शाबाश मेरे मिट्टी के शेर।

घेवरचन्द रात को बकरी, दिन को भेड़।

बरफी एक बार जरा रौब जता कर बोलिए।

घेवरचन्द आज के बाद हम लोग अपने घर का कोई काम

(इसी दौरान बाहर की ओर से इमरती व माधुरी का कमरे मे प्रवेश और दोनो घबराकर बात बदलते हुए दोनो साथ बोलते है।)

घेवरचन्द मन लगा कर करेंगे।

बरफी तहे दिल से करेंगे।

घेवरचन्द इण्ट्रेस्ट लेकर करेंगे।

बरफी जी जान से करेंगे।

इमरती क्या हो रहा था यहा?

(दोनो एक साथ बोलते हैं)

कुछ नही हम लोग दिल से काम करने की शपथ ग्रहण कर रहे थे।

माधुरी हमारे जरा बाहर जाते ही बगावत करनी शुरू कर दी तुमने?

इमरती सच सच बतलाओ, क्या प्लान था तुम्हारा ?

माधुरी बोलते क्यो नही ?

इमरती अब साँप क्यो सूँघ गया है तुमको ?

माधुरी मैं पूछ रही हूँ मुँह मे जबान है या नही ?

इमरती प्लीज जीजाजी। कृपया आप बतलाइए। क्या योजना बना रहे थे आप लोग ?

(इमरती के सिर पर हाथ रख कर)

घेवरचन्द मैं घेवरचन्द वल्द श्री कायाराम अपनी साली श्रीमती इमरती के सर पर हाथ रखकर कहता हू

(हाथ हटाते हुए)

माधुरी इमरती के सिर पर हाथ रखकर क्यो ?

(माधुरी के सिर पर हाथ रखकर)

घेवरचन्द मैं तुम्हारे सिर पर हाथ रखकर कहता हू

इमरती माधुरी के सिर पर हाथ रखकर क्यो? अपने दोस्त के सिर पर हाथ रखकर बोलिए।

घेवरचन्द मै अपने दोस्त चन्द जी बरफी के सिर पर

(बीच मे ही)

माधुरी चन्द जी बरफी नही बरफीचन्द जी।

घेवरचन्द मै अपने दोस्त बरफीचन्द जी के सिर पर हाथ रखकर

(घेवरचन्द बेहोशी का ढोग करता हुआ गिरता है)

इमरती जीजाजी जीजाजी आप खड़े-खड़े मेरा मुह क्या देख रहे हो? जल्दी से किसी डॉक्टर को फोन कीजिए और सुनो पहले जल्दी से पानी का एक गिलास लेकर आइए।

बरफी अभी लाता हू।

(प्रस्थान)

इमरती जरा देखो ना माधुरी, क्या हो गया जीजाजी को ?

माधुरी घबराने की कोई बात नही है इमरती, तुम्हारे जीजाजी गिरगिट की तरह कई रग बदलने की क्षमता रखते है। तुम देखती जाओ, मै इनकी बेहोशी कैसे दूर करती हू।

(माधुरी टेबिल पर पहले से पड़ी गिलास उठाकर उसका पानी घेवरचन्द पर जोर से फेंकती है कि घेवरचन्द तपक कर उठता है और अपने हाथ इमरती व माधुरी के सिर पर एक साथ रखते हुए)

घेवरचन्द मैं जो कुछ कहूंगा, सच-सच कहूंगा।

(बरफीचन्द पानी का गिलास लेकर प्रवेश करके)

बरफी पानी मैडम।

इमरती इसकी अब कोई जरूरत नही।

(बरफीचन्द एक ही सास मे पानी स्वयं पीकर अन्दर जाने लगता है)

घेवरचन्द बरफीचन्द जी, मै भी चल रहा हू।

बरफी आइए घेवरचन्दजी।

(अन्दर जाने लगते हैं)

इमरती सुनो।

घेवरचन्द सुनाइए?

माधुरी जल्दी से दो कप चाय लेकर आइए।

घेवरचन्द खन्ना दीदी के यहाँ झख मारने को गई थी।

(बिगड़ते हुए)

माधुरी क्या बोला तुमने?

बरफी कुछ नही, तेज बुखार के कारण घेवरचन्द जी बहक रहे है।

(दोनों का अन्दर प्रस्थान)

माधुरी देखा इमरती? तुम्हारे जीजाजी की होशियारी का नमूना।

इमरती रियली मै तो जीजाजी को बहुत ही ज्यादा सीधा सादा समझ रही थी।

माधुरी छिपकली पूरे बिच्छु को निगल जाती है, इमरती।

इमरती भई मान गई, माधुरी।

माधुरी यह तो अच्छा हुआ हम वक्त पर घर आ गई वरना ।

इमरती वरना इनका प्रोग्राम जरूर कुछ और था।

माधुरी इसमे क्या दो राय है क्यो भूल गई उस दिन

इमरती बस बस, चुप भी कर यार उस दिन तो मै हैरान रह गई।

(उसी दौरान घेवरचन्द व बरफीचन्द भगवे कपड़े पहने गाते हुए प्रवेश करते हैं)

भिक्षा दे मैया पीगला जोगी खड़े है द्वार

माधुरी चुप यह क्या हुलिया बनाकर आए हो?

(उठते हुए)

इमरती चाय का क्या हुआ छोगियो?

माधुरी मै पूछ रही हू यह क्या नाटक है?

(बिगड़ते हुए)

इमरती मुह खोलते हो या भिक्षा दू तुम्हे?

बरफी बोलिए घेवरचन्द जी?

घेवरचन्द आप बोल दीजिए बरफीचन्द जी आप सीनियर है।

बरफी क्या फर्क पड़ता है घेवरचन्द जी, आप ही बोल दीजिए।

घेवरचन्द फर्क बहुत जोर का पड़ेगा, इसलिए आप ही बोल दीजिए।

(बीच मे ही)

इमरती हम तीन गिनती है

घेवरचन्द स्लेट पर लिख कर याद करो, जल्दी याद होगा।

माधुरी उसके बाद भी तुम लोगो ने जुबान नही खोली तो देखना क्या फर्क पड़ता है।

इमरती एक।

माधुरी दो।

इमरती तीन।

(दोनो एक साथ बोलते हैं)

आज के बाद हम लोग घर का कोई काम नहीं करेगे।

(दोनो एक साथ तेज स्वर मे बोलती है।)

क्या ?

(इसी के साथ धीरे-धीरे पूर्ण अन्धकार)

'आप बोल दीजिये'

क्यों पापाजी कैसी रही

क्यो पापाजी कैसी रही

'क्यो पापाजी कैसी रही' का प्रदर्शन अब तक आठ बार किया जा चुका है। सर्वप्रथम यह नाटक दिनाक 11 व 12 मार्च 1980 को राजकीय टाउन हॉल, बीकानेर मे मुख्य अतिथि माननीय कु अभिमन्यु सिंह जी D I O बीकानेर एव श्री आर आर खड़गावत D I O बीकानेर की अध्यक्षता मे खेला गया। इसमे इन कलाकारो ने भाग लिया—

सर्वश्री आनन्दीलाल गोस्वामी	*राजेन्द्रनाथ*
शहनशाह बाबर	*अम्बालाल*
चान्द जोशी	*लाला अमरनाथ*
रमेश शर्मा	*पोस्टमैन*
बेबी वीना मिश्रा	*सगीता*
बेबी अर्चना पवार	*आरती*
प्रोमिला माथुर	*सावित्री*
बी एल नवीन	*पुलिस इन्सपेक्टर*
सगीतकार	*महेन्द्र भट्ट*
गीतकार	*जगदीश राठौड*
लेखक-निर्देशक	*सूरजसिंह पवार*

'जय सरस्वती माँ'

क्यो पापाजी कैसी रही

राजेन्द्र नाथ का मकान और उसी का एक कमरा।

कमरे के एक कोने मे पडा रेडियो बज रहा है। उसी कमरे मे राजेन्द्र के तीन बच्चे खेलने मे मशगूल हैं। एकाएक रेडियो मे गीत बजता है—पहली तारीख है जी पहली तारीख है। तभी सगीता रस्सी कूदते हुए बोलती है।

सगीता राजू-सगीता कम ऑन।

(दोनो पास आकर)

राजू क्या है?

सगीता जरा ध्यान से सुनो। क्या बज रहा है।

(उसी क्षण दीवार घड़ी मे साय के पाच बजते है। आरती रस्सी कूदते हुए बोलती है।)

आरती दीवार घड़ी मे पाच बज रहे है।

सगीता अरे बुद्धू। मैं पूछ रही हू, रेडियो मे क्या बज रहा है?

(बीच मे ही एक्सरसाइज करते हुए राजू बोलता है)

राजू पहली तारीख है जी, पहली तारीख है।

(राजू के साथ आरती भी रस्सी कूदते हुए गाने लगती है।)

आरती पहली तारीख है जी, पहली तारीख है।

राजू क्यो! क्या हुआ दीदी, तुम चुप क्यो हो गई?

सगीता अरे बेवकूफ! आज पहली तारीख है। आज पापाजी को ढेर सारी तनख्वाह मिलेगी, मालूम है ना?

राजू मालूम है। अभी पापाजी ऑफिस से आते समय ढेर सारी मिठाई भी लेकर आएगे।

आरती और एक एक पीस हम लोगो मे बाट देगे और बाकी मिठाई अकेले चट कर जायेगे। क्या यही कहना चाहती हो ना दीदी?

सगीता लेकिन आज हम लोग कोई मिठाई-विठाई नही खायेंगे।

राजू क्यो नही खायेंगे दीदी ? महीने मे एक बार तो मौका मिलता है मिठाई खाने का।

संगीता इसलिए कि आज हम लोग पहले अपनी मागे पूरी करवाएंगे और फिर मिठाइ खायेंगे।

आरती कौनसी मागे दीदी ?

संगीता तेरी फ्राक, मेरी मैक्सी और

(बीच मे ही)

राजू और मेरी जीन्स की पेंट।

आरती अगर पापाजी ने लाकर नही दी तो ?

संगीता तो हम लोग भूख हड़ताल कर देंगे।

राजू उससे क्या होगा दीदी।

संगीता हम लोग तब तक रोटी नही खायेंगे जब तक हमारी मागे पूरी नही की जाएँगी।

आरती लेकिन किस खुशी मे माग मनवा रही हो दीदी ?

संगीता मै अपनी कक्षा मे फर्स्ट आई हू इसलिए मै सौ रुपये की मैक्सी खरीदूगी।

आरती मै पूरी स्कूल मे अव्वल आई हू इसलिए मै भी दो सौ रुपये की फ्राक खरीद कर लाऊगी।

राजू मै अपनी कक्षा मे परमोटेड आया हू इसलिए मै तीन सौ साठ की जीन्स खरीद कर लाऊगा।

आरती परमोटेड का माइना भी जानते हो ?

राजू तुम इतनी बडी हो गई हो। अभी तक परमोटेड का मतलब भी नही जानती ?

(दोनो हसती है। उसी क्षण अन्दर की ओर से सावित्री प्रवेश करती है)

आरती तुम आज पापाजी से कितने रुपय लागी मम्मी ?

(बीच मे ही)

राजू मम्मी को तो पापाजी पूरी तनख्वाह हाथ मे लाकर देते हैं। क्यो मम्मी ?

सावित्री हा बेटे। तनख्वाह हाथ मे लू तो मरी और न लू तो मरी।

(बीच मे ही)

राजू क्यो तनख्वाह मे इतना भार होता है मम्मी?

सावित्री नही तो क्या? मुट्ठी भर तनख्वाह और ढेर सारा खर्च। तुम्हारे पापाजी तनख्वाह मेरे हाथ मे पकड़ा कर फ्री हो जाते हैं और मै, पूरे महीने घर खर्च कैसे चलाती हू मेरा दिल ही जानता है।

सगीता बस-बस रहने दो मम्मी। तुमने तो अपना रोना शुरू कर दिया, लेकिन सुन लो ध्यान से। आज हम लोग तुम्हारी चिकनी-चुपडी बातो मे नही आने वाले है।

सावित्री अच्छी बात है। लो पहले नाश्ता कर लो, पराठे ठडे हो रहे है।

सगीता आज हम लोग कोई पराठ-वराठे नही खायगे।

सावित्री क्यो नही खाओगे? आखिर बात क्या है?

(बीच मे)

आरती जानती हो मम्मी, आज कितनी तारीख है?

सावित्री तो तुम लोगो को भी, पहली तारीख का इन्तजार रहने लगा है।

आरती क्यो नही रहेगा क्योकि तुम लोग हर महिने हम लोगो को उल्लू बना देते हो। उसको इतना देना है, उसे उतना देना है।

सावित्री अच्छी बात है। पहले नाश्ता करलो, इस बारे मे हम फिर बात करेगे।

आरती मर जायेगे लेकिन आज हम नाश्ता नही करेंगे।

सावित्री मगर क्यो?

सगीता इसलिए कि आज से हम लोग भूख हड़ताल पर है?

(हसते हुए)

सावित्री भूख हड़ताल! जानते हो भूख हडताल क्या होती है?

आरती जानते है। पापाजी आए दिन ऑफिस मे भूख हडताल पर बैठकर अपने पैसे नही बढ़ाते है?

सगीता इसलिए हमारी मागो को लेकर, आज से हम तीनो बहन भाई भूख हडताल पर है। क्यो साथियो?

(दोनो एक साथ)

हा हा हम तुम्हारे साथ है दीदी।

सावित्री देखो। तुम लोगो का दिमाग तो ठीक है ना।

सगीता पहले खराब था जो आज तक तुम्हारे झूठे वादो पर विश्वास करते रहे।

(हाथ ऊपर उठाते हुए)

राजू हमारी मागे ?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

राजू औलाद एकता ?

(दोनो एक साथ)

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद।

राजू हम सब ?

(दोनो एक साथ)

एक है।

राजू ओलाद एकता ?

(दोनो एक साथ)

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद।

राजू हमारी मागे ?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

(दरवाजे पर दस्तक)

सगीता शायद पापाजी आ गए है। अरे! तुम कहा जा रही हो मम्मी ?

सावित्री मै अन्दर जा रही हू, वरना वो सोचेगे कि यह सारी कारगुजारी मेरी है।

(सावित्री का अन्दर प्रस्थान)

(हाथ ऊपर उठाते हुए)

राजू हमारी मागे ?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

राजू हमारी मागे ?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

(बाहर की ओर से लाला अमरनाथ प्रवेश करके)

लाला शाबाश बच्चो। बड़े होकर तुम जरूर देश का नाम रोशन करोगे?

सगीता आपकी तारीफ?

लाला लाला अमरनाथ।

(बीच मे ही)

राजू क्रिकेट के खिलाड़ी?

लाला नही, कपड़े का व्यापारी।

आरती यहा भीड़ करने का मकसद?

लाला कपड़े के पैसे लेने आया हू।

सगीता किसी भी कीमत पर नही मिलेगे पैसे।

लाला कारण जान सकता हू।

सगीता पैसे की प्रोबलम को लेकर आज से हम लोग भूख हड़ताल पर है।

(हसते हुए)

लाला भूख हड़ताल। इस उम्र मे और तुम लोग करोगे?

(बीच मे ही)

राजू क्यो भूख हड़ताल के लिए सरकार ने कोई उम्र फिक्स कर रखी है?

लाला नही ऐसी तो कोई बात नहीं है, लेकिन

(सावित्री प्रवेश करके)

सावित्री नमस्ते लालाजी।

लाला जय झूलेलाल की। राजेन्द्रनाथ कहा है?

सावित्री वो अभी तक ऑफिस से आए नही है। उनके आते ही मै आपके पास भेज दूगी।

लाला देखिए बीबीजी सिर्फ उन्हे भेजने या उन्हे बोलने से काम नही चलेगा। एक साल होने को आया है। पैसे तो देने रहे दूर, राजेन्द्रनाथ जी ने शक्ल ही दिखानी बन्द कर दी है।

(बीच मे ही)

राजू अगर आपको पापाजी की शक्ल ही देखनी है तो मैं पापाजी की फोटो लाकर दिखलाऊ लालाजी।

(बिगड़कर)

सावित्री राजू (*कान पकड़कर*) बड़ो के साथ बदतमीजी करते हुए शर्म नही आती।

लाला अरे! अरे! यह क्या कर रही हो बेटी। आखिर बच्चे ही तो है। इनकी बातो का क्या बुरा मानना।

(बीच मे ही)

आरती आपने हमारी मम्मी को बेटी कहा लालाजी?

सगीता इसका मतलब रिश्ते मे आप हमारे नानाजी हुए?

लाला हा-हा बेटी! मै तुम्हारा नाना ही तो हू। क्यो? मै तुम्हारे नाना जैसा नही लगता हू?

(तीनो बच्चे लाला के चारो ओर घूमते हुए)

नानाजी आ गए, नानाजी आ गए।

(तीनो बच्चे एक साथ)

नानाजी जिन्दाबाद—नानाजी जिन्दाबाद।

लाला अरे! अरे! देखो बेटे। मै गिर जाऊगा।

(बिगड़ते हुए)

सावित्री राजू-आरती-क्या बदतमीजी है ये? छोडो लालाजी को।

राजू नही छोड़ेगे। हम नानाजी के साथ खेल रहे है। तुम अपना काम करो।

(सब एक साथ)

नानाजी जिन्दाबाद-नानाजी जिन्दाबाद।

सगीता नानाजी! आप मुझे इसी वक्त सौ रुपये दीजिए।

(बिगड़ते हुए)

सावित्री सगीता!

(बात काटते हुए)

सगीता मै अपने लिए मैक्सी लेकर आऊगी।

लाला हां-हा बेटी।

आरती नानाजी, आप मुझे दो सौ रुपये दीजिए। मै अपने लिए फ्राक सिलवाऊगी।

(बिगड़ते हुए)

सावित्री बदतमीज इधर आ तू। मै तेरे को फ्राक सिलवाकर देती हू।

(बीच मे ही)

राजू नानाजी, आप मुझे तीन सौ रुपये दीजिए। मै अपने लिए जीन्स लेकर आऊगा।

(डाटते हुए)

सावित्री राजू चलो इधर।

लाला नही-नही छोडो बेटी। बच्चो को कभी कोसा नही करते। चलो तुम सब इधर आओ बच्चो।

सावित्री माफ करना लालाजी। दिन ब दिन ज्यादा ही शैतान होते जा रहे है।

लाला ऐसा नही कहते बेटी। बुजदिल बच्चे किस काम के, बच्चे तो नटखट ही होने चाहिए। लो राजू बेटे, तुम्हारी जीन्स के लिए तीन सौ रुपये।

सावित्री यह आप क्या कर रहें है लालाजी ?

लाला लो आरती बेटी। तुम्हारी फ्राक के लिए ये दो सौ रुपये।

सावित्री ओफ ओ, अब बस भी कीजिए लालाजी।

लाला सगीता बेटी। यह सौ रुपये तुम्हारी मैक्सी के लिए।

सावित्री देखिए लालाजी आप मुझे शर्मिन्दा कर रहे है। इससे बच्चो की आदते भी खराब होती है (डाटते हुए) सगीता-आरती वापस लौटाओ पैसे।

लाला देखो बेटी। तुम नाना और नातियो के बीच मे न पड़ो तो अच्छा है।

सावित्री देखिए लालाजी। मै आपके कपड़े के पैसो को लेकर पहले से ही शर्मिन्दा हू।

लाला यह तुम क्या कह रही हो बेटी ?

सावित्री मै सच कह रही हू लाला जी। गिनीचुनी तो उन्हे तनख्वाह मिलती है और फिर कोई न कोई ऐसा चक्कर आ पड़ता है कि चाहते हुए भी आपके पैसे नही दे पा रहे है हम। इस कारण मारे शर्म के वो आपकी दूकान के आगे से भी नही निकल पा रहे है।

(एक लाइन बनाकर)

राजू नानाजी ?

(सब एक साथ)

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद

राजू नानाजी ?

(सब एक साथ)

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद

(तीनो बच्चो का अन्दर प्रस्थान)

लाला देखो बेटी, अगर बुरा न मानो तो मै तुमसे एक बात कहू?

सावित्री आप बुजुर्ग है पितातुल्य है। आपका कहा मै क्यो बुरा मानने लगूगी।

लाला देखो बेटी। भगवान का दिया मेरे पास सब कुछ है लेकिन मेरे अपनी कोई औलाद नही है। अगर तुम्हे कोई ऐतराज नही हो तो, मै तुम्हे अपनी बेटी कह सकता हू।

सावित्री नही नही लालाजी। बेटी का रिश्ता बहुत ही गरीब और महगा रिश्ता होता है। इसे निभाना बहुत मुश्किल हो जाता है इसलिए ही बेटी वालो को आज के युग मे बदनसीब कहा जाता है।

लाला नही-नही बेटी। बेटी लक्ष्मी ही नही बल्कि साक्षात् दुर्गा का रूप होती है। वो घर घर नही नर्क है बेटी, जिस घर मे कन्या ने जन्म न लिया हो। वो लोग भाग्यहीन होते है बेटी जिनके घर मे

(बीच मे ही)

सावित्री मै आपकी भावनाओं की कदर करती हू लालाजी लेकिन

(बीच मे)

लाला देखो बेटी। मै तुम्हे बार बार बेटी बेटी कहे जा रहा हू और तुम मुझे बार बार लाला कह कर मेरा अपमान किए जा रही हो।

सावित्री मुझे माफ कर दीजिए लालाजी। लेकिन इसान चाहे गरीब हो या अमीर। बेटी उसके लिए सरदर्द ही होती है। इसी कारण शादी की ओट लेकर, उसे घर से निकाल दिया जाता है, विदा कर दिया जाता है।

लाला यह धर्म का तकाजा है। समाज का दस्तूर है बेटी। इन्सान अमीर हो या गरीब उसे समाज के चलाए उसूलो पर चलना पडता है और न चाहते हुए भी अपने कलेजे के टुकड़े को एक न एक दिन विदा करना पड़ता है। खैर छोड़ो देखो बेटी ये पैसे तुम्हारी साड़ी के लिए है।

सावित्री अब बस भी कीजिए बाबूजी? आपने तो मुझे बेटी बनाया नही, उससे पहले ही दान दक्षिणा शुरू कर दी। मै तो पहले से ही आपके कर्ज से दबी हुई हू।

लाला यह कर्ज नही, धर्म है बेटी। इन्सान बहन बेटियो पर जितना खर्च करता है परमात्मा उसे दस गुनी बरकत देता है।

(तीनो बच्चे नारेबाजी करते हुए प्रवेश करते है)

सगीता नानाजी ?

(दोनो एक साथ)

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद।

सावित्री राजू-सगीता-आरती चलो इधर आओ और सब लोग नानाजी के पांव छुओ।

(तीनो बच्चे बारी-बारी लालाजी के पाव छूते है)

लाला अमर हो जाओ बच्चो। खूब पढ़ो और विद्वान् बनो। अच्छा बेटी अब मै चलूगा और हा राजेन्द्रनाथ के आने पर उसे बोल देना कि वो कपड़े के पैसे अपने किसी काम मे ले ले।

सावित्री लेकिन आप एक मिनट बैठिये न बाबूजी, मै आपके लिए चाय बनाकर लाती हूं।

लाला अरे! नही नही बेटी। पहले से ही मै बहुत लेट हो गया हू और दूकान मे नौकर को अकेले छोड़कर आया हू। फिर कभी आऊगा।

सावित्री फिर कभी नही बाबूजी। आप रोजाना ही आया कीजिएगा।

लाला अच्छा-अच्छा आऊगा।

(लाला का बाहर की ओर प्रस्थान)

(सावित्री आखे पौछती है।)

आरती क्या बात है मम्मी। तुम रो क्यो रही हो ? नानाजी ने तुम्हे कुछ कह दिया ?

राजू मत रो मम्मी। हम नानाजी के पैसे वापस लौटा देगे ?

सावित्री नही नही बेटे। लालाजी ने मुझे अपनी धर्म की बेटी बना लिया है इसलिए वैसे ही जरा।

सगीता तो इसमे रोने की कौनसी बात है मम्मी ? नाना जी तो बहुत अच्छे है।

राजू नानाजी इतने जल्दी क्यो चले गये मम्मी ?

आरती मुझे तो नानाजी से एक चीज और मागनी थी।

सावित्री देखो मै तुम्हारे पापाजी के आने पर तुम लोगो की जरूर शिकायत करूगी।

सगीता क्यो मम्मी ? हमने क्या किया है ?

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद

(तीनो बच्चो का अन्दर प्रस्थान)

लाला देखो बेटी, अगर बुरा न मानो तो मै तुमसे एक बात कहू?

सावित्री आप बुजुर्ग है पितातुल्य है। आपका कहा मै क्यो बुरा मानने लगूगी।

लाला देखो बेटी। भगवान का दिया मेरे पास सब कुछ है लेकिन मेरे अपनी कोई औलाद नही है। अगर तुम्हे कोई ऐतराज नही हो तो, मैं तुम्हे अपनी बेटी कह सकता हू।

सावित्री नही नही लालाजी। बेटी का रिश्ता बहुत ही गरीब और महगा रिश्ता होता है। इसे निभाना बहुत मुश्किल हो जाता है इसलिए ही बेटी वालो को आज के युग मे बदनसीब कहा जाता है।

लाला नही-नही बेटी। बेटी लक्ष्मी ही नही बल्कि साक्षात् दुर्गा का रूप होती है। वो घर घर नही नर्क है बेटी, जिस घर मे कन्या ने जन्म न लिया हो। वो लोग भाग्यहीन होते है बेटी जिनके घर मे

(बीच मे ही)

सावित्री मै आपकी भावनाओं की कदर करती हू लालाजी लेकिन

(बीच मे)

लाला देखो बेटी। मै तुम्हे बार बार बेटी-बेटी कहे जा रहा हू और तुम मुझे बार-बार लाला कह कर मेरा अपमान किए जा रही हो।

सावित्री मुझे माफ कर दीजिए लालाजी। लेकिन इसान चाहे गरीब हो या अमीर। बेटी उसके लिए सरदर्द ही होती है। इसी कारण शादी की ओट लेकर, उसे घर से निकाल दिया जाता है विदा कर दिया जाता है।

लाला यह धर्म का तकाजा है। समाज का दस्तूर है बेटी। इन्सान अमीर हो या गरीब उसे समाज के चलाए उसूलो पर चलना पड़ता है और न चाहते हुए भी अपने कलेजे के टुकडे को एक न एक दिन विदा करना पड़ता है। खैर छोड़ो देखो बेटी ये पैसे तुम्हारी साड़ी के लिए है।

सावित्री अब बस भी कीजिए बाबूजी? आपने तो मुझे बेटी बनाया नही, उससे पहले ही दान दक्षिणा शुरू कर दी। मै तो पहले से ही आपके कर्ज से दबी हुई हू।

लाला यह कर्ज नही धर्म है बेटी। इन्सान बहन बेटियो पर जितना खर्च करता है परमात्मा उसे दस गुनी बरकत देता है।

(तीनो बच्चे नारेबाजी करते हुए प्रवेश करते है)

सगीता नानाजी ?

(दोनो एक साथ)

जिन्दाबाद जिन्दाबाद।

सावित्री राजू सगीता-आरती चलो इधर आओ और सब लोग नानाजी के पाव छुओ।

(तीनो बच्चे बारी-बारी लालाजी के पाव छूते है)

लाला अमर हो जाओ बच्चो। खूब पढ़ो और विद्वान् बनो। अच्छा बेटी अब मै चलूगा और हा राजेन्द्रनाथ के आने पर उसे बोल देना कि वो कपड़े के पैसे अपने किसी काम मे ले ले।

सावित्री लेकिन आप एक मिनट बैठिये न बाबूजी, मै आपके लिए चाय बनाकर लाती हू।

लाला अरे! नही नही बेटी। पहले से ही मै बहुत लेट हो गया हू और दूकान मे नौकर को अकेले छोड़कर आया हू। फिर कभी आऊगा।

सावित्री फिर कभी नही बाबूजी। आप रोजाना ही आया कीजिएगा।

लाला अच्छा-अच्छा आऊगा।

(लाला का बाहर की ओर प्रस्थान)

(सावित्री आखे पोछती है।)

आरती क्या बात है मम्मी। तुम रो क्यो रही हो ? नानाजी ने तुम्हे कुछ कह दिया ?

राजू मत रो मम्मी। हम नानाजी के पैसे वापस लौटा देगे ?

सावित्री नही नही बेटे। लालाजी ने मुझे अपनी धर्म की बेटी बना लिया है इसलिए वैसे ही जरा।

सगीता तो इसमे रोने की कौनसी बात है मम्मी ? नाना जी तो बहुत अच्छे है।

राजू नानाजी इतने जल्दी क्यो चले गये मम्मी ?

आरती मुझे तो नानाजी से एक चीज और मागनी थी।

सावित्री देखो मै तुम्हारे पापाजी के आने पर तुम लोगो की जरूर शिकायत करूगी।

सगीता क्यो मम्मी ? हमने क्या किया है ?

सावित्री अब इससे ज्यादा और क्या करने का इरादा था तुम्हारा? घर आए मेहमान के साथ ऐसा बर्ताव करते हैं?

(तीनो बच्चे एक साथ)

संगीता सॉरी मम्मी। ये लो, नानाजी के आने पर ये सारे पैसे उन्हे वापस लौटा देना।

सावित्री पैसो की बात नही है बेटे। लालाजी बहुत अच्छे इन्सान है। आइन्दा कभी आवे तो उनके पाव छूना लेकिन ये आज वाली हरकत कभी मत करना।

(दरवाजे पर दस्तक)

शायद तुम्हारे पापाजी आ गये हैं। देखो बेटे अभी तुम लोग नानाजी वाली बात तुम्हारे पापाजी को मत बोलना वरना तुम्हारी मागे धरी की धरी रह जायेगी। समझ गए?

राजू समझ गए मम्मी।

(सावित्री का अन्दर की ओर प्रस्थान)

(हाथ ऊपर उठाते हुए)

संगीता हमारी मागे?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो पूरी करो।

संगीता हमारी मागे?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

संगीता औलाद एकता।

(दोनो एक साथ)

जिन्दाबाद जिन्दाबाद।

संगीता औलाद एकता।

(दोनो एक साथ)

जिन्दाबाद जिन्दाबाद।

(राजेन्द्रनाथ का प्रवेश)

संगीता हमारी मागे?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

राजेन्द्र अरे। यह क्या? घर मे भी नारेबाजी?

सगीता हम लोगो से बात करने की कोई जरूरत नही है आपको?

(बीच मे ही)

राजेन्द्र मगर बात क्या है बतलाओगे नही?

सगीता आज से हम लोग भूख हड़ताल पर है। बगैर शर्त कोई वार्ता नही।

राजेन्द्र भूख हड़ताल! वार्ता! आखिर यह रगड़ा क्या है?

सगीता हमारी मागे?

(सब एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

सगीता इन्कलाब?

(सब एक साथ)

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद।

सगीता इन्कलाब?

(सब एक साथ)

जिन्दाबाद-जिन्दाबाद।

(सावित्री प्रवेश करती है)

सगीता हमारी मागे?

(सब एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

राजेन्द्र क्यो श्रीमतीजी? आप इस भूख हड़ताल मे शामिल नही हुई? आपकी भी काफी सारी फरमाइशे है?

सावित्री तुम ठीक कहते हो। इन लोगो से दूर रहकर मे कहा जाऊगी।

(हाथ उठाते हुए)

हमारी मागे?

(सब एक साथ)

पूरी करो-पूरी करो।

(हाथ उठाते हुए)

सावित्री हम सब ?

(सब एक साथ)

एक है-एक है।

संगीता जो हम से टकराएगा ?

(सब एक साथ)

मिट्टी में मिल जाएगा।

संगीता मांगे पूरी कर न सके ?

(दोनों एक साथ)

वो पापाजी निकम्मे है।

संगीता जो पापाजी निकम्मे है ?

(दोनों एक साथ)

वो पापाजी बदलने है।

(राजेन्द्रनाथ ताली बजाता है)

सावित्री राजू-संगीता शर्म नहीं आती ऐसे गन्दे नारे लगाते हुए।

आरती तुम लोगों को शर्म नहीं आती। रोज-रोज झूठे बहाने बनाते हुए।

(ताली बजाते हुए)

राजेन्द्र शाबाश बेटी। लगाओ नारे लेकिन जरा जोर से।

संगीता हक लेंगे जूते मार ?

(दोनों एक साथ)

पापाजी को दे दो तार।

राजेन्द्र देखो मुझे तार देने की जरूरत नहीं है। मैं तुम्हारे सामने ही खड़ा हूं। इसलिए पहले मुझे यह बतलाओ कि आखिर तुम्हारी मांगे क्या क्या है ?

संगीता मांग नम्बर एक। मुझे आज अभी मैक्सी लाकर दीजिए।

आरती मांग नम्बर दो। मुझे फ्राक सिलवाकर दीजिए।

राजू मांग नम्बर तीन। मुझे जीन्स की पेंट चाहिए।

राजेन्द्र आप भी बोल दीजिए मैडम। आपको भी फोरेन की साड़ी चाहिए पूरे आठ सौ साठ की।

सावित्री जब तुम्हे पता ही है तो मुझे क्यो पूछ रहे हो ?

राजेन्द्र तो सुन लीजिए ध्यान से। मैं तुम लोगो की एक भी माग को पूरा करने की स्थिति मे नही हू, इसलिए जारी रखिए अपनी भूख हड़ताल।

राजू आप एक बार अच्छी तरह और विचार कर लीजिए ताकि बाद मे पछताना न पड़े।

राजेन्द्र अच्छी बात है। भूख हड़ताल करने से पहले यह मिठाई तो खा लो ?

राजू हमे कोई मिठाई विठाई नही खानी है।

राजेन्द्र वो तुम लोगो की इच्छा। मुझे तो जोरो की भूख लगी है इसलिए मैं तो खा रहा हू।

(राजेन्द्रनाथ मिठाई खाने लगता है और तीनो बच्चे ललचाई नजर से मिठाई की ओर देखते है और एकाएक हाथ उठाकर)

सगीता हमारी मागे ?

(दोनो एक साथ)

पूरी करो - पूरी करो।

सगीता जो हम से टकराएगा ?

(दोनो एक साथ)

मिट्टी मे मिल जायेगा।

राजेन्द्र अच्छी बात है। यह लो मेरी तनख्वाह। जाओ अपनी अपनी फरमाइश को पूरा करो और सुनो। कुछ पैसे बच जाय तो मेरे लिए भी एक कफन का टुकडा खरीद लाना ?

(बिगडते हुए)

सावित्री बच्चो की मजाक ही मजाक मे क्या पागलो जैसी बाते करने लगे हो जी ? भाड़ मे जाय हम लोगो की फरमाइशे। हमे कुछ भी नही चाहिए।

(तीनो बच्चो को बाहो मे समेटते हुए) हम जिस हाल मे हैं बस ठीक है।

राजेन्द्र तो मै इतने कम पैसो मे किस-किस की फरमाइश को पूरा करू। तीन महीनो से टेलर मास्टर जान खाए जा रहा है। दूधवाला देखते ही चील की तरह झपटता है। जरा-सी आमदनी और ढेर सारा खर्च।

(बीच मे ही)

राजू तो इतने सारे बच्चे पैदा ही क्यो किए आपने ?
राजेन्द्र अच्छा बेटे। यह गलती भी मेरी है ? बच्चे मैने पैदा किए हैं ?
(बीच मे ही)
आरती तो किसकी गलती है, किसने पैदा किए हैं ? बतलाइए ?
राजेन्द्र ये अपनी मम्मी से पूछो कि गलती किसकी है, किसने
(बीच मे ही)
सावित्री मम्मी से क्या पूछे। सारी मुसीबत की जड़ तुम हो, तुम ?
राजेन्द्र मै क्यो ? गलती तुम्हारी नही थी तो किसकी थी ?
सावित्री गलती मेरी नही तुम्हारी थी।
राजेन्द्र मैंने कहा ना गलती
(बात काटते हुए)
सावित्री फिजूल की बकवास नही। गलती मेरी नही तुम्हारी है।
राजेन्द्र बकवास मै नही तुम किये जा रही हो ?
सावित्री करूगी-करूगी करूगी। चढ़ा दो मुझे फासी पर।
राजेन्द्र जाओ-जाओ अन्दर जाओ और अपना काम करो ?
सावित्री नही जाऊगी अन्दर।
राजेन्द्र देखो रोने से अदालते नही पिघला करती। रोना मुझे भी आता है।
(आसू पोछते हुए)
सावित्री रोए मेरी जूती। मै प्याज काटती हुई आई हू इसलिए
(तीनो बच्चे कमरे मे दौडते है। राजू जज बन जाता है।)
(एक पेशकार तथा एक चपरासी बन जाता है।)
राजू ऑर्डर-ऑर्डर! यह रोना धोना बन्द किया जाय क्योकि दोषी तुम दोनो लोग हो। गलती भी तुम दोनो जनो की है।
राजेन्द्र हम दोनो की, वो कैसे जज साहब ?
राजू परिवार नियोजन के बारे मे जानते हो तुम लोग ?
राजेन्द्र परिवार नियोजन ? यह क्या बला है, जज साहब ?
राजू घर के बाहर जाते हो या दिन भर घर मे ही पडे रहते हो ?
(बीच मे ही)
राजेन्द्र दिन भर बाहर ही भटकता हू जजसाहब, और करता ही क्या हू ?

सावित्री ये झूठ बोल रहे है जज साहब, ऑफिस से आने के बाद घर मे ही पड़े रहते है।

राजू ऑर्डर-ऑर्डर। जिससे जो सवाल पूछा जाय वो ही जवाब दे।

सावित्री सॉरी जज साहब।

राजेन्द्र जज साहब पानी बिजली का बिल मै भरने जाता हू। बाजार से सब्जी मै लेकर आता हू। दूध मै लेकर आता हू। ऑफिस जाता हू और आता हू। दिन भर बैल की तरह मै मरता हू।

राजू ऑर्डर-ऑर्डर बाजार जाते हो तो बाजार मे दीवारो पर बडे-बडे पोस्टर चिपकाए हुए देखे है? कभी पढ़े है?

राजेन्द्र हमेशा देखता हू पढ़ता हू। देश की खुशहाली के लिए इन्दिरा विकास पत्र खरीदिए। हमेशा सात फोटो मार्का नशवार ही प्रयोग करे। आसाम की बढ़िया चाय काला घोड़ा लाल घोडा। उज्वल भविष्य के लिए जीवन बीमा करवाइए। लायफ बॉय है जहा, तन्दुरुस्ती है वहा। डाबर का काला दन्त मजन

राजू ऑर्डर-ऑर्डर, मै परिवार नियोजन के बारे मे बात कर रहा हू। परिवार नियोजन के बारे मे कुछ नही पढ़ा आपने?

राजेन्द्र परिवार नियोजन? हा-हा, वो भी पढ़ा है, जज साहब। कम सन्तान, सुखी इन्सान। एक के बाद अभी नही। दो के बाद कभी नही।

राजू उन सब को पढ़कर नही लगता कि आपने कोई बडी भारी गलती की है?

राजेन्द्र लेकिन जज साहब

(बीच मे ही)

राजू लेकिन वेकिन कुछ नही है। आप लोगो ने सगीता तथा आरती के होने के बाद अगर परिवार नियोजन अपना लिया होता तो आज इन लोगो को कच्छे बनियान के लिए रोना नही पडता।

राजेन्द्र अरे राजू बेटे। अगर हम ऐसा करते तो तुम जैसा प्यारा प्यारा मुन्ना बेटा कहा से आता?

राजू मुझे मारो गोली। अगर मै नही हुआ होता तो आप लोग मुन्ने की चाह मे एक लम्बी चौड़ी भीड इकट्ठा करने मे कामयाब नही हो जाते।

राजेन्द्र यह सच है जज साहब लेकिन इसके लिए मैने सावित्री को बोला था लेकिन

(बीच मे)

सावित्री ये सरासर झूठ बोल रहे है, जज साहब। मैने तो आरती के होने के बाद ही इन्हे बोल दिया था कि अब लड़के वड़के का चक्कर छोड़ो और

(बीच मे)

राजेन्द्र यह औरत सरासर झूठ बोले जा रही है जज साहब।

राजू ऑर्डर-ऑर्डर, मिस्टर वर्मा आप बहस के दौरान खामोश रहे।

राजेन्द्र आई एम सॉरी, जज साहब।

राजू श्रीमती सावित्री देवी। आपने अपनी पैरवी के लिए किसी वकील को मुकर्रर किया है?

सावित्री जी नही जज साहब। हुजूर की दया से मै स्वय एल एल बी हू इसलिए मै अपनी पैरवी खुद करना चाहती हू।

राजू अदालत इजाजत देती है।

सावित्री थेक्यु योर ऑनर, मै अदालत के सामने दरख्वास्त करती हू कि औरत के साथ समाज ने ही नही बल्कि भगवान ने भी पक्षपात किया है।

राजू ऑर्डर ऑर्डर श्रीमती सावित्री देवी पहेलिया न बुझाये और जो कुछ कहना है साफ-साफ कहे।

सावित्री जजसाहब। मेरे बार-बार गिडगिडाने व हाथ जोड़ने के बाद भी मुल्जिम ने मेरी एक नही सुनी और मुझे

(बीच मे ही)

राजेन्द्र आई ऑब्जेक्ट योर ऑनर

राजू आब्जेक्शन रिजेक्ट, कन्टीन्यू मिसेज वर्मा।

(अभिवादन)

सावित्री थैक्यु योर ऑनर। मेरे बार बार प्रार्थना करने व मेरे बार बार समझाने के बावजूद मुझे हॉस्पिटल नही जाने दिया और मेरे ज्यादा जिद करने पर मुल्जिम ने लड़के के अभाव मे मुझे दूसरी शादी करने की धमकी दी।

(बीच मे)

राजेन्द्र वो तो मैने यू ही मजाक किया था जज साहब।

राजू ऑर्डर-ऑर्डर। एक लम्बी बहस सुनी गई। श्रीमती वर्मा के बयानात सुनकर अदालत इस नतीजे पर पहुची है कि श्रीमती सावित्री देवी वर्मा निर्दोष है क्योंकि हमारे देश मे पुरुष प्रधान है, इसलिए अदालत

इस केस मे लिनियन्सी बरतते हुए क्योंकि इसमे 99% श्री राजेन्द्रनाथ का दोष प्रतीत होता है लेकिन राजेन्द्रनाथ की दयनीय स्थिति को ध्यान मे रखते हुए हिदायत की जाती है कि फरमाइश को पूरा करे अन्यथा अदालत आपको परिवार नियोजन अपनाने के लिए पाबन्द करती है।

राजेन्द्र मुझे आपका फैसला मन्जूर है जज साहब। कल से तीन दिनो का राजपत्रित अवकाश है। मै कल ही अपना ऑपरेशन करवा लूगा क्योंकि इस कमरतोड़ महगाई और मेरी मासिक आय को देखते हुए मै अपने बच्चो की मागो को पूरा नही कर सकता।

राजू ऑर्डर-ऑर्डर! मिस्टर वर्मा, तुम्हारी फरियाद को अदालत मानती है लेकिन पूर्व मे की गई गलती के लिए अपने बच्चो की फरमाइश को पूरा करने के लिए तुमको राजनेताओं की तरह कुछ तो आश्वासन देना ही होगा।

राजेन्द्र नही-नही जज साहब। मै झूठे आश्वासन नही दे सकता क्योंकि इससे बच्चो के विश्वास को ठेस पहुचती है इसलिए मै अदालत के सामने प्रोमिज करता हू कि दीपावली पर मिलने वाला बोनस मै बच्चो की फरमाइश को पूरा करने मे खर्च कर दूगा।

(बीच मे ही)

सावित्री एक मेरी भी फरियाद है, जज साहब।

राजू बयान करने की इजाजत है।

सावित्री दीपावली के शुभ अवसर पर ज्यादा नही तो कम से कम एक नई साड़ी तो मुझे भी लाकर दी जाय।

राजू ऑर्डर-ऑर्डर। अभी दीपावली काफी दूर है लेकिन मिस्टर वर्मा अदालत के ध्यान मे लाया गया है कि आज इतफाकिया कही से आपको ग्यारह सौ रुपये की प्राप्ति हुई है इसलिए आपको यह फरमाइश आज ही पूरी करनी होगी।

राजेन्द्र लेकिन मुझे ऐसी कोई जानकारी नही है जज साहब। अगर यह सच है तो मुझे आपका फैसला मजूर है क्योंकि मै खुद कई दिनो से फटी हुई चप्पले पहने ऑफिस जा रहा हू।

(तीनो बच्चे नाचने लगते है)

पापाजी हार गए, पापाजी मान गए पापाजी मान गये।

(उसी दौरान दरवाजे पर दस्तक)

राजेन्द्र यह लो गाव बसा नही और भिखारी पहले आ गए। जाओ बेटी, बाहर देखो कौन है अगर मेरा कोई पूछे तो बोल देना कि मैं जयपुर गया हुआ हू।

(राजेन्द्रनाथ व सावित्री का अन्दर की ओर प्रस्थान)

(आरती दरवाजा खोलती है पोस्टमैन का प्रवेश।)

आरती देखिए अकल, पापाजी ने बोला है मै सरकारी काम से जयपुर गया हुआ हू इसलिए आज तनख्वाह नही मिली है। तनख्वाह मिलते ही आपके पैसे पहुचा दिए जायेगे।

(हसते हुए)

पोस्टमैन देखो बेटी। मै राशन वाला लाला नही हू। मै पोस्टमैन हू। सिर्फ चिट्ठी देने आया हू।

आरती फिर आप एक मिनट रुकिए अकल (ऊची आवाज मे) पापाजी बाहर आ जाइये। पोस्टमैन अकल चिट्ठी देने आये है

(हसते हुए)

पोस्टमैन कोई बात नही बेटी। यह चिट्ठी अपने पापाजी को दे देना, मैं चलता हू।

(पोस्टमैन का प्रस्थान व राजेन्द्रनाथ का प्रवेश)

आरती लाला-वाला कोई नही था पापाजी। पोस्टमैन अकल ये चिट्ठी देने आए थे।

(पत्र देती है। राजेन्द्रनाथ पत्र को पढ़ते-पढ़ते)

राजेन्द्र वो तो ठीक है पगली लेकिन आने वालो को ऐसा थोड़े ही बोलते है कि पापाजी ने बोला है कि मै जयपुर गया हुआ हू।

आरती सॉरी पापाजी।

(सावित्री प्रवेश करके)

सावित्री किसका लैटर है?

राजेन्द्र घबराओ नही लव लैटर नही है।

सावित्री किस का दिमाग खराब हुआ है जो इस उम्र मे तुमको प्रेम पत्र लिखेगी?

राजेन्द्र क्यो, मैं साठ और चार चौसठ का हो गया हू?

सावित्री अब नही तो दस-बीस सालो मे हो जावोगे, चिन्ता क्यो कर रहे हो

(राजेन्द्रनाथ सावित्री को घूरता है)

पढ़ो-पढ़ो चिट्ठी पढ़ो। क्या लिखा है इसमे ?

राजेन्द्र मारे गये गुलफ़ाम।

(एकाएक बैठता है)

सावित्री क्यो क्या हुआ ?

राजेन्द्र वो चामड़ प्रसाद, कल फिर आ रहा है।

(बीच मे ही)

सावित्री चामड़ प्रसाद! कौन चामड़ प्रसाद ?

राजेन्द्र अरे! वो ही कमीना अम्बालाल माथुर। किसी सरकारी काम से कल फिर हमारे यहां मेहमान बनकर आ रहा है।

सावित्री आग लगे उस चामड़ प्रसाद को। भगवान करे ट्रेन का एक्सिडेंट हो जाये।

(बीच मे)

राजेन्द्र लेकिन वो किसी ट्रक मे बैठकर आएगा।

(बीच मे ही)

संगीता कौन आ रहा है मम्मी ?

सावित्री मेरी मौत, बेटी।

आरती बताओ ना मम्मी ? कौन आ रहा है ?

राजेन्द्र अरे! वो ही तुम्हारा मक्खीचूस अंकल।

संगीता ओफ हो पापा। सुबह सुबह किस मनहूश का नाम ले लिया आपने ?

राजेन्द्र अगर आकर जम गया तो हरामखोर वापस जाने का नाम तक नही लेगा।

(बीच मे ही)

सावित्री इस बार आने दो उसे, मै उसकी ऐसी आवभगत करूगी ऐसी आवभगत करूगी कि आइन्दा अपने यहा तो क्या किसी और के यहा भी जाने का नाम नही लेगा।

राजेन्द्र बस बस रहने दो। तुम हर बार यही कहती हो लेकिन होता-वोता कुछ नही तुमसे। क्यो, पिछली बार तुमने नही कहा था कि उसे बीच मे नही भगाया तो मेरा नाम सावित्री नही ?

सावित्री — अरे पिछली बार, मै जरा तुम्हारा लिहाज खा गई थी वरना

राजेन्द्र — लेकिन इस बार वो कमीना बाल बच्चो को साथ लेकर आ रहा है।

सावित्री — बुरा हो उस खूसराजिये का। जिसने अपनी आफत हमारे गले मढ दी वरना उस कमीने को हम थोड़े ही जानते थे।

राजेन्द्र — और तो कुछ नही हरामखोर ने हमारे घर को धर्मशाला समझ लिया है। कमीना सरकारी काम से आता है। टी ए -डी ए कमाता है और

(बीच मे ही)

सावित्री — और छाती हमारी जलाता है और तो ओर आते जाते समय भुजिया, पापड़ तुम साथ और बान्ध देते हो।

सगीता — देखो मम्मी, तुम लोग आपस मे माया-पच्ची करो और हम तीनो बहन-भाई अन्दर बैठकर अकल को वापस भगाने का प्लान बना रहे है। इसलिए हमे डिस्टर्ब मत करना।

राजेन्द्र — हा हा बेटे। देखते हैं आज उसे वापस भगाने मे कौन कामयाब होता है। उसे मेरी और से एक एक आइसक्रीम भेट की जायेगी।

सगीता — प्रोमिज पापा।

राजेन्द्र — प्रोमिज।

(बच्चो का अन्दर प्रस्थान)

बेचारे बच्चो के लिए एक फ्राक लाकर नही दे सकता और इस बेईमान के ऊपर हर महीने पाच सात सौ रुपये खर्च हो जाते है।

सावित्री — अब मै क्या बताऊँ मालूम है आज कपड़े वाले लालाजी घर पर ही आ गए थे और उनको देखते ही मुझे इतनी शर्म महसूस हुई कि बस मैं मरी नही।

राजेन्द्र — वो तो आने ही थे। एक महिने का कहकर कपडा लेकर आया था और आज पूरा एक साल से ऊपर हो गया है। अगर मै घर मे होता तो उन्हे पूरी तनख्वाह ही पकड़ा देता। चाहे बाद मे पूरा महिना भूखो ही मरना पड़ता। हा, फिर कैसे किया तुमने?

सावित्री — कैसे क्या? बच्चो की मजाक ही मजाक मे

राजेन्द्र — क्यो क्या हुआ?

सावित्री — भगवान जाने आज किसका मुह देखा था मैने। मै तो निहाल हो गई। बस समझो धन्य हो गई।

(पास आकर)

राजेन्द्र धन्य हो गई, कैसे? लालाजी के गले की चैन टूट कर हमारे यहा गिर गई? कम से कम पाच तोले की पक्की होगी। सुनो सावित्री, लालाजी को तुम्हारे पर शक तो नही हुआ?

सावित्री तुम्हारी तो मति मारी गई है।

राजेन्द्र तो क्या, लालाजी वापस जाते समय अपना रुपयो भरा थैला यही भूल गये क्योंकि दस बीस हजार तो हर वक्त वो अपने साथ ही रखते है।

सावित्री हे भगवान! अब मै इनकी नीयत का क्या करू?

राजेन्द्र तो जल्दी बोलो ना? तुम धन्य कैसे हो गई? आखिर हुआ क्या?

सावित्री तुम्हे पता है, मेरे माता-पिता की एक बस के उलट जाने से एक साथ मृत्यु हो गई थी।

राजेन्द्र तो उससे तुम धन्य कैसे हो गई? देखा जाये तो हमारे घर कगाली उन्ही के मरने के बाद ही आई है। यू बोलो उनके मरने से हम बर्बाद हो गए, लुट गए।

सावित्री अब तुम मेरी भी सुनोगे या बोलते ही जाओगे?

राजेन्द्र वो तो ठीक है लेकिन मेरी समझ मे नही आ रहा है कि तुम निहाल कैसे हो गई? क्या लालाजी के सारे पैसे चुका दिए है तुमने?

सावित्री ओह! अब कुछ सब्र भी करो। इतने उतावले क्यो हो रहे हो? मुझे भी कुछ कहने दो?

राजेन्द्र प्लीज जल्दी बोलो ना। तुम धन्य कैसे हो गई?

सावित्री अरे बात यह हुई कि लालाजी ने आते ही बोल दिया कि कपड़े के पैसे देने तो रहे दूर, राजेन्द्रनाथ ने शक्ल दिखाना भी बद कर दिया। इतने मे राजू बोल पडा, लालाजी आपको पापाजी की शक्ल देखनी है तो मै, पापाजी की फोटो लाकर दिखाऊ।

राजेन्द्र बड़ा बदतमीज है।

सावित्री मैंने राजू का कान पकड कर एक चाटा मारना चाहा लेकिन बीच मे ही लालाजी बोल पड़े—यह तुम क्या कर रही हो बेटी? फिर क्या था तीनो बच्चो ने लालाजी को चारो ओर से घेर लिया और कहने लगे कि आपने हमारी मम्मी को बेटी कहा, इसका मतलब आप हमारे नानाजी हुए और तीनो ने नाचना शुरू कर दिया। नानाजी आ गए नानाजी आ गए नानाजी जिन्दाबाद-जिन्दाबाद नानाजी

जिन्दाबाद। उसके बाद राजू बोल पड़ा, नानाजी मुझे अभी इसी वक्त
आप तीन सौ रुपये दीजिए। मै अपने लिए जिन्स लेकर आऊगा।

राजेन्द्र एक थप्पड नही लगाया शैतान के बच्चे के?

सावित्री फिर आरती बोल पड़ी। नानाजी मुझे दो सौ रुपये दीजिए। बाद मे
सगीता भी, कि नानाजी मुझे, सौ रुपये दीजिए मै मैक्सी लेकर
आऊगी।

राजेन्द्र बहुत गलती की तुमने? सबके, एक एक झापड़ लगाना था। दिन ब
दिन ज्यादा ही बदतमीज हुए जा रहे है। फिर क्या हुआ?

सावित्री होना क्या था बस, लालाजी ने उनकी माग के अनुसार सबको पैसे
पकड़ाने शुरू कर दिए। मै तो शर्म और गुस्से के मारे मर सी गई।
मैने लालाजी को मना भी किया लेकिन वो मेरे पर गुस्सा हो गए
और कहने लगे—मै तुम्हे बेटी-बेटी कहे जा रहा हू और तुम मुझे
बार-बार लाला-लाला कहे जा रही हो? फिर नम्रता से बोले, देखो
बेटी, भगवान का दिया मेरे पास सब कुछ है लेकिन मेरे अपनी कोई
औलाद नही है। अगर तुम्हे कोई ऐतराज न हो तो मै तुम्हे आज से
अपनी बेटी मान सकता हू। भगवान कसम मुझे तो अपने हाल पर
रोना आ गया। अब तुम ही बतलाओ मै उन्हे कैसे मना करती।

राजेन्द्र अब बस भी करो सावित्री वरना मै रो पड़ूगा। सच सावित्री तुम तो
क्या अगर यहा कोई करोड़पति औरत होती तो वो भी किसी गरीब
बाप का दिल नही तोडती।

सावित्री और मना करते-करते मुझे साडी के लिए पाच सौ रुपये पकड़ा दिए
और जाते-जाते यह भी कह गए कि राजेन्द्रनाथ को बोल देना कि वो
कपडे वाले पैसे अपने किसी काम मे ले ले।

राजेन्द्र रियली? विश्वास नही होता कि दुनिया मे ऐसे भले लोग भी मौजूद
है। देखो सावित्री, तुम लालाजी का दिल मत तोडना क्योंकि नारियल
ऊपर से जरूर सक्त होता है लेकिन अन्दर से वो बहुत कोमल होता
है। हमे लालाजी के पैसो से कोई मतलब नही है लेकिन हम लोगो
को बडो का आशीर्वाद मिल जाय सावित्री बस बहुत है।

सावित्री मै भी तुम्हे यही कहने वाली थी कि मुझे मेरे मरे हुए मा-बाप फिर
से मिल गए। अब मै अनाथ नही हू।

राजेन्द्र खैर किसी ने सच ही कहा है कि ईश्वर जो भी करता है अच्छा ही
करता है। तुम्हे तुम्हारे खोए हुए बाबूजी मिल गए और मुझे दिली
शकून अब ऐसा करो, लालाजी को तो थोड़ी देर के लिए भूल
जाओ और उस कमीने अम्बालाल को वापस भगाने का जुगाड़

बैठाओ वरना

सावित्री देखो मै तुम्हे एक राय देती हू अगर मेरी मानो तो।

राजेन्द्र अरे, बीस राय दो ना बाबा, मुझे क्या तकलीफ है।

सावित्री ऐसा है, हम लोग यह मकान छोड़कर कही दूसरा मकान किराये पर ले ले, तो कैसा रहेगा?

राजेन्द्र घर का मकान छोड़कर किराये का मकान ले, अरे बेवकूफ! वो कमीना मेरे ऑफिस का पता जानता है वो वहा नही पहुच जाएगा?

सावित्री तो ऐसा करे। उसके आने पर हम सब लोग रोने को बैठ जाए कि हमारा फ्ला मर गया।

राजेन्द्र अरे बावली ऐसा करने पर, वो भी हमारे साथ रोने बैठ जाएगा और बारह दिनो तक बराबर रोता रहेगा और तो और सवा महीने का घड़िया भरवाने के बहाने चालीसवे दिन फिर आ मरेगा।

सावित्री अच्छा, एक बार हम लोग सब के सब उसके यहा मेहमान बनकर चले चले तो कैसा रहेगा?

राजेन्द्र देखो भाग्यवान! वो हरामखोर सरकारी काम से आता है यहा। अगर हम वहा चले तो मेरी पे और मेरी सारी छुट्टिया आने-जाने मे खत्म हो जायेगी। मतलब खरबूजा चाकू पर गिरे या चाकू खरबूजे पर। नुकसान हमारा ही होना है—समझी आप?

सावित्री अगर तुम ऑफिस जाते समय हमे घर मे बन्द करके, मकान के ताला लगाकर चले जाओ तो कैसा रहेगा।

राजेन्द्र अगर उसने मुझे ऑफिस मे पकड लिया तो मै उसे साथ लिए लिए कहा भटकता फिरूगा।

सावित्री अगर मे उस पर यह झूठा इल्जाम लगा दू कि उसने मुझे घर म अकेला देख कर मेरे साथ छेडछाड की। तो कैसा रहेगा?

राजेन्द्र आइडिया तो बहुत अच्छा है। उस पर पुलिस केस बनेगा। तुम्हारी डॉक्टरी जाच होगी। अदालत के सामने तुम्हे खडा होना पड़ेगा। गीता पर हाथ रखकर कहना होगा कि मै जो कुछ कहूगी सच कहूगी और सच के अलावा कुछ नही कहूगी। उसके बाद सरकारी वकील तुमसे पूछेगा कि सब से पहले अम्बालाल माथुर ने तुम्हारे शरीर के कौन से हिस्से पर कहा हाथ लगाया।

(बीच मे चिल्लाकर)

सावित्री भाड़ मे जाय वो अम्बालाल माथुर और उसके ऊपर गिरो तुम?

(राजेन्द्रनाथ जोरो से हसते हुए)

राजेन्द्र क्यो क्या हुआ सावित्री जी ? और कोई सजेशन।

सावित्री अब मुझे ही मुझे पूछते जाओगे या तुम भी कुछ सोचोगे ?

राजेन्द्र भई मेरी समझ मे कुछ भी नही आ रहा है कि उसे यहा से कैसे भगाया जाय। बस एक ही बात बार-बार सोच रहा हू ?

सावित्री क्या है बोलो ना ?

राजेन्द्र बस खाने मे जहर मिलाकर उस हरामखोर को खिला दिया जाय और मर जाने पर लाश को किसी गन्दे नाले मे फेक दिया जाय।

(हसते हुए)

सावित्री लेकिन तुम्ही तो बतला रहे हो कि वो इस बार अकेला नही बीवी-बच्चो को साथ लेकर आ रहा है। किस-किस को जहर दोगे और किस-किस की लाश को गन्दे नाले मे फैंक-फैंक कर आओगे। अगर पकड़े गए तो पूरी जिन्दगी जेल काटोगे और मुझे दुनिया जीने नही देगी और हमारे बच्चे खूनी के बच्चे कहलाये जायेगे। यू नो ?

राजेन्द्र थैक्स गॉड, अब सिर्फ एक योजना और बची है।

सावित्री अब जो भी है जल्दी बतलाओ क्योंकि वो आने वाला ही है।

राजेन्द्र अरे अभी नही, कल आधी रात को आकर बोर करेगा।

सावित्री उसे मारो गोली। आपकी योजना क्या है, जल्दी बतलाओ।

राजेन्द्र सुनो ! पुलिस प्रशासन को एक पत्र लिखकर छोड देते है कि अम्बालाल माथुर नाम का एक आदमी, जो सरकारी टूर निकाल कर जोधपुर से आए दिन हमारे यहा मेहमान बनकर आ जाता है और हजार कोशिश के बाद भी हम लोग उससे पीछा नही छुड़ा पा रहे है। आखिर तग आकर मैं अपने तीन बच्चो तथा अपनी धर्मपत्नी के साथ जहर खा कर मर रहा हू अगर मै अकेला मरता हू तो यह कमीना सान्त्वना देने के बहाने मेरे बच्चो के पास आता जाता रहेगा इसलिए मे अपने पूरे परिवार के साथ ही मर रहा हू। बस मेरी आखिरी इच्छा यह है कि मेरे मरने के बाद मेरे पड़ोसी धूमराज को पकड़ कर अन्दर कर दे क्योकि धूमराज ने ही इस कमीने से मेरी जान पहचान करवाई थी वरना मै इस पिस्सू की शक्ल तो क्या उसका नाम भी नही जानता था।

(सावित्री हसते हुए)

सावित्री क्या गजब का आइडिया है। हमेशा-हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाएगा कमीने से शर्म नही आती ऐसा सोचते हुए?

राजेन्द्र तो मै अब क्या करू?

सावित्री भगवान जाने तुम जैसे बुद्धुओं को सरकार नौकरी पर कैसे रख लेती है।

(दोनो जोरो से हसते है। अन्दर की ओर से तीनो बच्चो का प्रवेश)

सगीता क्यो मम्मी, क्या सोचा अकल को भगाने के लिए?

सावित्री मैने तो यह सोचा है कि यह अम्बालाल का बच्चा अगले जन्म मे हम लोगो मे कुछ मागता था इसलिए इस जन्म मे चुकने आता है।

सगीता और आपने क्या योजना बनाई है पापाजी?

राजेन्द्र देखो भई। मेरे तो सब आइडिये फेल हो चुके है उस चामड़ प्रसाद के आगे।

सावित्री अच्छा, तुम तीनो जनो ने क्या सोचा है उसके बारे मे?

आरती मेरा और दीदी का आइडिया इस मक्खीचूस अकल के आने के बाद लागू होगा, क्यो दीदी?

राजू और मेरा आइडिया, सबके आइडिया फैल हो जाने के बाद प्रयोग मे लाया जायेगा।

राजेन्द्र खैर छोड़ो, जो होगा देखा जाएगा। लो सावित्री मेरी तनख्वाह।

(पैसे हाथ मे लेकर)

सावित्री लेकिन तनख्वाह इतनी कम कैसे लग रही है?

राजेन्द्र इस महीने फूडग्रेन लॉन की ब्याज समेत आखिरी किश्त काट ली गई। जनवरी का महीना और ऊपर से यह कटौती। भगवान कसम मुझे तो धूजणी-सी छूट जाती है।

आरती यह धूजणी क्या होती है पापाजी?

राजेन्द्र ये रिश्ते मे अमूजणी की मौसी लगती है बेटे?

राजू और यह कटौती क्या होती है पापाजी?

राजेन्द्र ऐसा है बेटे, हम लोग यानी सरकारी कर्मचारी जरूरत पड़ने पर लॉन के रूप मे सरकार से रुपया उधार ले लेते है और वो पैसा सरकार थोड़ा थोडा करके हमारी तनख्वाह मे से वापस काट कर पूरा कर लेती है। उसे हम कटौती कहते है।

संगीता सरकार हमे क्या-क्या लोन देती है पापाजी ?

राजेन्द्र बेचारी सरकार तो हमे कई तरह के लोन देती है बेटी, जैसे हाउस-बिल्डिंग लोन, स्कूटर लोन, साइकिल लोन, डिलेवरी लोन, झडूला लोन, बस एक कफन लोन नही देती, वरना मै वो लोन भी छोड़ने वाला नही हू।

सावित्री अब बस भी कीजिए जी, वो लोन हमे नही चाहिए।

(बीच मे ही)

राजू वो लोन हमे क्यो नही चाहिए मम्मी ?

(बीच मे ही)

राजेन्द्र ऐसा है बेटे, इसके लिए तुम्हारी मम्मी ने अभी से बचत करनी शुरू कर दी है।

संगीता दो गज कफन के खातिर भी बचत पापाजी ?

राजेन्द्र हा बेटे। कभी-कभी मुसीबत मे दो गज कपड़े का इन्तजाम करना भी मुश्किल हो जाता है।

राजू तो इसके लिए सरकार परमिट का कपड़ा क्यो नही देती पापाजी ?

राजेन्द्र देना तो चाहिए बेटे लेकिन हमारी सरकार का ध्यान अभी तक इस ओर गया नही है।

आरती क्यो नही गया पापाजी ? क्या सरकार को इसकी जरूरत नही पडती ?

राजेन्द्र विदेशो मे तो पड़ती है बेटे क्योकि वहा की जनता जागरूक एव समझदार है। वहा की जनता निकम्मी सरकार को चार साल के बाद जिन्दा नही रहने देती लेकिन हमारे देश मे ऐसा नही है बेटे। हमारे देश मे जो भी सरकार बनती है, कुर्सी से चिपक जाती है और हमारे देश की बेवकूफ जनता हजार तकलीफ उठा लेने के बाद भी उस सरकार को उखाड़ फैकना नही चाहती।

संगीता हमारे यहा ऐसा क्यो है, पापाजी ?

राजेन्द्र अब मैं तुम लोगो को क्या क्या समझाऊ बेटी। हमारे देशवासियो का खून सफेद हो गया है। वो जुल्म सहने के आदी हो गए है। उनमे अच्छे बुरे की पहचान करने की क्षमता नही। खुद की समझ नही। पाच सालो मे एक बार हमे सरकार बनाने का मौका मिलता है और वो मौका हम किसी दबाव मे या किसी स्वार्थवश खो देते है।

(बीच मे ही)

राजू	लेकिन हम ऐसा कभी नही होने देगे पापाजी ?

आरती	हम लोग अपने कीमती वोट का सही इस्तेमाल करेंगे।

सगीता	हम आह्वान करते है पापाजी, आने वाले समय मे जो भी निकम्मी सरकार होगी उसकी उम्र पाच साल से ज्यादा नही होगी।

आरती	अगर हमारा बस चला तो उस निकम्मी सरकार का पाच साल से पहले ही दफना दिया जाएगा क्यो साथियो ?

(सब एक साथ)

बिलकुल ठीक।

राजू	क्यो पापाजी ?

राजेन्द्र	बिलकुल ठीक।

सगीता	क्यो मम्मी ?

सावित्री	बिल्कुल ठीक।

(सब लोग हसते हैं, कि बाहर की ओर से अम्बालाल प्रवेश करके)

अम्बालाल	क्या बात है राजेन्द्रनाथ जी, आज तो पूरा परिवार खुशियो मे झूम रहा है ? क्यो किसकी सालगिरह है ?

(बीच मे ही)

आरती	आपकी, क्यो मिठाई खानी है ?

(अम्बालाल नकली हसी हसते हुए)

सगीता	बेवकूफ की तरह आ गए हो, क्यो नोक नही किया जाता ?

अम्बालाल	बड़ी प्यारी बची है नमस्ते भाभी।

(सावित्री अन्दर जाते-जाते)

सावित्री	नमस्ते। आओ राजू।

राजेन्द्र	*आइए अम्बालाल जी, हम लोग आपके ही आने की प्रतीक्षा मे थे।* वास्तव मे बहुत लम्बी उम्र पाई है आपने ?

अम्बालाल	अरे ज्यादा उम्र किस काम की राजेन्द्र जी, बस भगवान से एक ही प्रार्थना है कि सौ साल का होते ही मुझे उठा ले यहा से।

(बीच मे ही)

सगीता	यहा से नही अकल, दुनिया से कहो वरना पुलिस हमे तग करेगी कि कैसे मरा ये भिखमगा।

(बिगड़ते हुए)

राजेन्द्र सगीता

(अम्बालाल झूठी हसी हसते हुए)

अम्बालाल रिपली बड़ी नटखट हो गई मुन्नी बेटी।

राजेन्द्र अरे अम्बालाल जी, आप तो कल आने वाले थे। अभी आप कौन सी ट्रेन से पधारे है?

अम्बालाल ऐसा है राजेन्द्रनाथ जी, प्रोग्राम के मुताबिक तो मुझे कल ही आना था, लेकिन मेरे एक दोस्त का ट्रक सीमेन्ट के थैले लेकर इधर ही आ रहा था सो मै ट्रक मे बैठकर आ गया। समय भी कम लगा और पैसो की भी पूरी बचत हो गई। ट्रक ड्राईवर बहुत ही बढ़िया आदमी था पूरे रास्ते शराब पीते आया और मेरी भी मनवार करता रहा, वैसे आप जानते है मै मगलवार को शराब के हाथ तक नही लगाता।

राजेन्द्र मै जानता हू लेकिन आप भाभी वगैरह को साथ नही लाए? चिट्ठी मे तो साथ लाने का लिखा था आपने?

अम्बालाल उन्हे मै साथ ही ला रहा था लेकिन एक दोस्त का रेल्वे पास हाथ लग गया था, इसलिए वो कल सुबह तक जरूर पहुच जाएगी।

(राजेन्द्र उठने लगता है, एकाएक वापस बैठ जाता है)

क्यो क्या हुआ राजेन्द्रनाथ जी?

(सम्भल कर)

राजेन्द्र कुछ नही, यू ही जरा चक्कर-सा आ गया।

अम्बालाल लेकिन ऐसा कब से हो रहा है राजेन्द्रनाथ जी?

(बीच मे ही)

सगीता जब जब भी आप हमारे यहा पधारते है। अकल।

(हसते हुए)

अम्बालाल क्या बोला बेटी?

सगीता मै बोल रही हूँ कि आप आए दिन यहा चले आते है, हम आपके यहा कितनी बार आते है? जरा भी शर्म नही है आपको?

(बिगड़ते हुए)

राजेन्द्र सगीता

अम्बालाल — अरे! बच्चो का कहा बुरा थोड़े ही मानते है राजेन्द्रनाथ जी। बच्चे तो भगवान का रूप है।

राजेन्द्र — सगीता।

सगीता — हा पापाजी।

(पैसे देते हुए)

राजेन्द्र — लो किशन मिष्ठान भण्डार से अकल के लिए दो किलो जलेबी लेकर आओ।

(बीच मे ही)

अम्बालाल — अरे! दो किलो से क्या होगा राजेन्द्रनाथ जी, बच्चे वगैरह कहा जाएगे?

राजेन्द्र — अच्छा बेटी, तीन किलो ले आना।

(बीच मे ही)

सगीता — अच्छा पापा, मै अभी लेकर आती हू।

(बाहर की ओर प्रस्थान)

अम्बालाल — और सुनाइए राजेन्द्रनाथ जी, कैसे कट रही है आपकी?

राजेन्द्र — आपकी दुआ है। आराम से गुजार रहा हू।

अम्बालाल — नही-नही, मेरी नही राजेन्द्रनाथ जी, भगवान की कहिए क्योकि वो ही सब को नाच नचाता है। अब देखिए ना पूरा महीना भी नही हुआ फिर आपसे मुलाकात हो गई वरना इस व्यस्त ससार मे किसके पास समय पडा है।

राजेन्द्र — बजा फरमा रहे है आप।

(बाहर की ओर से सगीता का प्रवेश)

अरे तू वापस क्यो आ गई? जलेबी का क्या हुआ?

सगीता — *अजमेर से आपका ट्रक कॉल है। सिंधी अकल आपका इन्तजार कर रहे है।*

राजेन्द्र — अच्छी बात है, तुम जल्दी से जलेबी ले आओ मै फोन सुनकर आता हू।

सगीता — अच्छा पापा। मै यू गई और यू आई।

(सगीता का बाहर की ओर प्रस्थान)

राजेन्द्र — माफ करना अम्बालालजी मै जरा फोन सुनकर

(बीच मे ही)

अम्बालाल कोई बात नही, लेकिन जरा भाभी को चाय का बोलते जाइए क्योंकि चाय की बडी प्रबल इच्छा हो रही है।

राजेन्द्र मेरे ख्याल से पहले आप स्नान कर लेते तो ज्यादा अच्छा रहता क्योकि दिन भर का सफर है। मिट्टी से भरे पड़े हैं आप।

(हसते हुए)

अम्बालाल मिट्टी से ही बने है राजेन्द्रनाथ जी और एक दिन मिट्टी मे ही मिल जाना है क्यो परवाह करते हैं आप।

(अन्दर की ओर से आरती प्रवेश करती है)

राजेन्द्र कितने नेक विचार है आपके देखो बेटी तुम्हारी मम्मी को बोलो अकल के लिए जल्दी से गर्मागर्म चाय भेज दे।

आरती अभी बोल देती हू। चाय के साथ गर्मागर्म आमलेट बना लाऊ अकल?

राजेन्द्र हा हा, जाओ जल्दी करो।

(आरती का अन्दर प्रस्थान)

अच्छा अम्बालाल जी, मै जरा फोन सुनकर आता हू।

(उसी दौरान बाहर की ओर से सगीता का प्रवेश)

अरे तू फिर खाली हाथ आ गई?

सगीता सिधी अकल नाराज हो रहे है कि हम आपके नौकर थोडे ही लगे है जो बार बार आपको फोन की सूचना करते रह।

राजेन्द्र हा हा, मै जा रहा हू, लेकिन तू जल्दी से अकल के लिए जलेबी लेकर आ।

सगीता अभी लेकर आती हू।

(सगीता का प्रस्थान व अन्दर की ओर से आरती का प्रवेश)

राजेन्द्र अच्छा बेटी, तुम अकल के पास बैठो। मै जरा सिंधी अकल के यहा फोन सुनकर आ रहा हू।

आरती अच्छा पापा।

(राजेन्द्रनाथ का बाहर की ओर प्रस्थान)

अम्बालाल मम्मी को चाय का बोल दिया बेटी?

आरती मम्मी मेरी है अकल, आपकी नही ?

(हसते हुए)

अम्बालाल एक ही बात है बेटी क्या फर्क पड़ता है। अरे हा बेटी, तुम्हारा रिजल्ट कैसा रहा ?

(राजू प्रवेश करके)

राजू हम तीनो बहन भाई पास हो गए है क्यो कोई तकलीफ है आपको ?

(हसते हुए)

अम्बालाल लेकिन मेरी मिठाई कहा है ?

राजू रामा हलवाई के कारखाने मे बन रही है। वैसे आपके मुह का साइज क्या है अकल ?

(नकली हसी हसता है)

(राजू का अन्दर प्रस्थान)

अम्बालाल बड़ा प्यारा मुन्ना है।

आरती वैसे हमारे पास होने की आपको खुशी नही है अकल ?

अम्बालाल अरे क्यो नही बेटी। मै तो तुम तीनो बहन भाई का पास होने का सुनकर ही निहाल हो गया।

आरती तो आप खिलाइए मिठाई ?

अम्बालाल ऐसा है जल्दबाजी मे मै मिठाई की टोकरी घर पर ही भूल आया। कल सुबह तुम्हारी आन्टी आते वक्त जरूर लेती आएगी।

आरती तो अभी आन्टी का यहा आना बाकी है, अकल ?

(बाहर की ओर से सगीता का प्रवेश)

अम्बालाल अरे तुम फिर खाली हाथ आ गई बेटी, जलेबी का क्या हुआ ?

सगीता चुगी बढ़ा देने के आरोप मे तीन दिनो के लिए पूरा मार्केट बन्द हो गया है अकल इसलिए मिठाई तो क्या कही गुड़ के गुलगुले भी नही मिले।

(बीच मे ही)

आरती कोई बात नही अन्दर जाकर मम्मी को बोल दो कि कोई घर की मिठाई बना ले।

अम्बालाल लाओ पैसे मुझे दो बेटी मै लेकर आता हू।

सगीता पैसे मैने पापाजी को वापस कर दिए। वो बाजार मे ट्राई मारने गए है।

(संगीता का अन्दर प्रस्थान)

अम्बालाल — कोई बात नहीं बेटी जरा मम्मी को पूछो की चाय में कितनी देर है।

आरती — अरे हां अंकल, मैं तो भूल ही गई। मम्मी ने पूछा था कि आप चाय लेंगे या कॉफी?

अम्बालाल — अभी तो सिर्फ चाय ही पीऊंगा, बेटी।

आरती — अंकल, आप चाय में खुली पत्ती इस्तेमाल करते है या बन्द डिब्बे की?

अम्बालाल — देखो बेटी, खुली पत्ती से चाय स्ट्रांग नही बनती इसलिए चाय पत्ती तो पैक बन्द ही खरीदनी चाहिए।

आरती — अंकल, चाय की क्वालिटी ब्रुक बॉण्ड हो या लिप्टन मार्का?

अम्बालाल — आजकल लाल घोड़ा काला घोड़ा चाय खूब चल रही है बेटी।

आरती — अंकल, आप चाय गर्म पीना पसन्द करते है या ठण्डी?

अम्बालाल — अरे पगली बेटी, चाय तो गर्मागर्म ही अच्छी लगती है।

आरती — अंकल, आप चाय स्टील के बर्तन में पीना पसन्द करते है या कांच के गिलास में?

अम्बालाल — अरे बेटी, मै तो चुल्लू से भी पी लू लेकिन कही चाय तो दिखाई दे।

आरती — अंकल, चाय में मीठा कम लेंगे या तेज?

अम्बालाल — अरे बेटी लोगबाग मीठे के लालच में ही चाय पीते है और मैं भी।

आरती — तो अंकल, आप चीनी क्यों नही फाक लिया करते?

(अन्दर की ओर से राजू का प्रवेश)

अरे! राजू भैया, चाय का क्या हुआ?

राजू — गर्म करते वक्त सारा दूध फट गया इसलिए मम्मी ने बोला है कि आरती से कहो जल्दी से दूसरा दूध लेकर आवे।

(उठते हुए)

आरती — ला पैसे मुझे दे। मैं दूध लेकर आती हूं।

राजू — मम्मी के पास खुल्ले नही है इसलिए मम्मी ने बोला है कि अभी अंकल से उधार ले लो अगले जन्म में लौटा देंगे।

अम्बालाल — क्या बोला बेटे?

(बात बदलते हुए)

राजू — मेरा मतलब बाद में लौटा देंगे।

अम्बालाल लेकिन छुट्टा तो मेरे पास भी नही है बेटे।

(अम्बालाल झूठ की जेब टटोलता है और अचानक उसकी जेब से सौ का एक नोट निकलकर फर्श पर गिर जाता है, आरती जल्दी से नोट उठाकर)

आरती मै दूध लेकर अभी आई अकल।

(बाहर की ओर प्रस्थान। राजू चिल्लाते हुए)

राजू मम्मी ने बोला है कि बाजार से तीस अण्डे तथा बीस मक्खन की टिकिया भी लेती आना।

अम्बालाल बाप का ही माल है

राजू क्या अकल ?

अम्बालाल लेकिन आज तो बाजार बन्द है बेटे।

राजू आप चिन्ता न करे अकल। आरती बहुत ही होशियार लड़की है। कही न कही से दूध लेकर ही आएगी और तीन किलो जलेबी भी।

अम्बालाल होशियार तो यहा कौन नही है बेटे।

(बीच मे ही)

राजू मेरी मम्मी आमलेट बहुत ही बढ़िया बनाती है अकल।

अम्बालाल तुम्हारी मम्मी चूतिया भी

(बीच मे ही)

राजू क्या बोला अकल ?

(बात बदलते हुए)

अम्बालाल मै कह रहा था कि तुम्हारी मम्मी अण्डे की भुर्जी भी बहुत बढ़िया बनाती है।

राजू बस अकल आरती अडे लेकर आती ही होगी।

अम्बालाल तुम्हारी आरती बहन आजकल बहुत बोलने लगी है बेटे, अगर थोड़ी देर तुम नही आते तो मुझे किसी डॉक्टर के पास जाना पड़ता।

राजू डॉक्टर के पास! वैसे आप होम्योपैथी मे विश्वास रखते है या एलोपैथी मे अकल। मेरा मतलब अंग्रेजी दवाइयो मे।

अम्बालाल आजकल अंग्रेजी दवाइया ही ज्यादा चलती है बेटे।

राजू अकल आप इन्जैक्शन खाने मे विश्वास रखते है या गोली खाने मे।

अम्बालाल गोली खाने मे।

राजू — अकल, आप गोली पानी के साथ लेना पसन्द करते है या दूध के साथ?

अम्बालाल — पानी के साथ।

राजू — अकल, पानी फ्रीज का हो या नल का?

अम्बालाल — मटके का। ऐसा लगता है मुझे किसी डॉक्टर के पास जाना ही होगा।

राजू — अकल आप डॉक्टर के पास पैदल चलेगे या टैक्सी मे।

(बिगड़ते हुए)

अम्बालाल — सीढ़ी मे। क्यो चलोगे मेरे साथ।

राजू — क्या अकल?

(झुँझलाते हुए)

अम्बालाल — अरे यार, अन्दर जाकर देखो ना चाय का क्या हुआ?

राजू — आप का दिमाग खराब हो गया है, अकल?

अम्बालाल — क्यो क्या हुआ?

राजू — और, नही तो क्या। अभी अभी आरती आपके सामने ही तो बाजार स दूध लेने गइ है। एसा ह आप बैठिए अकल म देखता हू आरती ने दूध लाने मे इतनी देर कैसे लगा दी।

अम्बालाल — हा-हा जावो जल्दी करो

(राजू का बाहर की ओर प्रस्थान)

उल्लू के पट्ठे मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहे है। लेकिन मैने भी कच्ची गोलिया नही खेली है।

(सगीता का प्रवेश)

सगीता — अरे आप यहाँ अकेले मे, किससे बाते कर रहे ह अकल, राजू कहा गया?

अम्बालाल — जहनुम मे। क्यो तुम्हे भी जाना है?

सगीता — नही अकल मुझे अभी होमवर्क करना है। आप चले जाइए।

अम्बालाल — नॉनसेस! अपनी मम्मी से पूछकर आओ कि आखिर चाय का क्या हुआ? अगर दूध नही है तो बगैर दूध की ही ले आओ।

सगीता — अकल सुना है बगैर दूध की चाय सास के मरीजो के लिए बहुत लाभकारी होती है।

अम्बालाल — माफ करना, मुझे अस्थमा नही है।

सगीता नही है तो हो जाएगा अकल, लेकिन चाय पीने मे क्या जाता है।

(बिगड़ते हुए)

अम्बालाल बकवास बन्द करो और अन्दर जाकर देखो तुम्हारी मम्मी अन्दर क्या कर रही है।

सगीता दूध का इन्तजार कर रही है और आपके लिए बादाम का हलुवा बना रही है।

अम्बालाल दूध का इन्तजार कर रही है या कोई योजना तैयार कर रही है। हे राम यह चाय की आदत भी कितनी

सगीता क्या कहा अकल, चाय की आदत बुरी आदत है?

अम्बालाल हा बेटी, चाय पीने की आदत बुरी आदत है।

सगीता इस बात का पता आपको कब लगा अकल?

अम्बालाल एक कमीने दोस्त के घर जाने के बाद।

सगीता आप एक दिन मे कितनी बार चाय पी लेते है अकल।

अम्बालाल अरे एक बार मे भी टोटा पड़ रहा है बेटी!

सगीता फिर भी अकल, आप अपने घर मे कितनी बार चाय पी लेते है?

(बीच मे ही)

अम्बालाल मैंने कभी नोट नही किया।

सगीता वास्तव मे चाय पीने की आदत बुरी है, अकल।

अम्बालाल हा बेटी, आदमी किसी काम का नही रह जाता।

सगीता अकल, सबसे पहले इस चाय का आविष्कार किसने किया था?

अम्बालाल काश! वो कमीना मेरे सामने होता तो मै उसे गोली मार देता।

सगीता वैसे आपको चाय पीते हुए कितना समय हो गया अकल।

अम्बालाल चालीस वर्ष।

सगीता वैसे आपकी उम्र कितनी हो गई अकल?

अम्बालाल अस्सी वर्ष।

सगीता लेकिन आप अस्सी वर्ष के लगते तो नही हैं अकल।

अम्बालाल तो इसमे मेरा क्या दोष है?

(अन्दर की ओर से सावित्री प्रवेश करती है)

संगीता — देखो मम्मी, अंकल चालीस वर्षों से चाय पीते-पीते अस्सी वर्ष के हो चुके है और अभी तक अंकल का एक भी दांत नही टूटा है।

सावित्री — किसी-किसी के दात चौड़े होते है बेटी इसलिए वो टूटते नही उन्हें तोड़ना पड़ता है। देखो बेटी, राजू वगैरह अभी तक दूध लेकर आए क्यो नही। मै जरा देखकर आती हू। तुम जरा अकल के पास बैठना

संगीता — लेकिन जरा जल्दी आना मम्मी, क्योंकि चाय के खातिर अंकल के प्राण निकले जा रहे है।

(जाते-जाते)

सावित्री — हां-हा मै अभी आई।

(बाहर की ओर प्रस्थान)

अम्बालाल — अरे पगली कही की, मम्मी को ऐसा थोड़े ही बोलते है।

संगीता — सॉरी अकल, आज आपको चाय बहुत महगी पड़ गई।

अम्बालाल — हा बेटी पूरे सौ रुपये का कप।

संगीता — अकल, आप चालीस वर्षों से चाय पी रहे है, चाय पीते-पीते अभी तक बोर नही हुए?

अम्बालाल — तू ठीक कह रही है बेटी, लेकिन मैं आज बोर हो गया हूँ।

संगीता — तो आप चाय पीने की कसम क्यो नही खा लेते अकल?

अम्बालाल — ठीक है बेटी आज के बाद मै चाय कभी नही पीऊगा।

संगीता — आज के बाद क्यो अकल, आप अभी से चाय न पीने की कसम क्यो नही खा लेते?

अम्बालाल — अच्छी बात है, बेटी मै तुमसे वायदा करता हूँ। मै प्राण दे दूगा लेकिन आज स चाय कभी नही पीऊगा।

संगीता — शाबाश अकल, रियली यू आर ग्रेट। आप बडे महान् है।

(जाने लगती है)

अम्बालाल — अरे! कहा जा रही हो बेटी?

संगीता — मै मम्मी को बोल कर आ रही हूँ कि अकल ने चाय न पीने की कसम खा ली है इसलिए अब दूध वगैरह लाने की कोई जरूरत नही है।

अम्बालाल — हा हा जाओ बेटी, और यह भी पता लगा कर आना कि सिंधी

अंकल के यहां दूरकाल आया है या बिजली का करैण्ट क्योंकि जो जाता है वही चिपके जा रहा है और सुनो तुम्हारी मम्मी पापा को बोल देना कि

(बीच मे ही)

सगीता — अच्छा अंकल। *(बाहर की ओर प्रस्थान)*

अम्बालाल — हरामखोर कही के मुझे उल्लू बना रहे हैं लेकिन मुझे भी लोग अम्बालाल कहते है।

(अम्बालाल उठता है और अपना सामान उठा लेता है और इधर उधर देखते हुए वहां से खिसक लेता है। कुछ क्षणो बाद ही सगीता, सावित्री तथा राजेन्द्रनाथ प्रवेश करके चोरी-छुपे इधर-उधर देखते है और)

सावित्री — लगता है, लाइन क्लियर है।

राजेन्द्रनाथ — लगता है परेशान होकर अम्बालाल जी खिसक गए यहा से।

सगीता — लगता क्यो है हण्ड्रेड परसैन्ट लाइन क्लियर है।

सावित्री — क्यो जी, कैसा रहा मेरा आइडिया ?

राजेन्द्रनाथ — गलत बात। यह प्लानिंग तुम्हारी नही आरती तथा सगीता बेटी की है।

(बीच मे ही आरती और सगीता एक साथ बोलती है)

क्यो पापाजी कैसी रही ?

राजेन्द्रनाथ — भई मजा आ गया। अब मुझे तुम लोगो की सारी मागे मजूर है। आज मै बहुत खुश हूँ और अभी हम लोग बाजार चलते है। क्यो सावित्री ?

सावित्री — ठीक है लेकिन राजू कहा है वो कहा रह गया ?

(उसी क्षण अन्दर की ओर से अम्बालाल प्रवेश करके)

अम्बालाल — राजू बेटा मेरे से सौ रुपये का नोट लेकर बाजार दूध लेने गया था लेकिन वो अभी तक आया क्यो नही ?

(अम्बालाल को देखते ही सब लोग एक साथ बोलते है)

अम्बालाल जी आप ?

(उसी दौरान बाहर की ओर से राजू को लेकर पुलिस इन्सपेक्टर का प्रवेश। राजू दौड़कर मम्मी से लिपट जाता है)

सावित्री अरे! राजू बेटे क्या हुआ?

राजेन्द्रनाथ क्या बात है, इन्सपेक्टर साहब? क्या हुआ राजू बेटे को?

इन्सपेक्टर यह आपका लड़का है?

राजेन्द्रनाथ जी हां, आखिर क्या किया है, राजू ने?

इन्सपेक्टर आप क्या काम करते है?

राजेन्द्रनाथ माईसैल्फ ऑफिस एसिस्टैण्ट इन कलैक्टर ऑफिस। कहिए क्या किया है राजू ने?

इन्सपेक्टर इस बच्चे को सौ का नोट देकर आपने बाजार भेजा था?

(बीच में ही)

अम्बालाल जी नही यह सौ का नोट मेरा है। मैंने राजू को दिया था।

(बीच में ही)

इन्सपेक्टर आपकी तारीफ?

अम्बालाल मै अम्बालाल माथुर नगर परिषद, जोधपुर मे कार्यरत हूँ। हुक्म कीजिए।

इन्सपेक्टर यहा किस सिलसिले मे पधारे है आप?

अम्बालाल मै सरकारी टूर पर हूँ।

इन्सपेक्टर आप राजेन्द्रनाथ जी को कैसे जानते हैं?

(बीच मे ही)

राजेन्द्रनाथ वो ऐसा है इन्सपेक्टर साहब। खूमराज मेरा एक पड़ौसी है और अम्बालाल जी उसी के दोस्त है उसी के कारण मेरा अम्बालालजी से परिचय हो गया। इसके अलावा मै इनके बारे मे कुछ भी नही जानता।

इन्सपेक्टर आप नही जानते लेकिन हम इनके बारे मे बहुत अच्छी तरह से जानते है राजेन्द्रनाथ जी।

(बीच मे ही)

राजेन्द्रनाथ क्यो अम्बालाल जी?

अम्बालाल राजेन्द्रनाथ बिल्कुल ठीक कह रहे है इन्सपेक्टर साहब! खूमराज मेरा जिगरी दोस्त है लेकिन वो कड़का, मुजी आवभगत करना बिल्कुल नही समझता जबकि राजेन्द्रनाथ जी मेहमान को भगवान समझते है। इस कारण मै राजेन्द्रनाथ जी के पास आने-जाने लगा।

इन्सपेक्टर आपकी आवभगत तो हम करेंगे, अम्बालालजी। आप चिन्ता क्यो करते हैं?

अम्बालाल मै आपका मतलब नही समझा इन्सपेक्टर साहब?

इन्सपेक्टर वो हम आपको पुलिस स्टेशन ले जाकर समझा देंगे। ऐसा है राजेन्द्रनाथ जी हम आपके दोस्त अम्बालाल जी को पुलिस स्टेशन ले जा रहे हैं क्योंकि इनसे हमे कुछ पूछताछ करनी है।

राजेन्द्रनाथ आखिर बात क्या है इन्सपेक्टर साहब?

इन्सपेक्टर वो ऐसा है राजेन्द्रनाथ जी आपके लड़के के पास से हमने जो सौ का नोट बरामद किया है वो नोट जाली है।

(सब एक साथ)

राजेन्द्रनाथ जाली नोट

इन्सपेक्टर जी हां, यह नोट नकली है। यह नोट कहा से आया, कैसे आया। वैसे जरूरत पड़ने पर हम आपकी सेवाए भी ले सकते है। चलिए अम्बालाल जी।

अम्बालाल यह सब क्या हो रहा है राजेन्द्रनाथजी?

राजेन्द्रनाथ घबराइए नही, अम्बालाल जी। मै आपके साथ हूँ। आप पुलिस स्टेशन चलिए। मै किसी वकील को लेकर वहा पहुचता हूँ।

इन्सपेक्टर चलिए अम्बालाल जी

(पुलिस इन्सपेक्टर व अम्बालाल का बाहर की ओर प्रस्थान)

सावित्री कुछ समझ मे नही आता। यह एकाएक कैसे हुआ? अम्बालाल जी के पास जाली नोट कहा से आ गया?

राजेन्द्रनाथ यह अम्बालाल इतना बदमाश आदमी है। मैने सपने मे भी नही सोचा था।

(हसते हुए बीच मे बोलता है)

राजू नोट जाली नही था पापाजी।

राजेन्द्रनाथ क्या मतलब?

(बीच मे ही)

सावित्री अगर नोट जाली नही था तो पुलिस अम्बालाल जी को पकड़ कर कैसे ले गई? प्लीज आप कुछ कीजिए ना वरना पुलिस मार-मार गरीब की चमड़ी उधेड़ डालेगी।

राजेन्द्रनाथ अरे यह क्या? अभी तो तुम लोग उसे यहा से भगाने की जी-तोड़ कोशिश मे लगे हुए थे।

राजू चिन्ता करने की बात नही है, मम्मी। वो ऐसा है कि पुलिस इन्सपेक्टर मेरे दोस्त अजीत के पिताजी है। मैने घर जाकर अकल को हमारे और अकलजी के बारे मे सब कुछ बतलाकर कुछ मदद मागी। पुलिस अकल ने हमारी बात समझ ली और हमारी मदद करने का वादा किया और

(बीच मे ही)

सावित्री वो तो ठीक है राजू बेटे, लेकिन पुलिस वाले अम्बालाल जी को पीट-पीट कर अधमरा कर डालेगे।

राजू देखो ऐसा कुछ नही होगा मम्मी, पुलिस अकल कजूस अकल को सिर्फ डराएगे और पूछेगे कि सच-सच बताओ ये जाली नोट तुम्हारे पास कहा से आया और ऐसे कितने नोट है तुम्हारे पास। तुम्हारी गैग का मुखिया कौन है। कुछ नही बतलाने पर उन्हे धमकी दी जायेगी कि तुमको हमने एक नेक आदमी के घर से पकड़ा है इसलिए आज तो तुम्हे छोड़ रहे है लेकिन ध्यान रहे भविष्य मे कभी राजेन्द्रनाथ जी के घर पर तो क्या इस शहर मे कही भी तुम्हे भटकते देख लिया तो चालान पेश करके जिन्दगी भर के लिए जेल मे ठूस दिए जाओगे। और आज सुबह पाच बजे वाली रोडवेज की बस मे कजूस अकल को बेठा कर जोधपुर के लिए रवाना कर दिया जाएगा और मेरे खयाल से अम्बालालजी दोबारा बुलाने पर भी हमारे यहा नही आएगे।

(सारे लोग एक साथ हसते है। और राजू जोर से)

क्यो पापाजी यह कैसी रही?

(धीरे धीरे पूर्ण अन्धकार)

'क्यो पापाजी कैसी रही'

सूरजसिंह पवार

जन्म ग्यारह अक्टूबर 1941 (उद

शिक्षा *हाई स्कूल, युनिवर्सिटी ऑफ र*
आई जी डी बॉम्बे, 1955
आर डी एस लदन, 1957
तकनीकी एव नर्सिंग प्रशिक्षण
एल एस जी डी बॉम्बे, 19

राज्य सेवा निवृत्त
परिचारक एव चित्रकार, पी बी एम हॉस्पि

आकाशवाणी से प्रसारित नाटक
हैरीडिटी ◻ लाल स्याही का दवात ◻
◻ जन्म दिन मुबारक हो ◻ शुक्रिया जज
का छापा

प्रकाशित नाटक (हिन्दी)
कॉमिनी ◻ सौन्दर्य की साझ ◻ आ
◻ आभारी हू आपका ◻ सुबह वापस
पापाजी कैसी रही ◻ आप बोल दीजिए
◻ मोटी आवाज़।

प्रकाशित नाटक (राजस्थानी)
ग्यारह लाख री बीनणी ◻ राजस्थानी
संस्कृति अकादमी के आंशिक आर्थिक
हुक्म ◻ छोरो फूटरो है सा ◻ कांणकी रो

प्रकाशनाधीन रचनाए
मण्डी मुर्दों की ◻ पद्मादेवी ◻ बॉर्डर का
कब तक ◻ एक भूल ◻ वीरचक्र ◻
कसम ◻ पासा जब पलटता है।